100वीं

वार्षिक रिपोर्ट

2022-2023

भाग-I

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली

भूमिका

सौ वर्ष पुरानी विरासत के साथ भारत के एक प्रमुख विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय ने उच्चतम शैक्षणिक मानकों को बरकरार रखा है और उच्च शिक्षा में कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं का नवाचार किया है। अपने आदर्श वाक्य, ***"निष्ठा-धृति: सत्यम",*** के अनुसार विश्वविद्यालय राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का संवर्धन करता है। इसने 1 मई 2022 को अपने गौरवशाली अस्तित्व के 100 वर्ष पूरे किए। एक वर्ष तक चलने वाले शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया, जिसकी शुरुआत भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू, कुलाधिपति द्वारा किए गए उद्घाटन समारोह से हुई थी और इसका समापन भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया। शताब्दी वर्ष कार्यकलापों के विभिन्न रंगों से भरा हुआ था और विभिन्न नई शैक्षणिक पहलों की नींव रखी गई थी जिनका स्थायी प्रभाव होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल कार्यान्वयन के लिए, विश्वविद्यालय ने स्नातक-पूर्व पाठ्यक्रम संरचना 2022 (यूजीसीएफ 2022) नामक एक संरचना तैयार की थी, जो नीति के मूलभूत पहलुओं जैसे बहु-विषयक दृष्टिकोण, समग्र शिक्षा, कौशल, बहुभाषावाद, भारतीय संस्कृति में जड़ता, इंटर्नशिप, शोध और अनेक प्रवेश और निकास के साथ थी। इसे शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से शुरू किया गया था। स्नातक-पूर्व कार्यक्रमों के सभी पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को संशोधित, पुनर्गठित किया गया और परिणाम आधारित शिक्षा के अनुरूप पुन: डिजाइन किया गया, और अधिक व्यावहारिक शिक्षा का प्रावधान किया गया तथा निरंतर मूल्यांकन की दिशा में क्रमिक बदलाव किया गया। विश्वविद्यालय और इसके कॉलेजों में चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों में प्रवेश (मुक्त शिक्षा विद्यालय और एनसीडब्ल्यूईबी को छोड़कर) सामान्य विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (सीयूईटी) के माध्यम से किया गया। इस प्रकार बोर्डों और अंकन प्रणाली में असमानता के बावजूद सभी आवेदकों को एक समान अवसर प्रदान किया गया था।

विश्वविद्यालय समुदाय लगातार उच्च शिक्षण-अध्ययन और अनुसंधान मानकों को प्राप्त करने और अपनी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में सुधार करने का प्रयास करता है। अनुसंधान अनुदानों के माध्यम से अनुसंधान को बढ़ावा देने, प्रसंस्करण शुल्क के भुगतान के माध्यम से प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में शोध प्रकाशनों को सुविधाजनक बनाने, सहायक प्रोफेसरों के रूप में विदेशी विश्वविद्यालयों से प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को आमंत्रित करने, भर्ती के माध्यम से छात्र-शिक्षक अनुपात को बढ़ाने सहित इस दिशा में विभिन्न पहल की गई हैं। सर्वोत्तम शैक्षणिक प्रथाओं को साझा करने और शिक्षा में वैश्विक मानकों को बढ़ावा देने के लिए दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करने के लिए कई विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ कई साझेदारी की गई हैं।

विश्वविद्यालय ने अपनी शैक्षणिक, प्रशासनिक और भर्ती प्रक्रियाओं के डिजिटलीकरण में एक लंबी छलांग लगाई है। इसने अपने 99$^{वें}$ दीक्षांत समारोह में विद्यार्थियों को 1,73,443 डिजिटल डिग्री प्रदान की। यह विश्वविद्यालय के लिए अपने प्रमुख कार्यों को आधुनिक बनाने की दिशा में एक प्रमुख मील का पत्थर है, जिसमें शुरू से अंत तक अपने प्रवेश को ऑनलाइन प्रबंधित करना शामिल है।

वर्तमान में, विश्वविद्यालय में नामांकित आधे से अधिक छात्र दिल्ली के बाहर से हैं और एक जीवंत विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। नामांकन और योग्यता के संदर्भ में महिला विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। विश्वविद्यालय में संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जापान, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया सहित दुनिया भर के विद्यार्थी भी हैं।

100वीं वार्षिक रिपोर्ट 1 अप्रैल 2022 से 31 मार्च 2023 तक की अवधि जिसके दौरान कई उपलब्धियां हासिल की गई हैं, प्रस्तुत करना मेरे लिए सम्मान की बात है। इस बार रिपोर्ट को तीन भागों में बांटा गया है। शताब्दी वर्ष की रिपोर्ट होने के कारण पहले भाग में सौ साल की यात्रा की झलक भी देने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय के 101$^{वें}$ वर्ष में यह उत्कृष्टता के उच्च स्तर प्राप्त करने के लिए स्वयं के लिए नए मानक स्थापित करेगा।

योगेश सिंह

कुलपति

संपादकीय बोर्ड

वर्ष 2022-2023 के दौरान 01.04.2022 से 31.03.2023 तक की अवधि की दिल्ली विश्वविद्यालय के कार्यकलापों और उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय की 100वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत है।

रिपोर्ट तीन भाग में हैं:

- पहले भाग में प्रासंगिक अवधि की उपलब्धियों और गतिविधियों की झलकियां तथा सौ साल की यात्रा की झलक शामिल है।
- भाग-II में दिल्ली विश्वविद्यालय की शैक्षणिक प्रगति के बारे में जानकारी शामिल है जिसमें संकाय, विभाग, केंद्र, कॉलेज और वित्त शामिल हैं।
- भाग-III में सूचना और आंकड़े है।

संपादकीय बोर्ड में निम्नलिखित सदस्य थे:

1. प्रोफेसर के. रत्नाबली, डीन, अकादमिक मामले-अध्यक्ष
2. प्रोफेसर सुधा वासन, समाजशास्त्र विभाग
3. प्रोफेसर संजय कपूर, पादप आणविक जीव विज्ञान विभाग
4. प्रोफेसर सुनंदा भारती,-विधि केंद्र-I
5. प्रोफेसर इरा राजा, अंग्रेजी विभाग
6. प्रोफेसर योगेश कुमार, अंग्रेजी विभाग
7. प्रोफेसर संदीप कौर, रसायन विज्ञान विभाग
8. प्रोफेसर अविटोली जी. झिमो, मानव विज्ञान विभाग
9. प्रोफेसर असानी भादुड़ी, क्लस्टर नवाचार केंद्र
10. प्रोफेसर उमा चौधरी, भास्कराचार्य अनुप्रयुक्त विज्ञान महाविद्यालय
11. प्रोफेसर सोनिया कौशिक, भारती महाविद्यालय
12. प्रोफेसर आशीष, प्राणी-विज्ञान विभाग
13. प्रोफेसर पी. फणी कृष्णा, भाषाविज्ञान विभाग
14. प्रोफेसर देवी दयाल गौतम, समाजशास्त्र विभाग
15. प्रोफेसर शिखा, प्रबंधन अध्ययन संकाय
16. प्रोफेसर अंकित, कंप्यूटर विज्ञान विभाग
17. प्रोफेसर दीप्ति तनेजा, संयुक्त डीन, संस्कृति परिषद
18. संयुक्त कुलसचिव (परिषद)
19. सहायक कुलसचिव (परिषद)-सदस्य सचिव

संपादकीय बोर्ड डॉ. बी. देबकुमारी, सलाहकार (अकादमिक और अनुसंधान) और पांच कुलपति इंटर्न अर्थात् श्री गर्वित गर्ग (हिंदू कॉलेज), श्री अंशु अग्रवाल (सेंट स्टीफन कॉलेज), श्री रितिक कुमार (एसजीटीबी खालसा कॉलेज), श्री लक्ष्य अग्रवाल (किरोड़ीमल कॉलेज) और सुश्री खुशी जैन (मिरांडा हाउस) के योगदान को डेटा के संग्रह, उनके चित्रात्मक प्रतिनिधित्व और 100 वीं वार्षिक रिपोर्ट के डिजाइनिंग के लिए आभार प्रकट करता है। इसके अलावा, संपादकीय बोर्ड प्रोफेसर नवीन कुमार और पीएच.डी. विद्वानों की उनकी टीम, प्रो. कुमुद शर्मा और उनकी टीम के साथ-साथ श्रीमती सीमा सिरपाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, डीयूसीसी के योगदान के प्रति आभार प्रकट करता है।

विषय-सामग्री

विश्वविद्यालय के बारे में 01
विश्वविद्यालय एक नजर में 04
विश्वविद्यालय के अधिकारी 05
शताब्दी वर्ष 2022-23 की उल्लेखनीय उपलब्धियां 07
- रैंकिंग सारांश 07
- विद्यार्थियों का पंजीकरण 09
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन 13
- अनुसंधान की मुख्य विशेषताएं 19
- संकाय पुरस्कार/सम्मान 22
- विश्वविद्यालय की श्रेष्ठ पद्धतियाँ 26
- कार्यक्रम 29

100 गौरवशाली वर्षों की यात्रा 58
- 100 वर्षों की यात्रा की झलकियाँ 59
- कुलपति-प्रथम से 23वाँ 74
- प्रदत्त मानद उपाधियाँ 76
- छात्र पंजीकरण 1922-2022 90
- संकाय और विभाग 94
- महाविद्यालय 95
- केंद्र और संस्थान 98
- हॉल और छात्रावास 99
- अभिनव विकास 102
- विषयगत दृष्टिकोण 103
- शताब्दी वर्ष पहल 107
- छात्र केंद्रित पहल 109

विश्वविद्यालय के बारे में

दिल्ली विश्वविद्यालय की एक सदी पुरानी विरासत है और यह भारत के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक है। 1922 में स्थापित विश्वविद्यालय ने उच्चतम शैक्षणिक मानकों को बनाए रखा है और उच्च शिक्षा में कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं को अग्रणी बनाया है। **"निष्ठा धृतिः सत्यम"** इस आदर्श वाक्य के अनुरूप, **जो समर्पण, दृढ़ता और सत्य के रूप में परिणत करता है, विश्वविद्यालय राष्ट्र निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखता है** और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के का अटूट पालन करता है। अपनी 100 वर्षों की यात्रा में, इसने स्वयं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, अनुसंधान, नवाचार और सामाजिक परिवर्तन प्रदान करने वाले एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में स्थापित किया है।

भारत के राष्ट्रपति इसके कुलाध्यक्ष हैं, उपराष्ट्रपति कुलाधिपति हैं और भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश विश्वविद्यालय के सम-कुलाधिपति हैं। तीन कॉलेजों और 750 विद्यार्थियों के साथ शुरुआत करते हुए, यह 16 संकाय, 80 से अधिक शैक्षणिक विभागों, 90 कॉलेजों और सात लाख से अधिक विद्यार्थियों के साथ भारत के सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में से एक के रूप में विकसित हुआ है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित 500 से अधिक कार्यक्रम अकादमिक और कार्यकारी परिषदों द्वारा अनुमोदित हैं, जिनमें से 209 कार्यक्रमों पर एनएएसी प्रत्यायन उद्देश्य के लिए विचार किया जा रहा है। कॉलेजों में चलाए जा रहे बाकी कार्यक्रम अलग से मान्यता प्राप्त हैं।

भारत और विदेशों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को आकर्षित करते हुए, विश्वविद्यालय उत्कृष्टता, अखंडता और मनसा (विचार), वाचा (भाषण) और कर्मणा (क्रिया) के खुलेपन के प्रतीक के रूप में उभरा है।

दिल्ली विश्वविद्यालय का लोगो

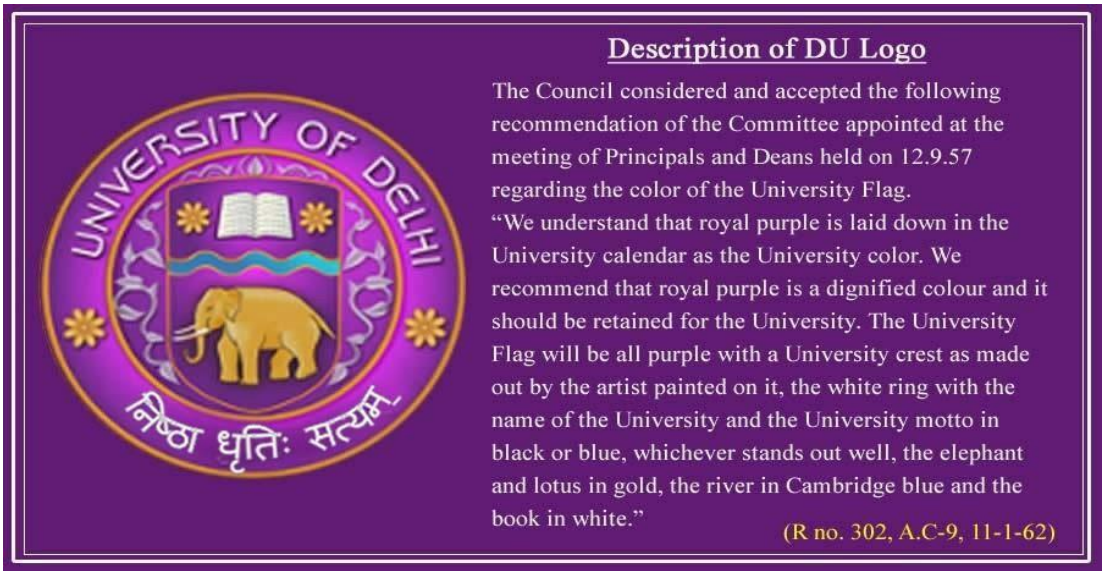

दृष्टि

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षण, अनुसंधान और आउटरीच में उत्कृष्टता के लिए मान्यता प्राप्त प्रशंसित विश्वविद्यालय बनना, विद्यार्थियों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना, उनकी प्रतिभा का पोषण करना, बौद्धिक विकास को बढ़ावा देना और उनके व्यक्तिगत विकास को आकार देना; दिल्ली **विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य** "निष्ठा धृति: सत्यम्" के साथ जुड़े सत्य की खोज में समर्पित और दृढ़ रहना और सर्वांगीण, बहु-कुशल और सामाजिक रूप से जिम्मेदार **वैश्विक नागरिकों** के निर्माण के माध्यम से मानवता की सेवा करना।

ध्येय

बहुआयामी शिक्षा और स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक समुदायों के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना और "वसुधैव कुटुम्बकम्" के हमारे सांस्कृतिक आदर्श के अनुरूप दुनिया भर से जीवनपर्यंत उत्प्रेरित शिक्षार्थियों का पोषण करना।

मूल मान

विश्वविद्यालय के मूल मान हैं:

- शिक्षण, अध्ययन, शोध और सेवा में उत्कृष्टता।
- नए शोध निर्देशों, कार्यक्रमों और साझेदारियों के माध्यम से नवाचार।
- रचनात्मकता, नई खोजों के माध्यम से ज्ञान भंडार को समृद्ध करने के नए तरीकों की खोज करना।
- पारंपरिक सीमाओं से परे ज्ञान साझा करके सहयोगात्मक और अनुभवात्मक शिक्षा।
- सहयोगात्मक और अंतःविषयक अध्ययन पर जोर देकर उद्यमिता।
- विद्यार्थियों में मूल्य प्रणाली स्थापित करके नैतिक आचरण।
- सामाजिक उत्तरदायित्व, आउटरीच और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से व्यक्तियों, समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित।
- वर्ग, जाति, धर्म, क्षमता और लिंग की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों का सम्मान करके विविधता और समावेशन करना।
- वैश्विक नागरिकता, विश्व समुदाय के साथ पहचान बनाने और वैश्विक मूल्यों के निर्माण के लिए सार्थक ज्ञान और कौशल विकसित करना।

विश्वविद्यालय एक नजर में

संकायों की संख्या:	16
विभागों की संख्या:	86
केंद्रों की संख्या:	21
कॉलेजों की संख्या:	91
कार्यक्रमों की संख्या:	<500
विद्यार्थियों की कुल संख्या:	>7 लाख

स्नातक-पूर्व:

पुरुष: 98992

महिला: 127505

स्नातकोत्तर:

पुरुष: 16629

महिला: 17006 ट्रांसजेंडर:

नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड में विद्यार्थियों की संख्या: 32797

मुक्त शिक्षा विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या: 334498

प्रकाशित शोध पत्रों की संख्या: > 4000

विश्वविद्यालय का एच-सूचकांक: 270

प्रदत्त पीएच.डी. की संख्या: 951

कुल अनुदान: 749.91 करोड़ रुपये

कुल व्यय: रु. 803.69 करोड़

कुल क्षेत्रफल: 415.96 एकड़

कुल निर्मित क्षेत्र: 105.58 एकड़

यूजीसी एसएपी और यूजीसी सीएएस कार्यक्रम के तहत सहायता प्राप्त करने वाले विभागों/केंद्रों की संख्या:

पाठ्यक्रम	छात्रों की संख्या
डीएम. एम.सीएच. डिग्री	49
पीएच.डी.डिग्री	910
एम.फिल परिणाम घोषित	356
एम. फिल डिग्री	293
उन्नत डिग्री	280
एलएलबी डिग्री	2245
बीई (एनएसआईटी)डिग्री	856
यूजी और पीजी नियमित डिग्री	69937
वार्षिक दीक्षांत समारोह के लिए स्वर्ण पदक और पुरस्कार	209
विविध डिग्री (1 अप्रैल, 2022 से 31 मार्च, 2023)	26241

विभाग	योजना का नाम	अवधि
वनस्पति-शास्त्र	SAP DRS-II	01.04.2018 से 31.03.2023
भूविज्ञान	SAP CAS-III	01.04.2018 से 31.03.2023
भौतिकी और खगोल भौतिकी	SAP CAS-I	01.04.2018 से 31.03.2023
प्राणीविज्ञान	SAP CAS-VIII	01.04.2018 से 31.03.2023

विश्वविद्यालय के अधिकारी

(अप्रैल 2022 से मार्च 2023)

कुलाधिपति

माननीय मुप्पावरापु वेंकैया नायडू	10.08.2022 तक
माननीय जगदीप धनखड़	11.08.2022 से

सम-कुलाधिपति

न्यायमूर्ति एन.वी. रमन्ना	08.11.2022 तक
न्यायमूर्ति उदय उमेश ललित	27.08.2022 से 08.11.2022 तक
जस्टिस धनंजय वाई. चंद्रचूड़	09.11.2022 से

कुलपति

प्रोफेसर योगेश सिंह

महाविद्यालयों के संकायाध्यक्ष

प्रो. बलराम पाणि

निदेशक, दक्षिणी दिल्ली कैंपस

प्रो. श्री प्रकाश सिंह

कोषाध्यक्ष

प्रो. कविता शर्मा	19.06.2022 तक
श्री नवल किशोर	20.06.2022 से

पुस्तकालयाध्यक्ष

डॉ. राजेश सिंह

कुलानुशासक

प्रो. रजनी अब्बी

कुलसचिव

डॉ. विकास गुप्ता

संकायों के डीन कला संकाय

प्रो. नजमा रहमानी	05.07.2022 तक
प्रो. अमिताव चक्रवर्ती	06.07.2022 से

अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान संकाय और मानविकी

प्रो. संजय सहगल	31.08.2022 तक
प्रो. अनन्या घोष दस्तीदार	15.12.2022 से

आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा संकाय

प्रो. नीलम वणे	07.09.2022 तक
प्रो. पी.के.प्रजापति	08.09.2022 से
प्रो. तनुजा मनोज नेसारी	05.11.2022 से

वाणिज्य और व्यापार संकाय

प्रो. अजय कुमार सिंह	01.04.2022 से

शिक्षा संकाय

प्रो. शोभा सिन्हा	20.09.2022 तक
प्रो. पंकज अरोड़ा	21.09.2022 से

अंतर-विषयक और अनुप्रयुक्त विज्ञान संकाय

प्रो. स्वाति साहा	30.06.2022 तक
प्रो. राजीव कौल	01.07.2022 से

विधि संकाय

प्रो. उषा टंडन

प्रबंधन अध्ययन संकाय

प्रो. विवेक सुनेजा

गणितीय विज्ञान संकाय

प्रो. रुचि दास	03.08.2022 तक
प्रो. नवीन कुमार	04.08.2022 से

चिकित्सा विज्ञान संकाय

प्रो. ए.के. जैन	13.04.2022 तक
प्रो. आदित्य नाथ अग्रवाल	14.04.2022 से

संगीत और ललित कला संकाय

प्रो. (श्रीमती) अलका नागपाल

मुक्त शिक्षा संकाय विद्यालय

प्रो. पायल मागो

विज्ञान संकाय

प्रो. अशोक कुमार प्रसाद	14.02.2023
प्रो. सतीश कुमार अवस्थी	15.02.2023 से

सामाजिक विज्ञान संकाय

प्रो. सीमा बावा

प्रौद्योगिकी संकाय

प्रो. के.एस. राव

शताब्दी वर्ष 2022-2023 की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय को गर्व है कि इसने 100 वर्षों की अपनी यात्रा में, यह सक्षम नेतृत्व और सभी हितधारकों के व्यवस्थित और समन्वित प्रयासों के आधार पर सही दिशा में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्वविद्यालय 2022-23 के दौरान अपनी सराहनीय सामुदायिक अभिगम्यता जारी रखने में सक्षम रहा है। वर्तमान में, आधे से अधिक छात्र दिल्ली के अलावा अन्य राज्यों से आते हैं।

रैंकिंग सारांश

राष्ट्रीय रैंक

रैंकिंग का नाम	रैंक
राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ)-भारत विश्वविद्यालयों के लिए रैंकिंग 2023	11
समग्र श्रेणी के लिए एनआईआरएफ-भारत रैंकिंग 2023	22
एनआईआरएफ-अनुसंधान श्रेणी के लिए भारत रैंकिंग 2023	17
सेंटर फॉर वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2023: राष्ट्रीय रैंक	7

अंतर्राष्ट्रीय रैंक

रैंकिंग का नाम	रैंक
टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024	801-1000
राष्ट्रीय रैंक 2024	25
एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2023	301-350
इमर्जिंग इकोनॉमिक्स यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2022	201-250
सीडब्ल्यूयूआर 2023: विश्व रैंक	621
क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024	407
क्यूएस एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2023	85
क्यूएस सस्टेनेबिलिटी रैंकिंग 2023	381-400
क्यूएस ग्रेजुएट एम्प्लॉयबिलिटी रैंकिंग 2022	201-250

विषयगत क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2023

विकास अध्ययन	49
समाज शास्त्र	90
आधुनिक भाषाएं	101-150
अर्थशास्त्र और अर्थमिति	127
अंग्रेजी भाषा और साहित्य	101-150
दर्शन-शास्त्र	151-200
भूगोल	151-200
इतिहास सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन	188
लेखा और वित्त	251-300
भौतिकी और खगोल विज्ञान	201-250
भाषा विज्ञान	301-320
जैविक विज्ञान	301-350
रसायन विज्ञान	391-400

कॉलेजों के लिए एनआईआरएफ रैंकिंग 2023

क्र. सं.	एनआईआरएफ रैंकिंग	कॉलेज का नाम
1	1	मिरांडा हाउस
2	2	हिंदू कॉलेज
3	6	आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज
4	9	किरोड़ीमल कॉलेज
5	10	लेडी श्री राम महिला कॉलेज
6	11	श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स
7	12	हंसराज कॉलेज
8	13	श्री वेंकटेश्वर कॉलेज
9	14	सेंट स्टीफ़न कॉलेज
10	17	देशबंधु कॉलेज

विद्यार्थियों का पंजीकरण

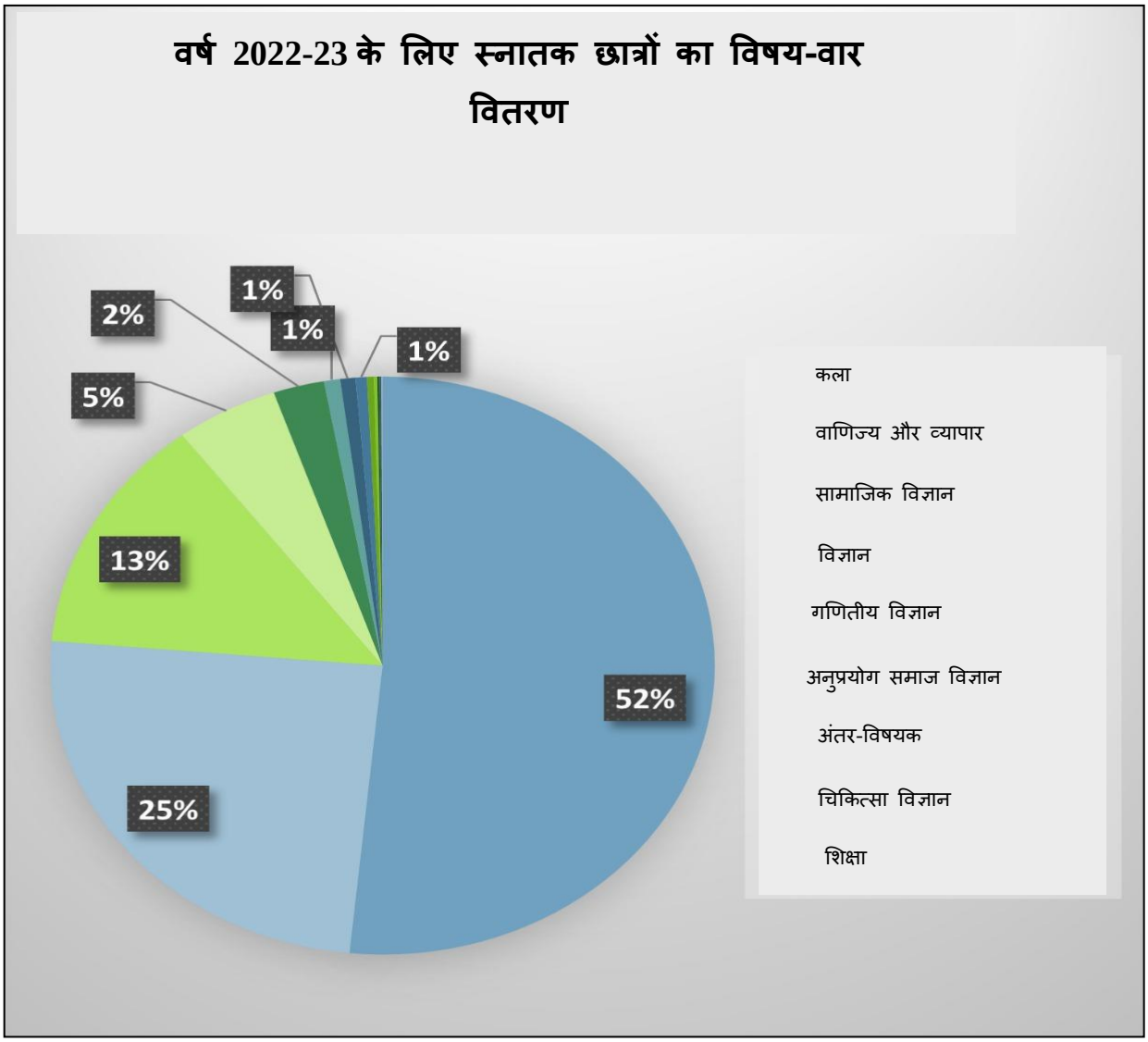

वर्ष 2022-23 के आँकड़ों के अनुसार, विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों का पंजीकरण कला में 302819, वाणिज्य और व्यवसाय में 145307, सामाजिक विज्ञान में 78276, विज्ञान में 29290, गणितीय विज्ञान में 14592, अनुप्रयुक्त सामाजिक विज्ञान और मानविकी में 4600, अंतर-विषयक में 4364, चिकित्सा विज्ञान में 3232, शिक्षा में 1927, संगीत और ललित कला में 957, आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा में 618, होम्योपैथिक चिकित्सा में 589, केंद्रों में 331 (एसीबीआर, सीआईसी, आईआईसी) है।

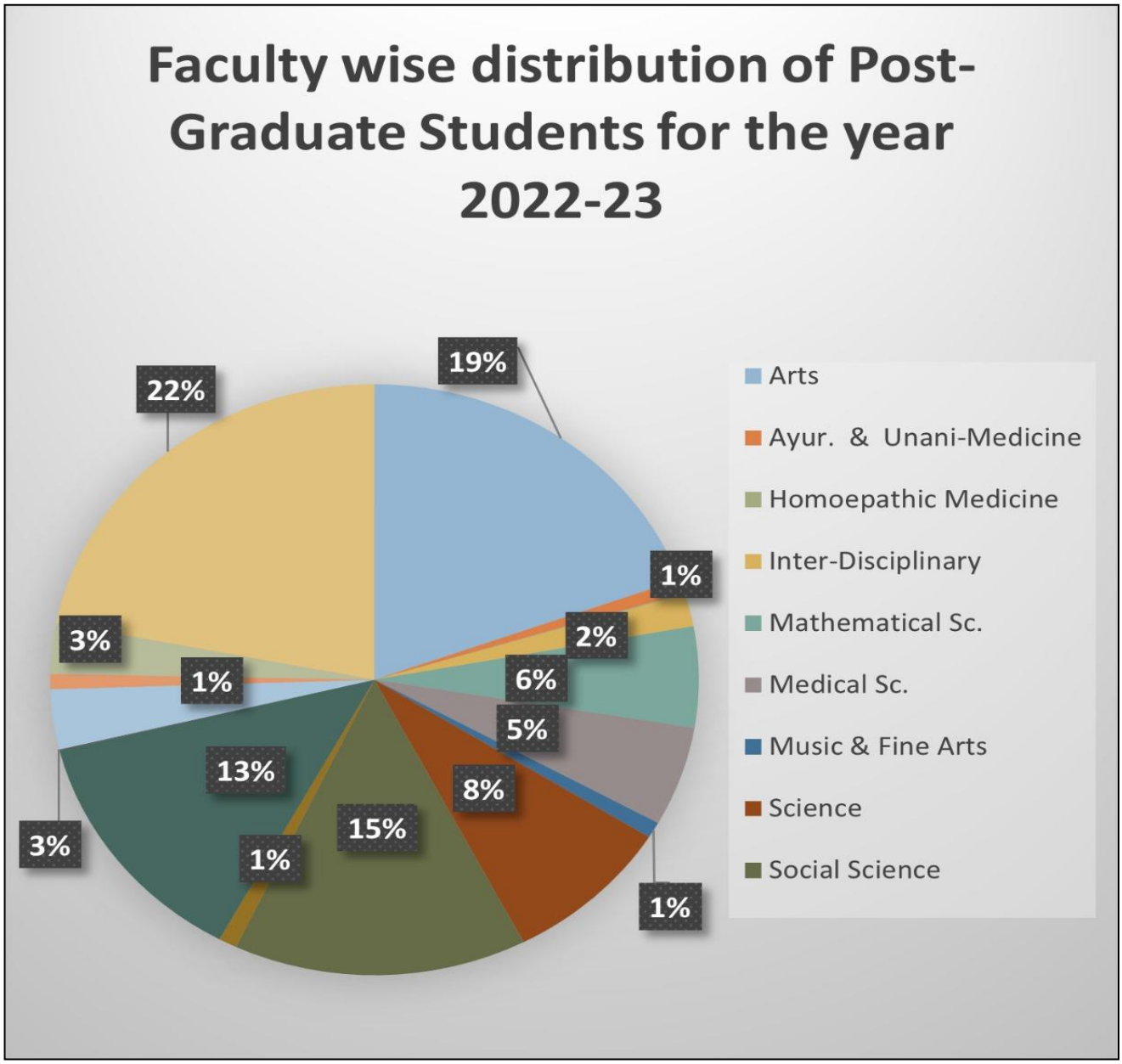

वर्ष 2022-23 के आँकड़ों के अनुसार, विश्वविद्यालय ने कला में 7900, वाणिज्य और व्यवसाय में 5356, सामाजिक विज्ञान में 5930, विज्ञान में 3425, गणितीय विज्ञान में 2232, अनुप्रयुक्त विज्ञान मानविकी में 368, अंतःविषयक में 715, चिकित्सा विज्ञान में 2212, शिक्षा में 1331, संगीत और ललित कला में 357, आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा में 311, होम्योपैथिक चिकित्सा में 27, केंद्रों (एसीबीआर, सीआईसी, आईआईसी) में 332, प्रबंधन में 1120 और विधि में 8886 विद्यार्थियों का पंजीकरण किया है।

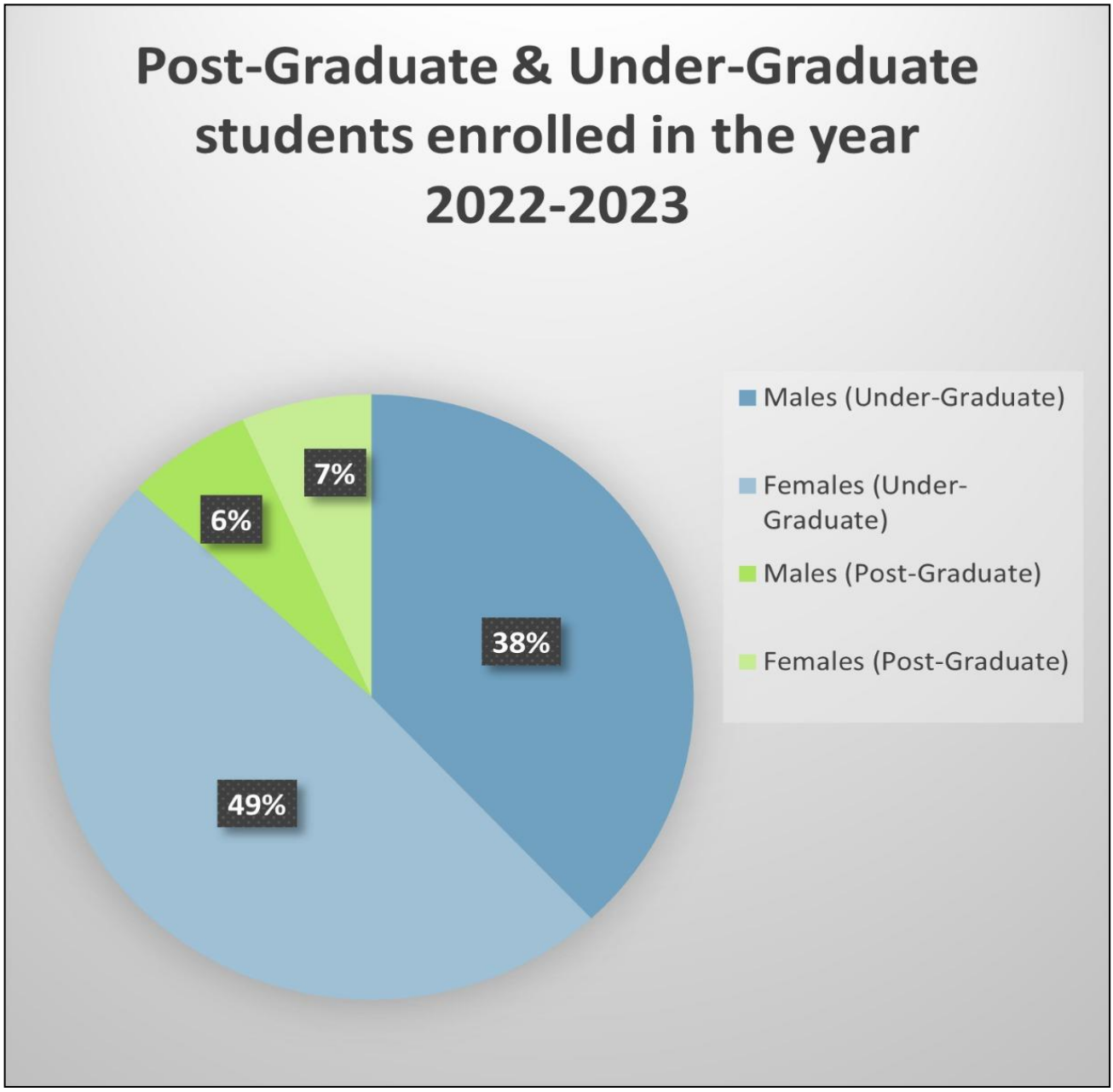

वर्ष 2022-23 के आँकड़ों के अनुसार, विश्वविद्यालय में 2,26,497 स्नातक-पूर्व, 33,635 स्नातकोत्तर छात्र हैं। पारंपरिक मोड में पंजीकृत विद्यार्थियों की कुल संख्या 2,60,132 है। इसके अतिरिक्त, मुक्त शिक्षा विद्यालय में 3,34,498 छात्र नामांकित हैं और 32,797 नॉन-कॉलेजिएट महिला छात्र भी इस वृहत विश्वविद्यालय का हिस्सा हैं। 2022-23 के दौरान सभी कार्यक्रमों में पारंपरिक और दूरस्थ मोड में कुल पंजीकरण 6,27,427 था।

दिल्ली विश्वविद्यालय के विदेशी विद्यार्थियों का देशवार वितरण

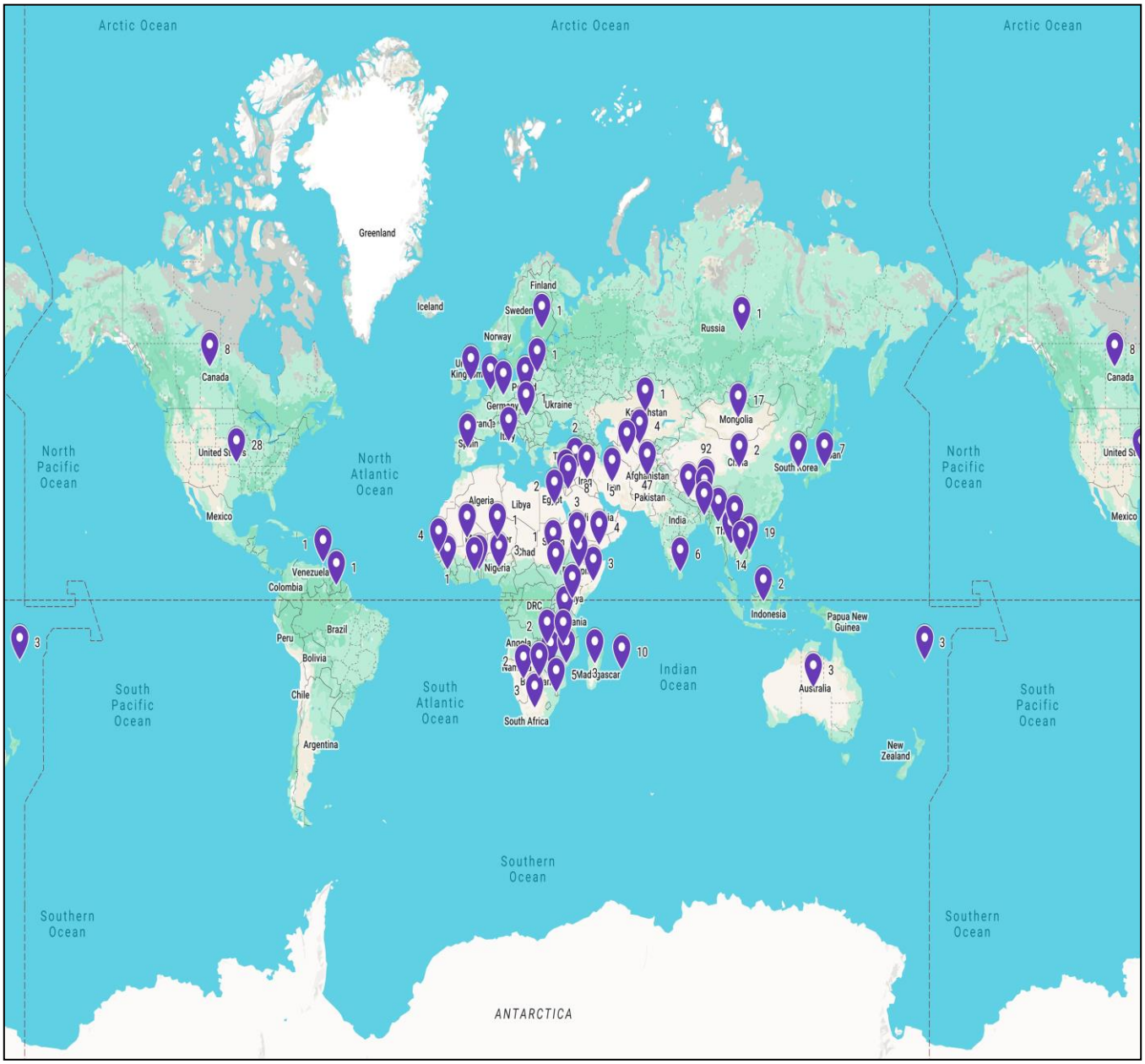

उपरोक्त विश्व मानचित्र दुनिया के विभिन्न देशों को दर्शाता है जहां से विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में पंजीकृत किया जाता है। शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश पाने के इच्छुक अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन

दिल्ली विश्वविद्यालय अकादमिक क्षितिज का विस्तार करने और देश में शैक्षिक मानक के स्तर को बढ़ाने में पथप्रदर्शक रहा है। इस परंपरा को ध्यान में रखते हुए, विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) लागू की है, जिसका उद्देश्य देश की शिक्षा प्रणाली के शैक्षणिक परिदृश्य को रूपांतरित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) का उद्देश्य भारत में प्रीस्कूल से लेकर डॉक्टरेट स्तर तक शिक्षा प्रणाली को आमूल परिवर्तन करना है। विश्वविद्यालय ने स्नातक-पूर्व स्तर पर एनईपी के कार्यान्वयन के लिए एक संरचना तैयार की है जिसे स्नातक-पूर्व पाठ्यक्रम संरचना 2022 (यूजीसीएफ) कहा जाता है।

यूजीसीएफ एनईपी के विभिन्न मूलभूत पहलुओं को अपनाया है और आठ सेमेस्टर में एक समान क्रेडिट प्रणाली बनाई। यूजीसीएफ छात्र केंद्रित है और विद्यार्थियों को अपने स्वयं के शैक्षणिक पथ विकसित करने के लिए अधिकतम विकल्प और लचीलापन देने का प्रयास करता है। इसने धीमी और तेज गति से अध्ययन के लिए प्रावधान किया है। यूजीसीएफ की संरचना और इसके तहत तैयार पाठ्यक्रम 21 वीं सदी के कौशल के साथ-साथ एक या एकाधिक विषयों, बहु-विषयक और समग्र शिक्षा में गहन ज्ञान प्रदान करने के लिए हैं।

इंटर्नशिप, शिक्षुता, परियोजनाओं और सामुदायिक आउटरीच को एक अभिन्न अंग बनाया गया है। समग्र शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए कला और विज्ञान, पाठ्यचर्या और पाठ्येतर और शैक्षणिक और व्यावसायिक के पारंपरिक पृथक्करण को खंडित कर दिया गया है। जिन विद्यार्थियों को 2022-23 में विश्वविद्यालय और उसके कॉलेजों में एक सामान्य प्रवेश परीक्षा (जिसे सीयूईटी कहा जाता है) के माध्यम से प्रवेश मिला है, उन्हें यूजीसीएफ 2022 के तहत तैयार पाठ्यक्रम के पहले सेमेस्टर में पंजीकृत किया गया है। अधिक व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने के लिए, विश्वविद्यालय ने स्नातक कार्यक्रमों के पहले वर्ष के विद्यार्थियों के लिए सौ से अधिक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम तैयार किए हैं। इन कौशलों, जिसमें सॉफ्ट स्किल और तकनीकी कौशल दोनों शामिल हैं, से विद्यार्थियों की क्षमताओं को बढ़ाने और उनकी रोजगार क्षमता बढ़ाने की आशा है।

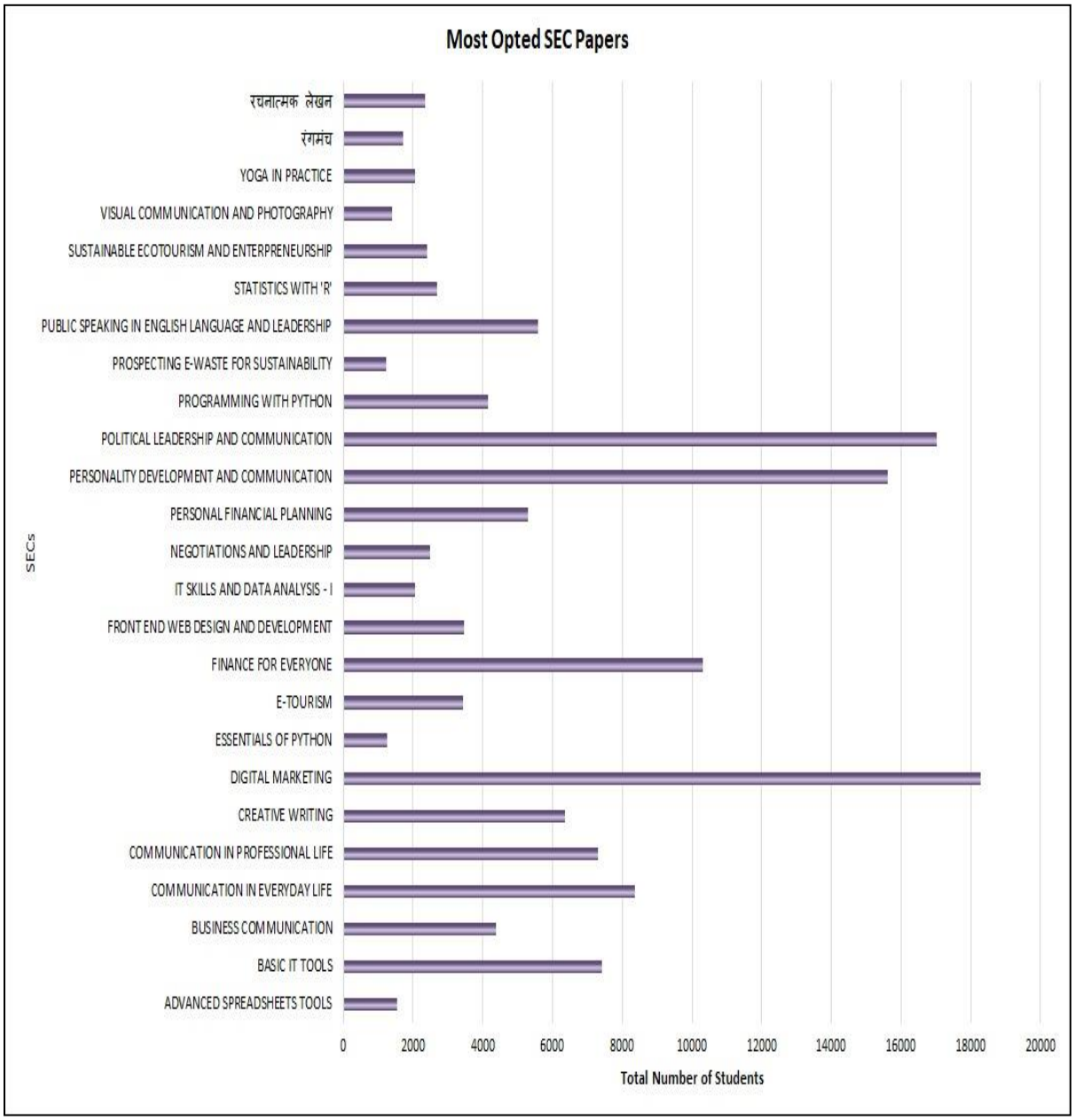

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम: कौशल शिक्षा प्रदान करने के लिए, 100 से अधिक कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (एसईसी) शुरू किए गए थे। इनमें सॉफ्ट स्किल्स से लेकर तकनीकी कौशल तक कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिससे विद्यार्थियों की क्षमताओं में वृद्धि होने और उनकी रोजगार क्षमता बढ़ाने की उम्मीद है। एनईपी बैच के पहले बैच के विद्यार्थियों को पहले सेमेस्टर में कुल 93 एसईसी की पेशकश की गई और 153574 विद्यार्थियों ने एसईसी पाठ्यक्रमों का विकल्प चुना। डिजिटल मार्केटिंग सबसे अधिक चुना गया एसईसी पेपर था। सबसे अधिक चुने गए 25 एसईसी ऊपर दर्शाए गए हैं।

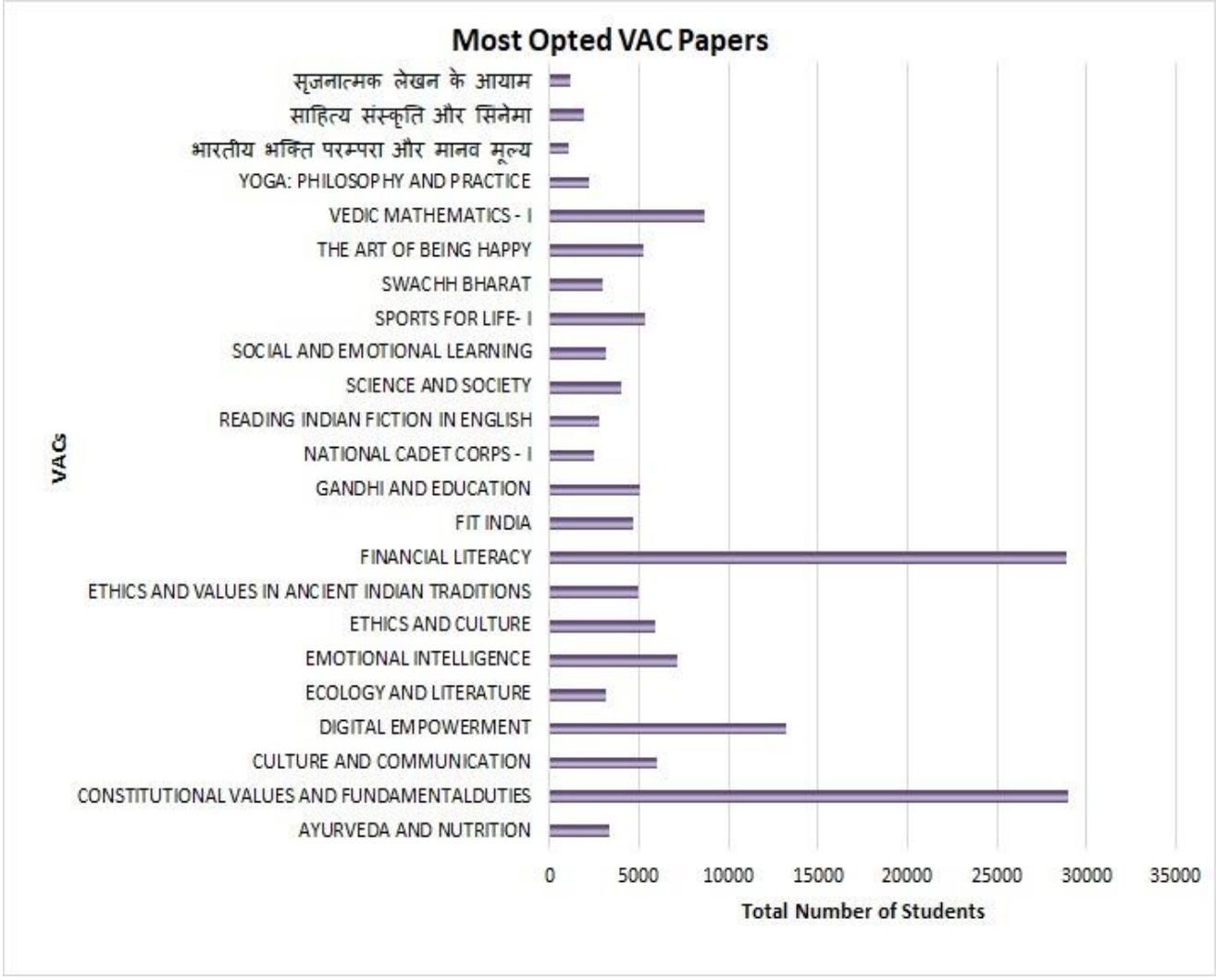

मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम (वीएसी): एनईपी 2020 के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य न केवल संज्ञानात्मक विकास है, बल्कि चरित्र का निर्माण करना और 21 वीं सदी के प्रमुख कौशल से समृद्ध समग्र और व्यक्तियों का सर्वांगीण निर्माण करना है। मूल्यों, नैतिकता को विकसित करना और संस्कृति की बेहतर समझ विकसित करना इस प्रकार बहुत महत्वपूर्ण है। इस संबंध में, विश्वविद्यालय ने एनईपी 2020 कार्यान्वयन के पहले वर्ष में 24 मूल्य-संवर्धन पाठ्यक्रम (वीएसी) विकसित किए, और इनमें से सबसे अधिक चुना गया पाठ्यक्रम/पेपर संवैधानिक मूल्य और मौलिक कर्तव्य था। कुल 153634 विद्यार्थियों ने वीएसी पाठ्यक्रमों का विकल्प चुना और संवैधानिक मूल्य और मौलिक कर्तव्य सबसे अधिक चुना गया वीएसी पेपर था। यह ग्राफ कुछ सबसे अधिक चुने गए वीएसी पेपर और उन्हें चुनने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या दर्शाता है।

एनईपी के तहत प्रस्तावित विभिन्न एईसी में नामांकित छात्रों की कुल संख्या

एईसी	विद्यार्थियों की कुल संख्या
संस्कृत में उन्नत नीति साहित्य (संस्कृत ए)	228
कला की सराहना - I	219
बुनियादी असमिया	17
बुनियादी बंगाली	139
बुनियादी बोडो	1
बेसिक डोगरी	3
बेसिक गुजराती	10
बुनियादी कन्नड़	9
बुनियादी कश्मीरी	5
बुनियादी मैथिली	10
बुनियादी मलयालम	104
बुनियादी मणिपुरी	36
बेसिक मराठी	41
बुनियादी नेपाली	13
बेसिक ओडिया	8
बेसिक सिंधी	2
बुनियादी तमिल	82
बुनियादी तेलुगु	30
पर्यावरण अध्ययन - I	227
पर्यावरण विज्ञान: सिद्धांत व्यवहार में - I	80002
हिंदी ई (अनिवार्य हिंदी पाठ्यक्रम - I)	52
हिंदी ई (अनिवार्य हिंदी पाठ्यक्रम - 2)	1
संस्कृत भाषा का परिचय (संस्कृत सी)	1203
परिचयात्मक उपनिषद और गीता (संस्कृत बी)	1280
पंजाबी भाषा दा मुधला पधार	962
पंजाबी भाषा दा उचेरा पधार	461
पंजाबी भाषा दा उत्तम पधार	167
संस्कृत-I	7

संस्कृत ए: संस्कृत में उन्नत नीति साहित्य	1
असमिया में अनुवाद और विवेचना	129
बांग्ला में अनुवाद और विवेचना	127
बोडो में अनुवाद और विवेचना	1
कन्नड़ में अनुवाद और विवेचना	1
मलयालम में अनुवाद और विवेचना	293
मणिपुरी में अनुवाद और विवेचना	104
मराठी में अनुवाद और विवेचना	1
नेपाली में अनुवाद और विवेचना	13
ओडिया में अनुवाद और विवेचना	20
तमिल में अनुवाद और विवेचना	50
तेलुगु में अनुवाद और विवेचना	105
उर्दू-ए	186
उर्दू-बी	232
उर्दू-सी	230
जनसंचार और रचनात्मक लेखन (हिन्दी ख)	1
सोशल मीडिया और ब्लॉग लेखन - ग	4519
हिंदी (केवल विदेशी विद्यार्थियों के लिए)	182
हिन्दी औपचारिक लेखन - ख	36115
हिन्दी भाषा: सम्प्रेषण और संचार - क	25726

क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रम (एईसी): बहुभाषावाद प्रदान करने के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए, भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सभी 22 भारतीय भाषाओं को शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से विद्यार्थियों को क्षमता वृद्धि पाठ्यक्रम के रूप में पेश किया गया है। विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय के बाहर के भाषा विशेषज्ञों को नियुक्त करके उन भाषाओं को पढ़ाने के लिए विशेष प्रयास किए हैं जहां शिक्षक विश्वविद्यालय और इसके कॉलेजों में उपलब्ध नहीं हैं। प्रथम वर्ष में विभिन्न भारतीय भाषाओं को चुनने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या ऊपर दी गई है:

भारतीय ज्ञान प्रणाली

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस), जो हमारी 6000 साल पुरानी समृद्ध सभ्यतागत विरासत के ज्ञान और विश्वदृष्टि को समाहित करती है, के अध्ययन का महत्व सर्वोपरि है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के अध्ययन की समकालीन प्रासंगिकता को देखते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसे बहुत महत्व दिया है।

वैज्ञानिक उत्साह, गहन नवोन्वेषी दृष्टिकोण और उसके अनुरूप अनुप्रयोग ने हमारी सभ्यता को न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में समृद्ध बनाया है, बल्कि वैश्विक संदर्भ की तुलना में आर्थिक स्तर पर भी समृद्ध बनाया है। यह केवल ज्ञान प्रसार की एक ठोस और सुव्यवस्थित प्रणाली और हमारे अस्तित्व के हर पहलू पर इसके परिणामी प्रभाव के माध्यम से ही संभव था।

आईकेएस पर आधारित जेनेरिक वैकल्पिक पाठ्यक्रम

आईकेएस पर आधारित कुल 13 जीई पाठ्यक्रम पेश किए गए थे। 16405 विद्यार्थियों ने इन पाठ्यक्रमों का विकल्प चुना। भारतीय राजनीतिक चिंतन में विचार इनमें से सर्वाधिक चुना गया पाठ्यक्रम था। नीचे दिया गया ग्राफ़ कुछ सर्वाधिक चुने गए जीई पेपर (100 ≥ चुनने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या) और उन्हें चुनने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या दर्शाता है।

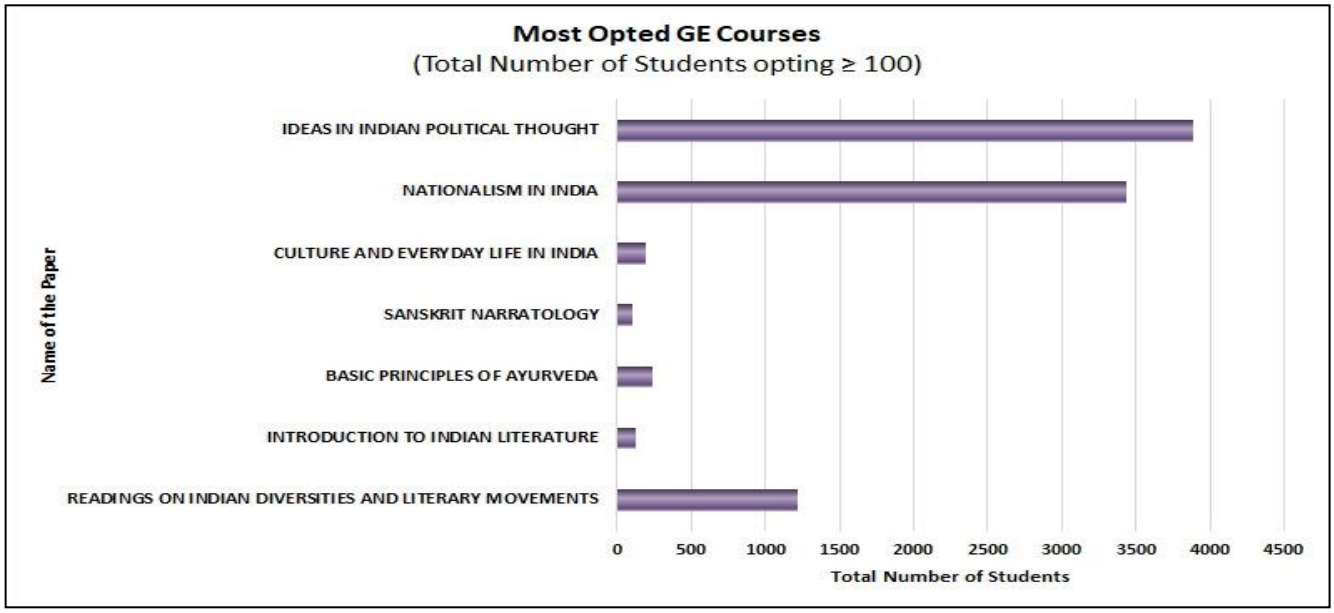

आईकेएस पर आधारित मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम

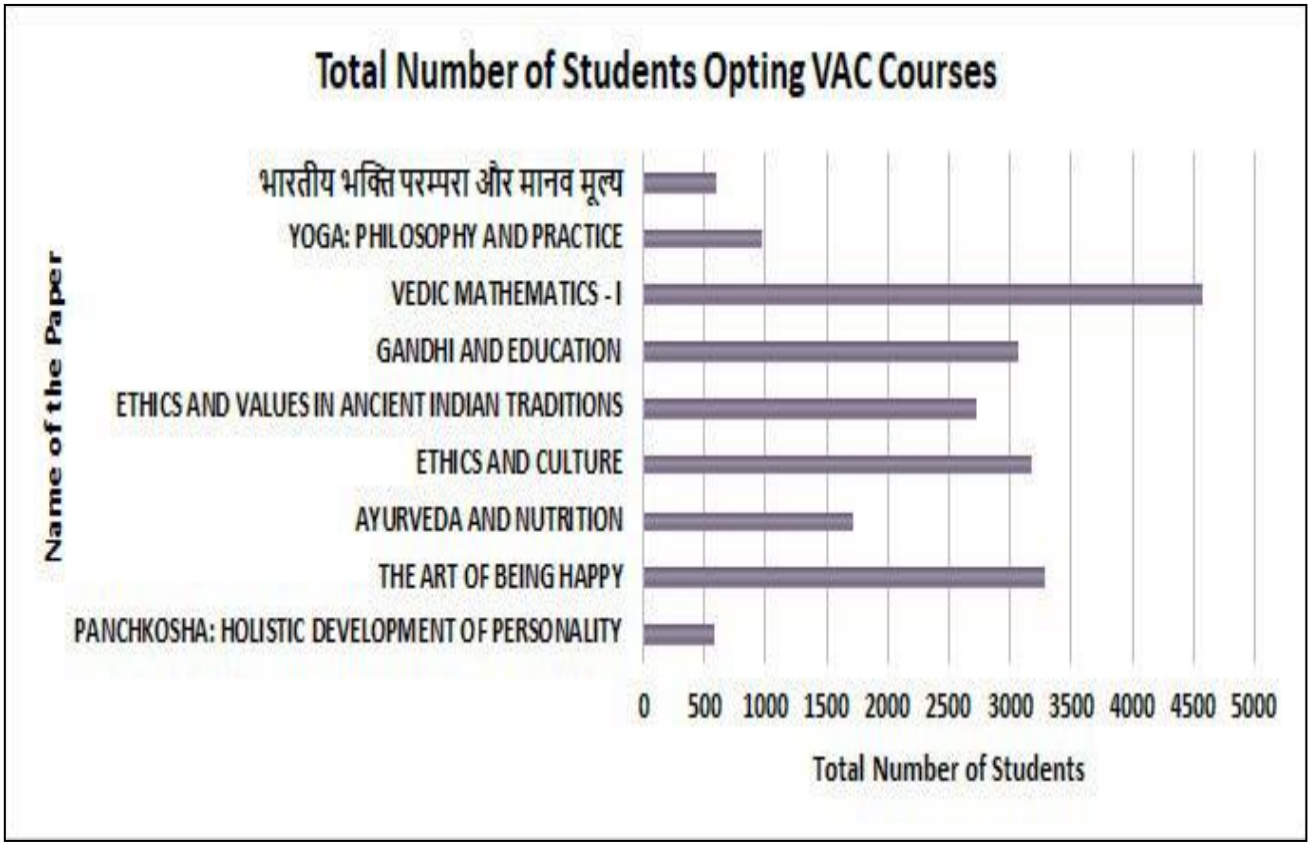

यह ग्राफ़ उन छात्रों की कुल संख्या दिखाता है जिन्होंने आईकेएस पर आधारित वैक पाठ्यक्रम चुना है।

अनुसंधान की मुख्य विशेषताएं

दिल्ली विश्वविद्यालय अनुसंधान और नवाचार में उत्कृष्टता के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित है। विश्वविद्यालय गहन अनुसंधान करता है और अपने प्रतिष्ठित संकाय द्वारा संचालित गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान के माध्यम से बुनियादी ज्ञान के साथ-साथ उन्नत तकनीक बनाने और साझा करने का प्रयास करता है। अनुसंधान में उत्कृष्टता के प्रति इसकी मजबूत प्रतिबद्धता विश्वविद्यालय के एच-इंडेक्स से स्पष्ट है।

स्कोपस डेटाबेस के अनुसार दिल्ली विश्वविद्यालय में 62,131 प्रकाशन हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय का एच-इंडेक्स 270 है, जो भारतीय विश्वविद्यालयों में सबसे अधिक है। स्कोपस के अनुसार 2022-2023 तक प्रकाशनों की कुल संख्या >40000 है

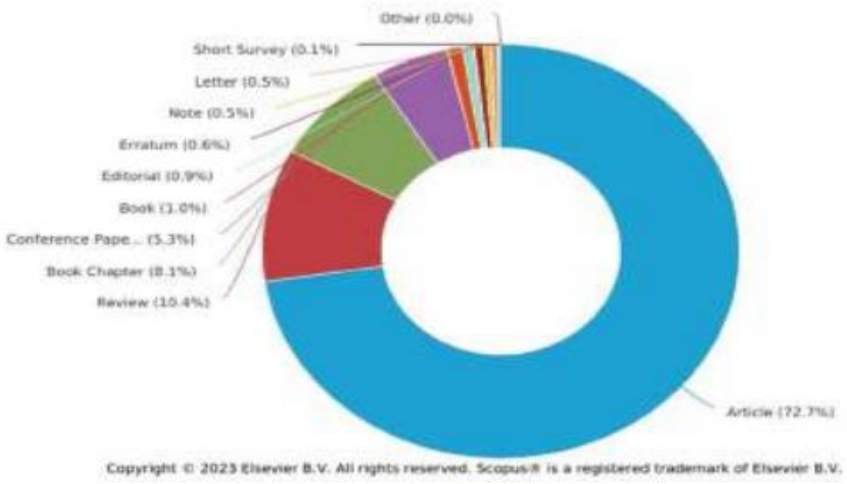

विश्वविद्यालय की शोध-पत्रिकाएँ

कई पत्रिकाएँ हैं जो व्यक्तिगत विभागों और कॉलेजों द्वारा प्रकाशित की जाती हैं, जिनमें अकाडेमोस, इंडियन इकोनॉमिक रिव्यू, जर्नल ऑफ कॉमर्स एंड बिजनेस स्टडीज, इंडियन लॉ जर्नल, इंडियन जर्नल ऑफ अफ्रीकन स्टडीज, जर्नल ऑफ लॉ टीचर्स ऑफ इंडिया, इंडियन जर्नल ऑफ चेस्ट डिजीज एंड एलाइड साइंसेज, जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस, पर्सियन रिसर्च जर्नल, रामानुजन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एंड रिसर्च, दिल्ली जर्नल ऑफ कंटेम्परारी लॉ, फाइटोमोर्फोलॉजी, वागेश्वरी, दिल्ली लॉ रिव्यू, फैकल्टी ऑफ लॉ, यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, जर्नल ऑफ बिजनेस थॉट, इंडियन इकोनॉमिक रिव्यू, डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, वी-ए मल्टीडिसिप्लनरी एंड मल्टीलिंगुअल पीयर-रिव्यूड रिसर्च जर्नल, डीयू-विधा, दिल्ली यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज एंड सोशल साइंस, दिल्ली यूनिवर्सिटी ऑफ नेचुरल साइंस, दिल्ली यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ अंडरग्रेजुएट रिसर्च एंड इनोवेशन आदि।

विश्वविद्यालय विज्ञान उपकरण केंद्र (यूएसआईसी)

यूएसआईसी एक केंद्रीय सुविधा है और इसमें परिष्कृत विश्लेषणात्मक उपकरण हैं। इसका मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय के घटक कॉलेजों में विज्ञान विभागों के सभी शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को सेवाएं प्रदान करना है। विभिन्न सामग्रियों पर स्पेक्ट्रोस्कोपिक, थर्मल, रासायनिक और माइक्रोस्ट्रक्चरल विश्लेषण करने की सुविधाएं सभी शोधकर्ताओं तक विस्तारित हैं। सभी विज्ञान विभागों के लिए एक केंद्रीकृत तरल नाइट्रोजन वितरण सुविधा रखी जाती है, और आयातित वस्तुओं के लिए सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क छूट के सभी अनुरोधों पर कार्रवाई की जाती है। सामग्री लक्षण वर्णन और विश्लेषण के केंद्रित क्षेत्रों में प्रयोगशाला कर्मचारियों और अनुसंधान विद्वानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं/सेमिनार नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

दक्षिण कैंपस में केंद्रीय इंस्ट्रूमेंटल सुविधा (सीआईएफ)

यह सुविधा जीनोमिक्स (जीनोटाइपिंग, सीक्वेंसिंग, रियल-टाइम क्यूपीसीआर), प्रोटिओमिक्स (एलसीएमएस, यूपीएलसी, सीडी स्पेक्ट्रोफोटोमेट्री), इमेजिंग (कॉन्फोकल माइक्रोस्कोपी, स्कैनिंग इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपी और लेजर विच्छेदन माइक्रोस्कोपी), और फ्लो साइटोमेट्री में उच्च गुणवत्ता वाली सेवा, अभिनव समाधान और अत्याधुनिक प्रोद्योगिकियाँ प्रदान करती है। अपनी इन-हाउस परियोजनाओं को चलाने के लिए विश्वविद्यालय के संकाय की सेवा करने के अलावा, यह सुविधा नाममात्र की प्रक्रिया में विश्वविद्यालय प्रणाली के बाहर के अकादमिक उपयोगकर्ताओं को विश्लेषणात्मक सहायता भी प्रदान करती है।

संकाय पुरस्कार/सम्मान

संकाय द्वारा अपने संबंधित क्षेत्रों में किए गए उल्लेखनीय योगदान की मान्यता में, पिछले कुछ वर्षों में उन्हें बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। कुछ पुरस्कार/सम्मान/फैलोशिप इस प्रकार हैं:

नाम	पुरस्कार/सम्मान/फैलोशिप
प्रोफेसर रमाकांत	❖ फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनए)
प्रोफेसर ए.के. वर्मा	❖ फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनए)
प्रोफेसर विनोद कुमार	❖ फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनए)
प्रोफेसर इंद्रजीत सिंह	❖ फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनए) ❖ हम्बोल्ट रिसर्च अवार्ड, जर्मनी, 2022 जीता
प्रोफेसर स्वाति साहा	❖ फेलो, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (एफएनएएससी)
प्रोफेसर डी.एस. रावत	❖ फेलो, नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (एफएनएएससी) ❖ वासविक रिसर्च अवार्ड ❖ ड्रग रिसर्च में आईएससीबी एक्सीलेंस अवार्ड ❖ एसीएस बायोकॉन्जुगेट केमिस्ट्री के अंतर्राष्ट्रीय संपादकीय बोर्ड के सदस्य
प्रोफेसर पारबती विश्वास	❖ फेलो, भारतीय विज्ञान अकादमी (एफएएससी)
प्रोफेसर एस. डी. बीजू	❖ केरल श्री 2022, केरल सरकार द्वारा स्थापित सर्वोच्च राज्य-स्तरीय नागरिक पुरस्कार
डॉ. भरत जी.	❖ सीएसआईआर-प्रौद्योगिकी पुरस्कार 2021
प्रोफेसर अनिल के अनेजा	❖ 23वां एनसीपीईडीपी-एलटीआईमाइंडट्री हेलेन केलर पुरस्कार
प्रोफेसर गिरधर के. पांडे	❖ वर्ष 2023 में नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (एनएएसआई) द्वारा प्रो. श्री रंजन मेमोरियल अवार्ड
प्रोफेसर इंद्रनील दासगुप्ता	❖ वर्ष 2023 में आईएनएसए द्वारा दी जाने वाली आईएनएसए वरिष्ठ वैज्ञानिक फ़ेलोशिप
डॉ. पीयूष गुप्ता	❖ रॉयल कॉलेज ऑफ पीडियाट्रिक्स एंड चाइल्ड हेल्थ की फैलोशिप (एफआरसीपीसीएच)", लंदन, 2023 में
प्रोफेसर इंद्रजीत	❖ 2022-23 के लिए हम्बोल्ट फाउंडेशन, जर्मनी द्वारा हम्बोल्ट रिसर्च अवार्ड।

प्रोफेसर एस.डी. बीजू	❖ फेलो, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (एफएनए, आईएनएसए), नई दिल्ली भारत, 01 जनवरी 2023 से प्रभावी
प्रोफेसर एस.डी. बीजू	❖ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की प्रतिष्ठित रैडक्लिफ फ़ेलोशिप 2023-24
डॉ. ए.के. सक्सेना	❖ 21 सितंबर 2022 को टोरंटो कन्वेंशन सेंटर, टोरंटो, कनाडा में 'दर्द अनुसंधान और प्रबंधन में उत्कृष्टता' के लिए आईएएसपी (इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर स्टडी ऑफ पेन, यूएसए) पुरस्कार
डॉ. धीरज शाह	❖ देश में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए एक शीर्ष तकनीकी संस्थान और थिंक टैंक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान के निदेशक
डॉ. पीयूष गुप्ता	❖ 2022 में एशिया पैसिफिक पीडियाट्रिक एसोसिएशन द्वारा "उत्कृष्ट एशियाई बाल रोग विशेषज्ञ पुरस्कार"
डॉ. धीरज शाह	❖ वर्ष 2022 के लिए नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंसेज (एफएएमएस) की फैलोशिप।
डॉ. राज कुमार	❖ 04.09.2022 को दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन द्वारा चिकित्सा शिक्षा और स्वास्थ्य मुद्दों पर जन जागरूकता की शिक्षा में उत्कृष्ट योगदान, कड़ी मेहनत और समर्पण के लिए प्रख्यात चिकित्सा और स्वास्थ्य शिक्षा शिक्षक पुरस्कार-2022
प्रोफेसर टी. वी. मणिकंदन	❖ 17/09/2022 को AIMA चेन्नई द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार "आचार्य रत्न"
डॉ. चक्रवर्ती महाजन	❖ इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी द्वारा प्रोफेसर एम.एन. श्रीनिवास मेमोरियल पुरस्कार 2022।
प्रोफेसर आर. नागराजन	❖ एसएमसी सिल्वर मेडल/सोसाइटी फॉर मैटेरियल्स केमिस्ट्री/इंडियन एकेडमी ऑफ साइंस, बैंगलोर की इनोवेशन फेलोशिप
सीनियर प्रोफेसर पुनम बेदी	❖ स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा विश्व के शीर्ष 2% शोधकर्ताओं की सूची में, एल्सेवियर द्वारा 10 अक्तूबर, 2022 को प्रकाशित

अंग्रेजी विभाग के प्रमुख प्रोफेसर अनिल कुमार अनेजा को रोल मॉडल विकलांग व्यक्तियों की श्रेणी में 23वें एनसीपीईडीपी-एलटीआईमाइंडट्री हेलेन केलर अवार्ड 2022 से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार उन्हें श्री राजेश अग्रवाल, सचिव, दिव्यांग के सशक्तीकरण विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 10 दिसंबर 2022 को इंडिया हैबिटेट सेंटर, दिल्ली में एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।

डॉ. अभिषेक ठाकुर, सहायक प्रोफेसर, सामाजिक कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय (दिव्यांग व्यक्ति सशक्तीकरण विभाग/दिव्यांगजन) द्वारा वर्ष 2022 के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तीकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार व्यक्तिगत उत्कृष्टता श्रेष्ठ दिव्यांगजन की श्रेणी में है। यह पुरस्कार उन्हें भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा 3 दिसंबर 2022 को प्रदान किया गया था। यह दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तीकरण के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों की मान्यता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय उन्हें उनकी महान उपलब्धि और विश्वविद्यालय को उसके शताब्दी समारोह में गौरवान्वित करने के लिए बधाई देता है।

प्रोफेसर डी.एस. रावत "आईएससीबी एक्सीलेंस अवार्ड इन ड्रग रिसर्च 2022"

इंडियन सोसाइटी ऑफ केमिस्ट एंड बायोलॉजिस्ट ने प्रोफेसर डी.एस. रावत, एफएनएएससी को औषधीय रसायन विज्ञान में उनके शोध के लिए दवा अनुसंधान 2022 में आईएससीबी उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया। प्रोफेसर रावत समूह ने एक अणु विकसित किया जिसे पार्किंसंस रोग के इलाज के लिए एक दवा के रूप में विकास के लिए बोस्टन स्थित फार्मा उद्योग को लाइसेंस दिया गया है।

विश्वविद्यालय की श्रेष्ठ पद्धतियां

उधमोद्या फाउंडेशन: एक धारा 8 कंपनी

विश्वविद्यालय हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किए गए आत्मनिर्भर भारत के आह्वान को प्रतिध्वनित करता है। उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) के लिए एक मार्गदर्शक ढांचे के रूप में राष्ट्रीय नवाचार और स्टार्टअप नीति (एनआईएसपी) को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उनकी मार्गदर्शक दृष्टि के बाद, उद्यम फाउंडेशन, एक धारा 8 पंजीकृत कंपनी, नवाचार और उद्यमिता (आई एंड ई) से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए स्थापित की गई है। उधमोद्या दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में निदेशक मंडल द्वारा शासित है। उधमोद्या सभी नवाचार और उद्यमिता कार्यक्रमों, गतिविधियों और पहलों का प्रबंधन करता है और मुख्य रूप से दो ऊर्ध्वाधर दृष्टिकोण का पालन करता है जो अकादमिक शिक्षण और नवाचार और उद्यमिता गतिविधियों के लिए समर्थन हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय फाउंडेशन: एक धारा 8 कंपनी

दिल्ली विश्वविद्यालय फाउंडेशन का दृष्टिकोण दिल्ली विश्वविद्यालय के लिए बंदोबस्ती का निर्माण करना है ताकि यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित विश्वविद्यालय बन सके, जो शिक्षण, अनुसंधान और आउटरीच में उत्कृष्टता के लिए मान्यता प्राप्त हो; विद्यार्थियों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करें, उनकी प्रतिभा का पोषण करें, बौद्धिक विकास को बढ़ावा दें और उनके व्यक्तिगत विकास को आकार दें। फाउंडेशन का निर्माण और समर्थन करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली विश्वविद्यालय बंदोबस्ती निधि का निर्माण और समर्थन करना है, जो व्यक्तियों, शुभचिंतकों, पूर्व विद्यार्थियों, परोपकारियों, संघों, संस्थानों, व्यावसायिक ट्रैटरनिटी, उद्योगों और कॉर्पोरेट्स से दान, धन, सदस्यता और योगदान जुटाता है। फाउंडेशन का जनादेश पूर्व विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय के शुभचिंतकों के बीच पूर्व विद्यार्थियों, बैठकों, व्याख्यानों, चर्चाओं, अध्ययन दौरों और उनके शैक्षणिक गतिविधियों के पुनर्मिलन के आयोजन के माध्यम से बातचीत को बढ़ावा देना है।

क्षमता संवर्धन योजना

विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा को और अधिक सुलभ बनाने के लिए अपने शताब्दी वर्ष में क्षमता वृद्धि योजना (सीईएस) नामक एक नई योजना शुरू की है, जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत परिकल्पित है। यह योजना जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को विश्वविद्यालय के कॉलेजों और विभागों में एक सेमेस्टर में प्रदान किए गए किसी एक या दो पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण करके अपने ज्ञान/क्षमता को बढ़ाने के अवसर प्रदान करेगी। ऐसे उम्मीदवार को अध्ययन के कार्यक्रम के लिए नामांकन किए बिना ऐसे पाठ्यक्रम (पाठ्यक्रमों) के नियमित विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय में अध्ययन करने की सुविधा मिलेगी। निर्धारित प्रति पाठ्यक्रम सीटों की संख्या ऐसे पाठ्यक्रम के कक्षा आकार का अधिकतम 10% है और इन सीटों को अतिरिक्त सीटों के रूप में माना जाता है। जो लोग पात्रता मानदंडों और पूर्व-आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, वे ऐसे पाठ्यक्रम के लिए आवेदन

करने के पात्र हैं। एक पाठ्यक्रम के लिए पंजीकरण योग्यता पर आधारित है और एक सेमेस्टर के लिए मान्य होगा। एक उम्मीदवार एक सेमेस्टर में अधिकतम दो पाठ्यक्रम या आठ क्रेडिट के लिए पंजीकरण कर सकता है। इन विद्यार्थियों का शिक्षण अधिगम नियमित विद्यार्थियों के साथ होगा और मूल्यांकन का तरीका ऐसे पाठ्यक्रम के नियमित विद्यार्थियों के समान होगा। पाठ्यक्रम के सफल समापन पर, एक उम्मीदवार को एक प्रमाण पत्र से सम्मानित किया जाएगा और अर्जित क्रेडिट उसके अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट में जमा किए जाएंगे।

अंतर्राष्ट्रीय छात्र

विदेशी छात्र रजिस्ट्री हर साल फरवरी में वैश्विक स्तर पर अपना प्रवेश पोर्टल लॉन्च करती है। यह लॉन्च विभिन्न देशों के विद्यार्थियों को स्नातक से पीएच.डी. स्तर तक 100 से अधिक पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन करने की अनुमति देता है। एफएसआर में प्रमाणपत्र/डिप्लोमा और उन्नत डिप्लोमा फार्मेट में पाठ्यक्रम प्रदान करके विदेशी विद्याथयों के बीच हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन भी प्रदान किया जाता है। एफएसआर पोर्टल में सभी प्रकार के संबंधित दस्तावेजों, वीडियो और सिफारिश पत्रों को लागू करने और अपलोड करने की अनूठी सुविधा है जो हमें प्रमुख कॉलेजों और विभागों में विदेशी आवेदकों के प्लेसमेंट का निर्धारण करने में मदद करते हैं। विश्वविद्यालय उन लोगों को भी अनुमति देता है जिनके अंतिम परिणाम अभी तक नहीं आए हैं। उनके प्रवेश की प्रक्रिया पिछले सेमेस्टर के मूल्यांकन के आधार पर की जाती है। भारतीय दूतावास और राजनयिक मिशनों से संपर्क किया जाता है ताकि उन देशों के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद छात्रवृत्ति धारकों को दिल्ली विश्वविद्यालय भेजने का एक प्रमुख घटक है। यह 50 से अधिक देशों के विद्यार्थियों को प्रदान करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। कुल मिलाकर, एफएसआर हमारे विभिन्न कॉलेजों और विभागों में 85 देशों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करता है।

वीसी इंटर्नशिप कार्यक्रम

विश्वविद्यालय ने अपने विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 से 'कुलपति इंटर्नशिप योजना' (वीसीआईएस) शुरू की है, जो उन्हें विशेष रूप से विश्वविद्यालय प्रणाली में विभिन्न क्षेत्रों के कामकाज और सामान्य रूप से सरकारी सेट-अप में आधिकारिक कामकाज को समझने में मदद करेगी। इस योजना के माध्यम से, छात्र अपने विश्वविद्यालय में योगदान करने और नीतियों की बेहतर समझ विकसित करने और विश्वविद्यालय के राजदूत बनने में सक्षम होंगे। प्रशिक्षुओं को न केवल प्रोत्साहन के रूप में मानदेय प्रदान किया जाता है बल्कि उन्हें सौंपे गए दायित्वों के निर्वहन में उनके दैनिक खर्चों को पूरा करने के लिए भी मानदेय प्रदान किया जाता है। योजना के पहले चक्र में, 3424 आवेदन प्राप्त हुए थे, जिनमें से 713 इंटर्न का चयन किया गया था और अब विश्वविद्यालय की 27 शाखाओं/अनुभागों में कार्यरत हैं, इस प्रकार इन विद्यार्थियों को बहुत आवश्यक एक्सपोजर और अनुभव प्रदान कर रहे हैं।

समर्थ: ई-शासन के माध्यम से उच्च शिक्षा को बदलना

'समर्थ' परियोजना की शुरुआत शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2019 में डिजिटल ढांचे के माध्यम से विद्यार्थियों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के लिए योजना, प्रबंधन, वितरण और सेवाओं की निगरानी के लिए विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) को सक्षम बनाने के उद्देश्य से की गई थी। समर्थ के माध्यम से, विश्वविद्यालय 2019-20 से ऑनलाइन प्रवेश और भर्ती प्रक्रिया आयोजित करने में सक्षम है। दिल्ली विश्वविद्यालय के 3 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने 2021 और 2022 में दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में अपनी सुरक्षित डिजिटल डिग्री प्राप्त की। कोविड-19 महामारी के दौरान, समर्थ परियोजना ने दिल्ली विश्वविद्यालय को ऑनलाइन ओपन बुक परीक्षा (ओबीई) और ऑनलाइन मूल्यांकन आयोजित करने में सक्षम बनाया। 10 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने 2020 से 2022 तक आयोजित ऑनलाइन ओपन बुक परीक्षा दी।

मुक्त शिक्षा कैंपस: जनता के लिए शिक्षा

मुक्त शिक्षा विद्यालय कैंपस (सीओएल) और दूरस्थ और सतत शिक्षा विभाग (डीडीसीई) जिसे पहले पत्राचार पाठ्यक्रम और सतत शिक्षा स्कूल के रूप में जाना जाता था, 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय के तहत भारत में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। यह भारत का पहला संस्थान है जो दूरस्थ शिक्षा मोड की सुविधा प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को उपयुक्त कौशल से लैस करने पर जोर देने के साथ आजीवन अध्ययन के अवसर प्रदान करता है जो उन्हें एक विविध समुदाय में सेवा और नेतृत्व के लिए तैयार करेगा। सीओएल शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति में दृढ़ता से विश्वास करता है और पारंपरिक मूल्यों के साथ आधुनिक शिक्षा और प्रौद्योगिकी को मिश्रित करके विकसित भारत के निर्माण के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने का प्रयास करता है।

विद्यार्थियों के लिए वित्तीय सहायता योजना (एफएसएस)

दिल्ली विश्वविद्यालय विविधता का समारोह आयोजित करता है और समग्र और समावेशी शिक्षा के लिए गहराई से प्रतिबद्ध है। भारत के संविधान में यथा अधिदेशित सकारात्मक कार्रवाइयों की आवश्यकता को समझते हुए और वित्तीय रूप से कमजोर विद्यार्थियों को उत्कृष्टता के साथ समानता, पहुंच और गुणवत्ता के लाभों को अक्षरश विस्तारित करने के लिए, इसने सरकार के आदर्श वाक्य "सबका साथ सबका विकास" की भावना में शुल्क माफी के माध्यम से ऐसे विद्यार्थियों के लिए एक वित्तीय सहायता योजना शुरू की है। शुल्क माफी में परीक्षा शुल्क और छात्रावास शुल्क को छोड़कर विद्यार्थियों द्वारा भुगतान किए गए शुल्क के सभी घटक शामिल हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय का शताब्दी समारोह: एक सिंहावलोकन

वर्ष 2022 दिल्ली विश्वविद्यालय के लिए शताब्दी वर्ष था। वर्ष 1922 में स्थापित, विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपस्थिति के एक सौ गौरवशाली वर्ष पूरे किए। वर्ष 2022-23 को विश्वविद्यालय के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष के रूप में मनाया गया, और वर्ष भर स्मारक कार्यक्रमों के आयोजन से इस अवसर के ऐतिहासिक महत्व दिया गया। हमारे गतिशील और प्रेरक नायक, हमारे माननीय कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह के शब्दों में, महत्वपूर्ण अवसर की मांग है कि हम "ऐसे कार्यक्रमों और रचनात्मक कार्यक्रमों की परिकल्पना करें जो हम सभी के लिए पर्याप्त यादगार क्षण पैदा करें ताकि हम केवल शताब्दी वर्ष के दौरान ही नहीं, बल्कि अगली शताब्दी के लिए भी खुश हो सकें"। यह हमें "हमारी संस्थागत सफलता, उपलब्धियों और गौरव को प्रतिबिंबित करने और व्यापक सार्वजनिक भलाई प्राप्त करने और राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक रूप से सहायक बनने के लिए अधिक उत्साह के साथ काम करने का अवसर भी प्रदान करता है"। शताब्दी समारोह वास्तव में "निष्ठा धृति सत्यम" (समर्पण, दृढ़ता और सत्य) के 100 वर्षों का उत्सव है, जो न केवल विश्वविद्यालय की सच्ची भावना का प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि इसके लोगो में अंकित है, लेकिन यह इस प्रतिष्ठित संस्थान की अथक और कालातीत विरासत को भी दर्शाता है।

प्रेस सम्मेलन: शताब्दी समारोह का उद्घाटन उठाने वाला और शताब्दी लोगो का अनावरण

शताब्दी समारोह के शुभारंभ की घोषणा एक विशेष संवाददाता सम्मेलन में की गई थी, जिसने विश्वविद्यालय के प्रस्तावित वर्ष भर के समारोहों के लिए अग्रदूत और पर्दा उठाने वाले के रूप में कार्य किया। मीडिया द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया और 3 मार्च 2022 को वाइस-रीगल लॉज के ऐतिहासिक कन्वेंशन हॉल में आयोजित, माननीय कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने 1 मई 2022 से साल भर चलने वाले उत्सव की योजनाओं को साझा किया और शिक्षाविदों के डोमेन को शामिल करने वाले स्मारक कार्यक्रमों के बारे में भी बताया; अनुसंधान और नवाचार; संवर्धन; खेल और शारीरिक कौशल; सामुदायिक आउटरीच; सतत् प्रयास; पूर्व विद्यार्थियों की सगाई, उनके बीच आगामी वर्ष के दौरान की जाएगी। प्रो. सिंह ने संस्थान की जीवन रेखा में इस ऐतिहासिक वाटरशेड की पूर्व संध्या पर शुरू की जाने वाली दीर्घकालिक योजनाओं पर भी प्रकाश डाला। इस दिन शताब्दी लोगो का औपचारिक रूप से अनावरण किया गया था।

शताब्दी समारोह की घोषणा के लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस

शताब्दी समारोह का औपचारिक उद्घाटन

विश्वविद्यालय के वर्ष भर चलने वाले शताब्दी समारोह का ऐतिहासिक उद्घाटन 1 मई 2022 को श्री वेंकैया नायडू, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और श्री धर्मेंद्र प्रधान, माननीय शिक्षा मंत्री की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के बहुउद्देशीय हॉल, खेल परिसर में मनाया गया, जिसमें विश्वविद्यालय समुदाय के हर वर्ग ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया।

विश्व के उच्च शिक्षा क्षितिज में विश्वविद्यालय को उसके गौरवशाली शताब्दी पुराने अस्तित्व के लिए बधाई देते हुए, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति ने एनईपी-2020 के सकारात्मक परिणामों और दीर्घकाल में राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा की बेहतरी के लिए इसकी भविष्य की संभावनाओं को रेखांकित किया और साथ ही, इस दिशा में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

शताब्दी समारोह का उद्घाटन समारोह

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय विचारधारा का पुनरावलोकन: 'स्वराज' से 'न्यू इंडिया' तक

उद्घाटन समारोह 19 मई 2022 को माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह (मुख्य अतिथि) और श्री धर्मेंद्र प्रधान, माननीय केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री (विशेष अतिथि) की सम्मानित उपस्थिति में *भारतीय विचारधारा का पुनरावलोकन: 'स्वराज' से 'न्यू इंडिया'* शीर्षक से तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस बात पर जोर दिया कि दिल्ली विश्वविद्यालय एक सतत वैश्विक विश्व को किस प्रकार आकार दे सकता है। श्री अमित शाह ने चर्चा के लिए गतिशील मंच को बधाई दी और विचार-विमर्श और नवाचारों के लिए एक रचनात्मक और सार्थक स्थान प्रदान किया। माननीय कुलपति, प्रो. योगेश सिंह ने अपनी डिग्री पूरी नहीं कर पाने वाले पूर्व विद्यार्थियों को परीक्षाओं में दोबारा बैठने की अनुमति देकर एक बार विशेष शताब्दी-अवसर देने की घोषणा की। गुजराती, उड़िया, बंगाली और उर्दू भाषाओं में एनईपी-2020 पर आधारित स्नातक पाठ्यचर्या संरचना (यूजीसीएफ) 2022 के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अद्यतन अधिनियमों, विधियों और अध्यादेशों का अनावरण किया गया। समापन समारोह के लिए श्री आरिफ मोहम्मद खान, केरल के माननीय राज्यपाल (मुख्य अतिथि और डॉ. विनय सहस्रबुद्धे (विशेष अतिथि), अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) ने अपनी सौम्य उपस्थिति के साथ इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

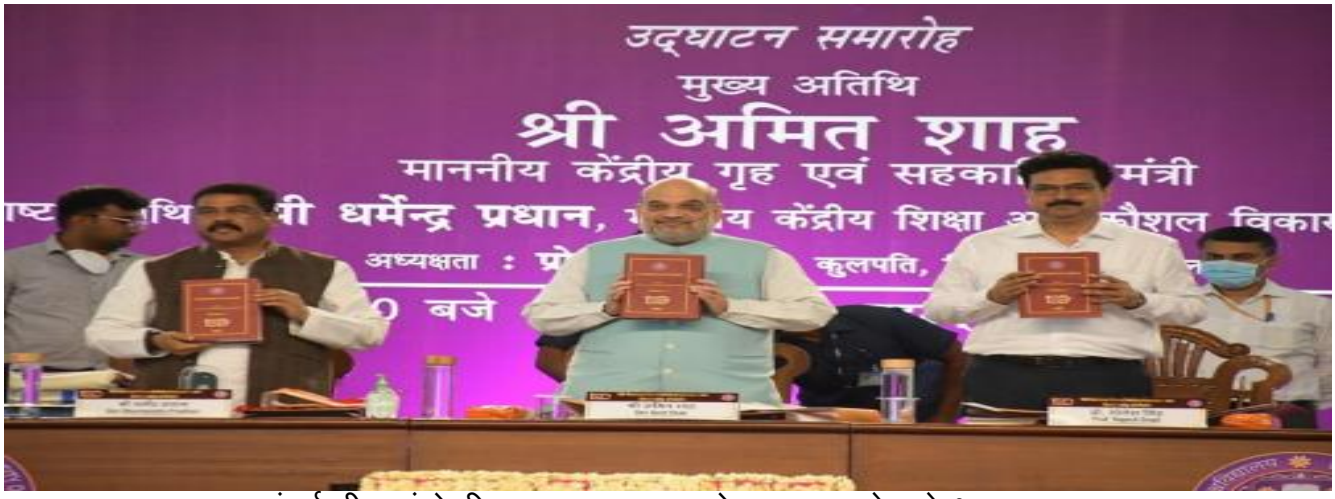

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह: स्वराज से नये भारत तक

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

विश्वविद्यालय द्वारा 22 जून 2022 को 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें जहां पतंजलि आयुर्वेद योगपीठ के संस्थापक योग ऋषि स्वामी रामदेव मुख्य अतिथि थे। केंद्रीय संस्कृति और संसदीय कार्य मंत्री, श्री अर्जुन राम मेघवाल ने विशेष अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। माननीय मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को क्यूरेट करने में वर्षों से भारत द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया और बताया कि कैसे संयुक्त राष्ट्र के 170 से अधिक देशों ने इस दिन को बहुत गतिशीलता और उत्साह के साथ मनाते हुए माननीय प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी प्रस्ताव का समर्थन किया। स्वामी बाबा रामदेव ने आत्म-अनुशासन, आत्म-प्रेरणा, आत्म-उपचार, सह-अस्तित्व, सद्भाव, आनंद और कल्याण को स्थापित करने में योग के महत्व को दोहराया। उन्होंने योग के तीन पहलुओं पर जोर दिया-योग का ज्ञान *(योग का भोजन),* योग का अभ्यास *(योग का अभ्यास)* और योग में कार्य *(योग का आचरण)।* विभिन्न *प्राणायाम* और *आसनों* का प्रदर्शन उत्साहजनक योग सत्र में लगे उत्साही प्रतिभागियों के रूप में देखने के लिए सबसे उत्तेजक और संतुष्टिदायक दृश्य था। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की।

8वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह

Modi@20 पर चर्चा: ड्रीम्स मीट डिलीवरी

शताब्दी समारोह में व्यापक रूप से प्रशंसित पुस्तक *Modi@20: ड्रीम्स मीट डिलीवरी* में प्रस्तुत दृष्टिकोणों पर चर्चा में दो कार्यक्रम शामिल थे। पहली विशेष चर्चा 5 जुलाई 2022 को वाइस-रीगल लॉज के कन्वेंशन हॉल में की गई थी, जिसमें डॉ. एस. जयशंकर, माननीय केंद्रीय विदेश मंत्री मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डॉ. एस. जयशंकर ने पुस्तक पर एक अत्याधिक आकर्षक प्रतिबिंब प्रस्तुत किया और जो इसमें कैप्चर और प्रतीक है। उन्होंने विशेष रूप से राष्ट्रवाद की गहरी भावना पर प्रकाश डाला जिसने माननीय प्रधानमंत्री के शासन की नींव बनाई; लोक कल्याण के लिए उनकी मजबूत प्रतिबद्धता; और दुनिया भर में अपने वार्ताकारों के साथ भारत की समृद्ध परंपराओं और संस्कृति को साझा करने में उनकी गहन रुचि बनाई।

Modi@20: ड्रीम्स मीट डिलीवरी' पुस्तक पर दूसरी विशेष चर्चा का आयोजन दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज में किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री उदय माहूरकर, माननीय मुख्य सूचना आयुक्त (सीआईसी) थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की। श्री उदय माहुरकर, जो पिछले बीस वर्षों की राजनीतिक और प्रशासनिक यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री के निकट सहयोगी रहे हैं और उन्होंने शासन के मॉडल पर दो पुस्तकें लिखी हैं, ने पुस्तक की सामग्री का एक व्यावहारिक चित्रण प्रस्तुत किया। उन्होंने उस भूमिका पर प्रकाश डाला जो माननीय प्रधानमंत्री की दृष्टि, नीतियां और कार्यक्रम देश को वैश्विक नेता बनने की दिशा में ले जा रहे हैं। माननीय प्रो. योगेश सिंह ने प्रधानमंत्री की करिश्माई नेतृत्व शैली और प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से सपनों को वास्तविकता में बदलने की उनकी दुर्लभ क्षमता पर प्रकाश डाला।

मोदी@20: ड्रीम्स मीट डिलीवरी पर चर्चा के दौरान

तिरंगा रैली

'आजादी का अमृत महोत्सव' के *'हर घर तिरंगा अभियान'* के तहत विश्वविद्यालय द्वारा 10 अगस्त 2022 को चार किलोमीटर लंबी *तिरंगा यात्रा* का आयोजन किया गया जिसमें श्री. प्रख्यात सामाजिक चिंतक प्रफुल्ल अकांत विशिष्ट अतिथि थे। इसका नेतृत्व प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने किया। प्रो. योगेश सिंह ने देशभक्ति, राष्ट्रीय गौरव और अपनेपन की भावना पर जोर दिया जो राष्ट्रीय *तिरंगा* देश के नागरिकों के बीच पैदा करता है। उन्होंने बच्चों के बीच राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देने में परिवार की अपेक्षित भूमिका को भी रेखांकित किया।

विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों और विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों सहित 5,000 से अधिक उत्साही प्रतिभागियों ने *तिरंगा यात्रा* में भाग लिया, तिरंगा, बैनर और पोस्टर पकड़े हुए और कई विभागों, कॉलेजों और छात्रावासों का प्रतिनिधित्व किया। विश्वविद्यालय के लगभग सभी कॉलेजों ने भी बहुत धूमधाम से अपनी *तिरंगा यात्राएं* निकालीं।

माननीय कुलपति प्रोफेसर योगेश सिंह ने तिरंगा रैली का नेतृत्व किया

शताब्दी वृक्षारोपण

विश्वविद्यालय ने 10 अगस्त 2022 को *शताब्दी वृक्षारोपण* के तहत अपना शताब्दी वृक्षारोपण अभियान शुरू किया। कार्यक्रम का आयोजन उद्यान समिति और शताब्दी समारोह समिति के सक्रिय सहयोग से किया गया था, इस पहल का नेतृत्व माननीय कुलपति, प्रो. योगेश सिंह ने विश्वविद्यालय के आर्बोरेटम गार्डन में *कल्पवृक्ष* का पौधा लगाते हुए यह बात कही। प्रो. सिंह ने विश्वविद्यालय के दो परिसरों में 100 पौधरोपण के महत्व को रेखांकित किया। इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि पौधे न केवल ऐतिहासिक शताब्दी समारोह का प्रतीक होंगे, बल्कि जैसे-जैसे वे हरे-भरे और सुंदर पेड़ों में विकसित होंगे, वे इस हॉलमार्क वर्ष की सबसे अनूठी स्मृति का भी प्रतिनिधित्व करेंगे। समवर्ती रूप से, अर्जुन, बेलपत्र, कदम, हरसिंगार, पिलखान, सीता अशोक, आंवला और चंदन जैसे पेड़ पौधों की कई स्वदेशी किस्मों को विश्वविद्यालय के सभी प्रतिष्ठित पदाधिकारियों द्वारा आर्बोरेटम और उनके संबंधित परिसरों के लॉन में लगाया गया था।

शताब्दी वृक्षारोपण

(कवि सम्मेलन-ज़रा याद करो कुर्बानी)

विश्वविद्यालय द्वारा 16 अगस्त 2022 को वाइस-रीगल लॉज के कन्वेंशन हॉल में भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की पवित्र स्मृति में *'ज़रा याद करो'* शीर्षक से एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। श्री जगदीश मित्तल, राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अध्यक्ष को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की। अपनी काव्य रचनाओं के गायन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाले बहुप्रशंसित कवि थे-डॉ. हरिओम पवार, श्री सुदीप भोला, डॉ. अशोक बत्रा, श्री पी. के. आजाद, श्री गजेन्द्र सोलंकी, डॉ. रुचि चतुर्वेदी, श्रीमती कल्पना शुक्ला और श्री यश कंसल थे।

श्री जगदीश मित्तल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई गुमनाम नायकों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला, साथ ही देश के युवाओं के लिए एकजुट और स्वतंत्र भारत के लिए अपने दृष्टिकोण को बनाए रखने और समेकित करने की अनिवार्यता पर भी प्रकाश डाला। प्रो. योगेश सिंह ने चरित्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति प्रेम के मूल्य को भारत के गौरवशाली भविष्य के लिए आवश्यक सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं के रूप में बरकरार रखा। कवि सम्मेलन में श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से लोगों का स्वागत किया और सदस्यों में राष्ट्रवाद की नई भावना के साथ जोश भर दिया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के वाइस रीगल लॉज में कवि सम्मेलन आयोजित हुआ

पुस्तक पर पैनल चर्चा रिकैलिब्रेट: चेंजिंग पैराडिज्म्स

दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स ने इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ के सहयोग से 13 सितंबर 2022 को प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा द्वारा चुनिंदा अंतर्दृष्टि के साथ, श्री एन.के. सिंह, अध्यक्ष XV वित्त आयोग और अध्यक्ष, आर्थिक विकास संस्थान द्वारा लिखित पुस्तक *रिकैलिब्रेट: चेंजिंग पैराडिज्म्स* नामक पुस्तक पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती निर्मला सीतारमण, माननीय वित्त मंत्री, भारत सरकार और प्रधानमंत्री के सलाहकार श्री अमित खरे विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की और डॉ राकेश मोहन, अध्यक्ष और प्रतिष्ठित फैलो, सेंटर फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक प्रोग्रेस ने संचालन किया। इस कार्यक्रम में भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर डॉ. उर्जित पटेल जैसे अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. इला पटनायक, मुख्य अर्थशास्त्री, आदित्य बिड़ला समूह और नीति आयोग के सदस्य, श्री रमेश चंद और 15वें वित्त आयोग के अध्यक्ष और आर्थिक विकास संस्थान के अध्यक्ष श्री एन. के. सिंह भी उपस्थित थे।

Book Release and Discussion at Delhi School of Economics, September 13, 2022
(L to R) Prof. Pami Dua, Prof. Ramesh Chand, Shri Amit Khare, Prof. Yogesh Singh, Smt. Nirmala Sitharaman, Shri N. K. Singh, Dr. P. K. Mishra, Shri Rakesh Mohan, Dr. Urjit Patel & Dr. Ila Pattnaik

रीकैलिब्रेट चेंजिंग पैराडाइम्स पुस्तक से संबंधित पैनल चर्चा

कानूनी प्रणाली और शिक्षा के भारतीयकरण पर सम्मेलन

विधि संकाय ने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (एनएएलएसए), भारत के सर्वोच्च न्यायालय के सहयोग से भारत के वर्तमान कानूनी ढांचे में भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा को एकीकृत करने के नए तरीकों का अन्वेषण, जांच और कल्पना करने के उद्देश्य से 29-30 सितंबर 2022 को 'विधि प्रणाली और शिक्षा का भारतीयकरण' शीर्षक से दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री किरेन रिजिजू, माननीय केंद्रीय विधि और न्याय मंत्री, भारत सरकार और न्यायमूर्ति श्री संजय किशन कौल, माननीय न्यायाधीश, उच्चतम न्यायालय सम्मानित अतिथि थे। इस दिन के विशेष अतिथि भारत के सॉलिसिटर जनरल श्री तुषार मेहता थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की।

श्री किरेन रिजिजू ने न्यायिक प्रणाली के सामने आने वाली विविध चुनौतियों और सभी के लिए न्याय तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सुधारों की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल ने वैदिक युग से ही एक मजबूत कानूनी प्रणाली स्थापित करने में भारत की समृद्ध विरासत को दोहराया, और समकालीन कानूनी प्रणालियों के भारतीयकरण की आसन्न आवश्यकता को दोहराया। श्री तुषार मेहता ने प्राचीन काल से एक व्यवस्थित, संरचित और व्यवस्थित कानूनी प्रणाली ढांचा विकसित करने में भारतीय सभ्यता की योग्यता को दोहराया। प्रो. योगेश सिंह ने जोर देकर कहा कि इस कॉन्क्लेव से निकलने वाले विचार-विमर्श से भारतीय विश्वविद्यालयों को कानूनी ज्ञान और शिक्षा की एक भारतीयकृत प्रणाली को लागू करने के लिए एक ढांचा तैयार करने में मदद मिल सकती है।

कानूनी व्यवस्था एवं शिक्षा के भारतीयकरण पर दो दिवसीय सम्मेलन

ऐतिहासिक नाटक: चाणक्य

उत्सव की भावना को जारी रखते हुए, संस्कृति परिषद द्वारा 30 नवंबर 2022 को नॉर्थ कैंपस के रग्बी स्टेडियम, विश्वविद्यालय क्रीड़ा स्थल में एक ऐतिहासिक नाटक 'चाणक्य' का मंचन किया गया। यह नाटक प्रख्यात अभिनेता और पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित मनोज जोशी द्वारा निर्देशित है और धर्मजम टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने समकालीन समय में नाटक की प्रासंगिकता पर विचार व्यक्त किए।

चाणक्य के राजनीतिक जीवन और रणनीतियों को दर्शाते हुए, नाटक त्याग किए गए राजनीतिक रणनीतिकार की विचारधारा को पकड़ने का एक मामूली प्रयास था। इसने समाज और उसके नेताओं के प्रति आत्मनिरीक्षण का अवसर प्रस्तुत किया, और इस धारणा की पुष्टि करने के लिए कि राष्ट्र सर्वोच्च है, और राष्ट्र के लिए निस्वार्थ प्रेम ही एकमात्र पुण्य स्वार्थ है।

चाणक्य- संस्कृति परिषद द्वारा मंचित ऐतिहासिक नाटक

(शाम-ए-ग़ज़ल: एक साँझ संगीत के नाम)

संगीत और ललित कला विभाग ने 17 अक्तूबर 2022 को विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र प्रसिद्ध गजल गायक श्री कुमार विशु और उनकी बेटी स्वर्णी की गरिमामयी उपस्थिति के साथ गजलों की एक शाम का आयोजन करके शताब्दी की भावना का जश्न मनाया। दोनों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध करने के लिए भावपूर्ण गजलें पेश कीं।

संगीत एवं ललित कला विभाग द्वारा आयोजित शाम-ए-ग़ज़ल

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस

अहिंसा की भावना को मजबूत करने और उसमें व्याप्त होने के लिए, 27 अक्तूबर 2022 को *'गाँधी और आज का भारत'* विषय पर एक विशेष व्याख्यान के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया गया। इस अवसर के मुख्य अतिथि महामहिम लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) और उत्तराखंड के राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह थे, जबकि पद्म भूषण, डॉ. बिंदेश्वर पाठक, संस्थापक, सुलभ इंटरनेशनल-सोशल सर्विस ऑर्गेनाइजेशन को कार्यक्रम के लिए विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति, प्रो. योगेश सिंह ने की।
मुख्य अतिथि, महामहिम लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) श्री गुरमीत सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत को एकजुट करने में महात्मा गांधी द्वारा निभाई गई असाधारण भूमिका और उनकी विचारधारा के वैश्विक प्रभाव पर जोर दिया। सुलभ इंटरनेशनल की रचना में, उन्होंने श्रम की गरिमा और सभी व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा को बनाए रखने में गांधी के विश्वास को व्यवहार में लाने के लिए डॉ. बिंदेश्वर पाठक की विशेष प्रशंसा की। एक मूल संदेश के रूप में, डॉ. बिंदेश्वर पाठक ने समकालीन भारत में गांधी के अहिंसा के दर्शन की अभिन्न प्रासंगिकता को रेखांकित किया। प्रो. योगेश सिंह ने कहा कि एनईपी-2020 इस दिशा में एक कदम है और यह महात्मा गांधी की शैक्षिक विचारधारा को पूरी भावना से कायम रखता है।

अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया गया

मीडिया और जवाबदेही पर संगोष्ठी

प्रसिद्ध पत्रकार और प्रेस की स्वतंत्रता के प्रस्तावक स्वर्गीय श्री के.आर. मलकानी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए, 9 नवंबर 2022 को 'मीडिया और जवाबदेही' पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई थी, जिसमें विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के सदस्य श्री राजकुमार भाटिया मुख्य अतिथि थे और डॉ. महेश चंद्र शर्मा, अध्यक्ष, आर एंड डी फाउंडेशन फॉर इंटीग्रल ह्यूमनिज्म सम्मानित अतिथि थे। प्रसार भारती बोर्ड के सदस्य श्री अशोक कुमार टंडन मुख्य वक्ता थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की।

श्री राजकुमार भाटिया ने श्री मलकानी के अनुकरणीय जीवन और कार्यों को स्वीकार किया और पत्रकारिता सहित लोकतंत्र के प्रत्येक संस्थान में जवाबदेही की अनिवार्यता पर जोर दिया। डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने पत्रकारिता के क्षेत्र में स्वर्गीय श्री के.आर. मलकानी के जीवन और योगदान के बारे में सभा को जानकारी दी। उन्होंने श्रोताओं को अपने क्रांतिकारी विचारों, बेजोड़ कार्य नैतिकता और लोकतंत्र के विचार और प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति समर्पण के बारे में भी बताया। अपने मुख्य भाषण में श्री अशोक कुमार टंडन ने संविधान सभा की विभिन्न बहसों और न्यायिक फैसलों पर प्रकाश डाला, जो भारतीय मीडिया की वर्तमान प्रकृति और चरित्र की विशेषता है। प्रो. योगेश सिंह ने पत्रकारिता के विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे अपने पेशेवर प्रयासों में हमेशा सच्चाई और धार्मिकता के साथ तालमेल बिठाएं।

मीडिया और जवाबदेही पर संगोष्ठी

नए भारत के निर्माण के लिए बुनियादी ढांचे, सूचना और नवाचार पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन समारोह

समकालीन प्रासंगिकता के कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने के विषयगत इरादे से, शताब्दी समारोह समिति ने 10 नवंबर 2022 को नए भारत के निर्माण के लिए बुनियादी ढांचे, सूचना और नवाचार पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए उद्घाटन समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम श्री जगदीप धनखड़, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और श्री विजय गोयल, उपाध्यक्ष, गांधी स्मृति और दर्शन समिति विशिष्ट अतिथि थे।

श्री जगदीप धनखड़ ने विश्वविद्यालय में आने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने देश द्वारा दर्ज की जा रही घातीय वृद्धि और देश के भाग्य को आकार देने और भविष्य के विकास पथ को चार्ट करने में युवाओं की भूमिका को स्पष्ट किया। राष्ट्रीय हित को सर्वोच्च और गैर-परक्राम्य बताते हुए, उन्होंने विद्यार्थियों से संविधान में निर्धारित मौलिक कर्तव्यों का पालन करने और राष्ट्र की सेवा करने का आग्रह किया। विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र श्री विजय गोयल ने बुनियादी ढांचे, सूचना और नवाचार के क्षेत्र में देश की महत्वपूर्ण उपलब्धियों को याद किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. विकास गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन में राष्ट्र निर्माण में दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा निभाई जा रही अग्रणी भूमिका को दोहराया और कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

नए भारत के निर्माण के लिए बुनियादी ढांचे, सूचना और नवाचार पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

शताब्दी दौड़

18 नवंबर 2022 को विश्वविद्यालय क्रीड़ा स्थल में आदर्श वाक्य 'रन फॉर डीयू' के साथ एक शताब्दी दौड़ का आयोजन किया गया था। 4.3 किलोमीटर की दौड़ विश्वविद्यालय क्रीड़ा स्थल से शुरू होकर नॉर्थ कैंपस में रास्ता तय किया। 50 दिव्यांग छात्र भी उनके लिए बनाए गए एक विशेष रन सर्किट के माध्यम से शताब्दी दौड़ में शामिल हुए।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनजातीय मामलों के माननीय केंद्रीय कैबिनेट मंत्री श्री अर्जुन मुंडा थे और सम्मानित अतिथि श्री विवेक ठाकुर, माननीय अध्यक्ष, शिक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति थे। इस कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि युवा आइकन और ओलंपियन, ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता श्री नीरज चोपड़ा थे। प्रो. श्री प्रकाश सिंह, निदेशक, साउथ कैम्पस ने दौड़ को कवर किया और प्रो. कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की।

श्री अर्जुन मुंडा ने विद्यार्थियों को फिट रहने और माननीय प्रधानमंत्री मोदी के 'फिट इंडिया' के दृष्टिकोण में योगदान करने के लिए प्रेरित किया। श्री विवेक ठाकुर ने भारतीय इतिहास में विश्वविद्यालय द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री नीरज चोपड़ा ने कई प्रसिद्ध एथलीटों और खिलाड़ियों के पोषण में विश्वविद्यालय की भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से फिटनेस को एक आदत बनाने और शारीरिक व्यायाम को अपने दैनिक प्रेषण के अभिन्न अंग के रूप में विकसित करने का आग्रह किया। प्रो. योगेश सिंह ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'फिट इंडिया' के दृष्टिकोण और फिटनेस के महत्व पर प्रकाश डाला।

शताब्दी दौड़ के दौरान श्री नीरज चोपड़ा

स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों की भूमिका

स्वतंत्रता के संघर्ष में आदिवासी रोल मॉडल के योगदान की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने के लिए, 24 नवंबर 2022 को 'स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय नायकों की भूमिका' पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मुख्य अतिथि श्री हर्ष चौहान, माननीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (एनसीएसटी), विशेष अतिथि, श्री अनंत नायक, सदस्य, एनसीएसटी, श्री सत्येंद्र सिंह, उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम, श्रीमती अलका तिवारी, माननीय सचिव, एनसीएसटी सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

श्री हर्ष चौहान ने फिल्मों और मीडिया में आदिवासी संस्कृति के गलत चित्रण पर प्रकाश डाला और आदिवासी समूहों की सच्ची संस्कृति, रीति-रिवाजों, परंपराओं और जीवन शैली के इर्द-गिर्द ग्रंथों और सामग्री के पुनर्निर्माण की तत्काल आवश्यकता व्यक्त की। उन्होंने इस दिशा में उठाए जा रहे कदमों की सराहना की, विशेष रूप से आदिवासी इतिहास को सही ठहराते हुए लोकप्रिय सिनेमा प्रस्तुतियों के हाल के निर्माण की सराहना की। श्री अनंत नायक ने जनजातियों और उनके रीति-रिवाजों से सम्बन्धित ग्रंथों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता व्यक्त की और विद्यार्थियों को जनजातीय नायकों के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित किया। श्री सत्येंद्र सिंह ने रानी दुर्गावती, बिरसा मुंडा, तात्या भील, कोमाराम भीम सहित कई अन्य आदिवासी नायकों की वीरतापूर्ण कहानियों को साझा किया। श्रीमती अलका तिवारी ने श्रोताओं को इस *संवाद* पहल के बारे में अवगत कराया, जिसे आयोग द्वारा आदिवासी मामलों, जनजातीय स्वास्थ्य, शिक्षा, जनजातीय अनुसंधान और वित्तीय समावेशन पर विचार-विमर्श करने के लिए स्थापित किया गया है। प्रो. योगेश सिंह ने पाठ्यक्रम में आदिवासी संस्कृति और शिक्षा से सम्बन्धित पर ग्रंथों को शामिल करने और विश्वविद्यालय में आदिवासी अध्ययन के लिए एक विशेष केंद्र के गठन की जोरदार सिफारिश की।

"स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों की भूमिका" विषय पर कार्यक्रम

भारत के निर्माण में महिलाओं के पदचिह्न: एनसीडब्ल्यूईबी

शताब्दी समारोह के तत्वावधान में, नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड (एनसीडब्ल्यूईबी) ने अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (एबीआरएसएम) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (प्रायोजक) के सहयोग से 'भारत के निर्माण में महिलाओं के पदचिह्न' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह 25 नवंबर 2022 को आयोजित किया गया था।

मुख्य अतिथि श्री जी. किशन रेड्डी, माननीय पर्यटन, संस्कृति और भारत सरकार के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विकास मंत्री, ने विविध महिला-केंद्रित नीतियों पर बात की, जिन्होंने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्ज्वला योजना और ट्रिपल तालक की घोषणा को 'असंवैधानिक' घोषित करने जैसी महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद की है। सम्मानित अतिथि प्रो. जे.पी. सिंघल ने स्वीकार किया कि भारत का सार अनादि काल से महिलाओं की भूमिका और उनके अपरिहार्य योगदान का परिणाम था। प्रो. योगेश सिंह ने महिलाओं के सशक्तीकरण और उनके खिलाफ भेदभाव का मुकाबला करने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में शिक्षा की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया।

"भारत के निर्माण में महिलाओं के पदचिन्ह" विषय पर दो दिवसीय सेमिनार

शाम-ई-मौसीकी: एक संगीतमय मनोरंजन कार्यक्रम

नए साल का जश्न मनाने के लिए एक संगीतमय सांध्य *'शाम-ए-मोसिकी: ए म्यूजिकल एक्स्ट्रावगांजा'* का आयोजन 5 जनवरी 2023 को रामानुजन कॉलेज के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय द्वारा किया गया था। संगीत शो उज्बेकिस्तान के प्रशंसित हवास म्यूजिकल ग्रुप द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसमें संगीतकारों का एक परिवार शामिल है जिन्होंने भारतीय संगीत में प्रशिक्षण लिया है और जो कई भारतीय भाषाओं में गाते हैं।

श्री अज़मजोन मंसुरोव, प्रथम सचिव, उज्बेकिस्तान गणराज्य के दूतावास और हवास म्यूजिकल ग्रुप के संस्थापक और शो के निदेशक श्री रुस्तम को सम्मानित मेहमानों के रूप में आमंत्रित किया गया था।

शाम की शुरुआत हवास म्यूजिकल ग्रुप द्वारा भारत के राष्ट्रगान के सुंदर पाठ के साथ हुई, जिसके बाद उज्बेकिस्तान का राष्ट्रगान गाया गया। संगीतमय असाधारण में लोकप्रिय भारतीय भजन *वैष्णव जन तो तेने कहिए* शामिल थे, जिसने दर्शकों के दिलों को गहराई से छुआ। कई सदाबहार और मधुर हिंदी और बॉलीवुड गीत, संगीत पुराने शास्त्रीय से लेकर समकालीन लोकप्रिय गीतों तक ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और उन्हें और अधिक गीतों के लिए उत्साहित किया। गायन और नृत्य ने उस उत्साह को बढाया। *वंदे मातरम* की भावपूर्ण प्रस्तुति से प्रदर्शन का समापन हुआ।

एक संगीतमय शाम शाम-ए-मोसिकी: एक संगीतमय मनोरंजन कार्यक्रम

वैश्विक परिदृश्य और हिंदी की संप्रेषणीयता (विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर व्याख्यान)

विश्वविद्यालय की 'भारतीय भाषा समिति' ने 10 जनवरी 2023 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर व्याख्यान का आयोजन किया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने हिंदी शब्दावली में अन्य भाषाओं के तकनीकी शब्दों को शामिल करने की आवश्यकता और आमतौर पर बोली जाने वाली भाषा में पाठ्यक्रम बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और हिंदी में अन्य भाषाओं की फिल्मों के अनुवाद की वर्तमान प्रवृत्ति या विभिन्न ओटीटी प्लेटफार्मों पर 30% हिंदी सामग्री के बारे में चर्चा की।

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर व्याख्यान

भारत @ 2047: वाणिज्य और व्यवसाय की भूमिका पर विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला: वाणिज्य और व्यवसाय संकाय द्वारा आयोजित

वाइस रीगल लॉज के कन्वेंशन हॉल में शताब्दी समारोह के एक भाग के रूप में विश्वविद्यालय में वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और व्यवसाय संकाय द्वारा एक विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया था। व्याख्यान का विषय *'Bharat@2047: वाणिज्य और व्यवसाय की भूमिका'* था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य और मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति ने की।

श्री इंद्रेश कुमार ने शिक्षा और संस्कृति पर स्वामी विवेकानंद के चिंतन पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि 'सुसंस्कृत' होना शिक्षा का एक प्रमुख हिस्सा है। उन्होंने धार्मिक सद्भाव के महत्व को भी दोहराया और विद्यार्थियों को तेजी से और लगातार आर्थिक विकास के लिए नए सूत्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रो. योगेश सिंह ने देश के सामने मौजूद अपार संभावनाओं को रेखांकित किया क्योंकि यह वर्ष 2047 में अपने स्वतंत्रता युग की पहली शताब्दी प्राप्त करने की दिशा में प्रयास कर रहा है। उन्होंने देश को विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए उसकी सकल राष्ट्रीय आय बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने डिजिटलीकरण के क्षेत्र में भारत की स्वीकृति और योग्य प्रदर्शन की सराहना की।

भारत@2047 पर विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला: वाणिज्य और व्यवसाय संकाय द्वारा वाणिज्य और व्यवसाय की भूमिका

"नई भूराजनीति और भारत की जी20 अध्यक्षता: आर्थिक निहितार्थ" शीर्षक से विशिष्ट व्याख्यान

दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (डीएसई) ने "भारत की जी20 प्रेसीडेंसी" विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 20 फरवरी 2023 को दिल्ली स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी एंड गवर्नेंस (डीएसपीपीजी) और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (डीएसई) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। श्री अमिताभ कांत, शेरपा जी20, भारत सरकार, मुख्य अतिथि थे और उन्होंने मुख्य भाषण दिया। Prof. Jaffrey Sachs, कोलंबिया विश्वविद्यालय, ने "द न्यू जियोपॉलिटिक्स एंड इंडियाज जी20 प्रेसीडेंसी: इकोनॉमिक इम्प्लीकेशंस" विषय पर व्याख्यान दिया।

"नई भूराजनीति और भारत की जी20 अध्यक्षता: आर्थिक निहितार्थ"
शीर्षक से विशिष्ट व्याख्यान श्रृंखला

'भारत में अंग्रेजी अध्ययन: शताब्दी परिप्रेक्ष्य' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन समारोह

अपनी स्थापना के शताब्दी वर्ष मनाने के लिए, अंग्रेजी विभाग ने शताब्दी समारोह के तत्वावधान में 'भारत में अंग्रेजी अध्ययन: शताब्दी परिप्रेक्ष्य' विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। अंग्रेजी विभाग वर्ष 1922 में स्थापित होने वाले दिल्ली विश्वविद्यालय के पहले आठ विभागों में से एक था। यह भारत के पहले अंग्रेजी विभागों में से एक था। उद्घाटन कार्यक्रम 28 फरवरी 2023 को कन्वेंशन हॉल, वाइस-रीगल लॉज में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (ओयूपी) के सहयोग से आयोजित किया गया था और इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार की उपस्थिति थी। प्रो. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मुख्य वक्ता थे और श्री सुमंत दत्ता, प्रबंध निदेशक, ओयूपी सम्मेलन के भागीदार थे। माननीय कुलपति, प्रो. योगेश सिंह कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

अपने मुख्य भाषण में, प्रो. सच्चिदानंद जोशी ने औपनिवेशिक युग के अंग्रेजी शिक्षाशास्त्र और शिक्षा की प्राच्यवादी और अंग्रेजी प्रणालियों पर बहस के बारे में बात की। उन्होंने अंग्रेजी के शिक्षण के माध्यम से भारतीय बौद्धिक और सौंदर्य परंपराओं के पुनरुद्धार की अपील की। डॉ. सुभाष सरकार ने अनुवाद की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला और अनुवादित ग्रंथों को हमारी सांस्कृतिक विरासत के भंडार के रूप में सराहा। उन्होंने भारतीय साहित्य को अंग्रेजी पढ़ने वाले दर्शकों तक पहुंचाने और वैश्विक कैनवास पर इसका मानचित्रण करने की भूमिका पर जोर दिया। भारत में अंग्रेजी के इतिहास को स्पष्ट करते हुए, प्रो. योगेश सिंह ने पाठ्यक्रम में पश्चिमी साहित्य की प्रधानता से भारतीय साहित्य में बदलाव की आवश्यकता को स्पष्ट किया। पेशेवर दुनिया में संचार कौशल की बढ़ती मांग को देखते हुए, उन्होंने पाठ्यक्रम को इस तरह से बदलने की अनिवार्यता पर भी जोर दिया जो साहित्य के साथ-साथ भाषा और संचार के क्षेत्र में पर्याप्त शिक्षा प्रदान करता है।

'भारत में अंग्रेजी अध्ययन: शताब्दी परिप्रेक्ष्य' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन समारोह

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

विश्वविद्यालय की भारतीय भाषा समिति ने 28 फरवरी 2023 को 'मातृभाषा और राष्ट्र निर्माण' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में प्रो. निरंजन कुमार ने राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की भूमिका को रखा और वर्तमान संदर्भ को भारतीय भाषाओं के लिए 'अमृत काल' के रूप में सराहा। श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, माननीय शिक्षा राज्य मंत्री मुख्य अतिथि थीं और श्री अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास विशिष्ट अतिथि थे।

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने विज्ञान पाठ्यक्रमों की अध्ययन सामग्री के कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा में सुलभ बनाया जा सके। श्री अतुल कोठारी ने मातृभाषा में शिक्षण के महत्व को छुआ क्योंकि इससे नए विचारों को उत्पन्न करने में मदद मिली और शिक्षाशास्त्र को भाषा से जोड़ने में मदद मिली। प्रो. योगेश सिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भाषाओं के विषय को संवेदनशील बताया और इसे संवेदनशील तरीके से संभालने की जरूरत बताई। उन्होंने शिक्षा का माध्यम बनकर भारतीय भाषाओं के संरक्षण में एनईपी-2020 की भूमिका के बारे में बात की, विशेष रूप से क्षमता संवर्धन पाठ्यक्रमों (एईसी) के माध्यम से। उन्होंने भारतीय भाषाओं को शामिल करने को भारत में उच्च शिक्षा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

65वीं वार्षिक पुष्प प्रदर्शनी 'पुष्पोत्सव 2023': दिल्ली विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष का पुष्पण आयोजन

विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता के 100 वर्षों के लिए श्रद्धांजलि के रूप में और पर्यावरण के संरक्षण और प्रकृति की सुंदरता को संरक्षित करने के प्रति अपने समर्पण को प्रदर्शित करने के लिए, विश्वविद्यालय ने 2 मार्च 2023 को गौतम बुद्ध शताब्दी उद्यान में अपना भव्य 65वां वार्षिक पुष्प समारोह *'पुष्पोत्सव 2023'* मनाया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सतीश उपाध्याय, उपाध्यक्ष, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) थे। पुष्प समारोह की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, माननीय कुलपति ने की।

श्री सतीश उपाध्याय ने असंख्य सामाजिक आर्थिक क्षेत्रों में उनके योगदान के संदर्भ में मानव जीवन के सभी पहलुओं के लिए फूलों के अपरिहार्य मूल्य को रेखांकित किया। मिरांडा हाउस को 'दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज में सर्वश्रेष्ठ हरित अभ्यास' के लिए नव स्थापित विशेष शताब्दी कप से सम्मानित किया गया। प्रो. योगेश सिंह ने बागवानी और फूलों की खेती उद्योग की आर्थिक क्षमता पर जोर दिया, दोनों वैश्विक व्यापार बाजार में इसके मूल्य के संदर्भ में और व्यवसाय के एक उभरते क्षेत्र और रोजगार सृजन के अवसर के रूप में।

शताब्दी पुष्प प्रदर्शनी "पुष्पोत्सव 2023"

'हर घर ध्यान': ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष व्याख्यान

ध्यान की शक्ति और शांति को स्वीकार करते हुए और समकालीन पोस्ट कोविड समय में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, मध्यस्थता और मानसिक स्वास्थ्य पर एक विशेष व्याख्यान 3 मार्च 2023 को विश्वविद्यालय खेल परिसर के बहुउद्देशीय हॉल में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्म विभूषण श्रहदे गुरुदेव श्री श्री रविशंकर, संस्थापक, आर्ट ऑफ लिविंग थे और विशिष्ट अतिथि हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री, श्री मनोहर लाल खट्टर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. योगेश सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति ने की।

कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण विश्वविद्यालय के नव स्थापित कुलगीत का पहली बार गायन था। प्रसिद्ध कवि श्री गजेंद्र सोलंकी द्वारा रचित, कुलगीत विशिष्ट विश्वविद्यालय के लोकाचार का प्रतीक है।

गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने मानसिक स्वास्थ्य को एक ऐसे संदर्भ में बढ़ाने की आवश्यकता को स्पष्ट किया जहां इसे लंबे समय से दरकिनार कर दिया गया था। शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण के लिए ध्यान के गुणों पर बोलते हुए, उन्होंने विद्यार्थियों से सहज क्षमता और बुद्धि में सुधार के लिए ध्यान करने का आग्रह किया। श्री मनोहर लाल खट्टर ने मानव जीवन के नकारात्मक विचारों और अप्रत्याशित वास्तविकताओं से निपटने में मदद करने के लिए ध्यान की शक्ति को स्वीकार किया। उन्होंने तनाव को कम करने में मदद करने के लिए हर घर ध्यान अभियान की क्षमता में अपना विश्वास व्यक्त किया। प्रो. योगेश सिंह ने एक ऐसे संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को रेखांकित किया जहां मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे लगातार बढ़ रहे हैं। उन्होंने चिंता, अवसाद और आत्महत्याओं के विपत्तिपूर्ण प्रसार पर अपनी चिंता व्यक्त की और विद्यार्थियों से अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखने और एक स्वस्थ दुनिया का मार्ग प्रशस्त करने के लिए वन-वर्ल्ड वन-फैमिली की परंपरा का पालन करने का आग्रह किया। आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन और विश्वविद्यालय के बीच एक समझौता-ज्ञापन की भी आधिकारिक घोषणा की गई।

हर घर ध्यान: ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष व्याख्यान

सार्वजनिक-निजी-भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के माध्यम से उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय संगोष्ठी

क्लस्टर इनोवेशन सेंटर द्वारा दिल्ली एस एंड टी क्लस्टर (डीआरआईआईवी), ओ/पीएसए, भारत सरकार के सहयोग से 13-15 मार्च 2023 तक 'सार्वजनिक-निजी-भागीदारी (पीपीपी) मॉडल के माध्यम से उच्च शिक्षा में नवाचार' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. जितेंद्र सिंह, माननीय राज्य मंत्री, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार; गेस्ट ऑफ ऑनर प्रो. पंकज अरोड़ा, डीन, शिक्षा संकाय और डीन, छात्र कल्याण और संगोष्ठी के संरक्षक, प्रो. योगेश सिंह, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. बलराम पाणि, कॉलेजों के डीन ने की।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने अनुसंधान-आधारित शिक्षा और उद्यमिता की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लंबे समय से प्रतीक्षित नवाचार के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के महत्व और भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच सक्रिय भागीदारी के फायदों पर भी प्रकाश डाला। प्रो. बलराम पाणि ने उच्च शिक्षा में नवाचार के महत्व और राष्ट्र निर्माण में नवाचार और ज्ञान की भूमिका को स्पष्ट किया।

पीपीपी मॉडल के माध्यम से उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय सेमिनार

जी-20 और वार्षिक पुरस्कार समारोह पर विशेष व्याख्यान

जी-20 पर एक विशेष व्याख्यान शताब्दी समारोह की एक पहचान थी। श्री अमिताभ कांत, शेरपा जी20 ने 22 मार्च 2023 को कन्वेंशन हॉल, वाइस रीगल लॉज में आयोजित व्याख्यान में मुख्य अतिथि और विशिष्ट वक्ता के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रो. माननीय कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने व्याख्यान की अध्यक्षता की।

उन्होंने G20 के अध्यक्ष की क्षमता में भारत द्वारा निर्धारित पांच लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया, अर्थात्-समावेशी, लचीला और सतत विकास की उपलब्धि; सतत विकास लक्ष्यों की उपलब्धि में तेजी लाना; जलवायु कार्रवाई और वित्त; डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे का विकास और उनके डिजिटल और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देकर महिलाओं के नेतृत्व में विकास। भारत की अध्यक्षता में जी20 शिखर सम्मेलन को लोगों का शिखर सम्मेलन बताते हुए, उन्होंने "दुनिया की नियति को आकार देने" का मार्ग प्रशस्त करते हुए इन स्थानों की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के प्रयास के रूप में देश भर में नियोजित कार्यक्रमों की बहुलता पर विस्तार से बताया। प्रो. योगेश सिंह ने भारत की अध्यक्षता में जी-20 के आदर्श वाक्य, अर्थात् एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य और भारत-*वसुधैव कुटुम्बकम* की सदियों पुरानी परंपरा के साथ इसके तालमेल की व्याख्या की। उन्होंने जी-20 की भारत की अध्यक्षता के महत्व में योगदान करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा नियोजित पहलों को सभी के साथ साझा किया।

विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त संकाय, शिक्षकों और कर्मचारियों के असाधारण प्रयासों करने और उनकी सराहना के प्रति आभार प्रकट करने के लिए विशेष पुरस्कार समारोह भी आयोजित किया गया था। विश्वविद्यालय कुलगीत की रचना के लिए श्री गजेन्द्र सोलंकी को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रो. विश्वविद्यालय के पूर्व कार्यवाहक *कुलपति* पी.सी. जोशी को विश्वविद्यालय की प्रगति में उनके असाधारण योगदान के लिए *निष्ठा धृति सत्यम पुरस्कार* से सम्मानित किया गया।

जी20 और वार्षिक पुरस्कार समारोह पर विशेष व्याख्यान

गौरवशाली 100 वर्षों की यात्रा

हमारे देश की राजधानी शहर के ऐतिहासिक परिदृश्य में स्थित, 407 एकड़ में फैले, केंद्रीय विधानमंडल के एक अधिनियम द्वारा वर्ष 1922 में स्थापित दिल्ली विश्वविद्यालय ने अकादमिक उत्कृष्टता की एक सदी की अपनी यात्रा में प्रगति की है और विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा के क्षितिज में एक अमिट छाप छोड़ी है। स्वतंत्रता-पूर्व सामूहिक विरासत और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवादी उत्साह ने विश्वविद्यालय के वर्तमान स्वरूप और स्थिति को आकार देने में अत्यधिक योगदान दिया है क्योंकि यह आज उच्च शिक्षा में एक वैश्विक नायक है।

संकाय, विभागों, कॉलेजों, केन्द्रों और छात्रावासों की संख्या के संदर्भ में विश्वविद्यालय की अभूतपूर्व वृद्धि, भौतिक अवसंरचना को दर्शाती है और शैक्षिक कार्यक्रमों की संख्या में तदनुरूपी वृद्धि को दर्शाती है, जिसमें अन्य लोगों के बीच अस्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट अध्ययन शामिल हैं। कार्यक्रम युवाओं के बीच उच्च शिक्षा के पारगमन के साधन हैं, और विश्वविद्यालय को देश के हर क्षेत्र और कोने से विद्यार्थियों को आकर्षित करने में मदद की है। संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है जो मात्र 750 विद्यार्थियों से बढ़कर 7 लाख से अधिक हो गई है, जो हमारे राष्ट्र के सूक्ष्म जगत के साथ-साथ विश्व भर का प्रतिनिधित्व करती है। इस तरह के उल्लेखनीय विकास केवल पिछली सदी में विश्वविद्यालय के हर हितधारक द्वारा किए गए अथक प्रयासों के आधार पर संभव हो सकता है।

विश्वविद्यालय अपनी शताब्दी को अपनी विरासत और समृद्ध संस्कृति की विरासत में बहुत गर्व के साथ मना रहा है, दोनों अकादमिक और पाठ्येतर संस्कृति, व्यावहारिक और यथार्थवादी पाठ्यक्रम संरचनाओं के माध्यम से अपने विश्वसनीय शिक्षण-अधिगम में पर्याप्त रूप से परिलक्षित होता है, जो राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए समकालीन वैश्विक मानकों के साथ बहुत अधिक संरक्षित है, असाधारण वैज्ञानिक प्रवृत्ति के माध्यम से अनुसंधान और नवाचार में महत्वपूर्ण योगदान, साहित्यिक कौशल और श्रेष्ठ बुद्धि का अनुप्रयोग। विश्वविद्यालय से जुड़े हम सभी लोग पूर्णता और गौरव की भावना महसूस करते हैं, जो समय के साथ-साथ विश्वविद्यालय को ज्ञान और ज्ञान के वैश्विक भंडार को जोड़ने में और अधिक सशक्त तरीके से योगदान देने और हमारे राष्ट्र को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए प्रेरित करेगा।

दिल्ली विश्वविद्यालय के गौरवशाली 100 वर्षों को नीचे दर्शाया गया है। इसे नीचे दिए गए चित्र में यात्रा के मील के पत्थर के रूप में दर्शाया गया है और अब तक की यात्रा का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

JOURNEY OF GLORIOUS 100 YEARS

FIRST CONVOCATION OF THE UNIVERSITY OF DELHI |

1922-1932

1- The Faculty of Law was established
2- Commercial College (present day SRCC) with Intermediate classes started
3- Commercial College (present day SRCC) became a Degree College
4- There were two Faculties: Arts and Science and eight Departments: English, History, Economics, Sanskrit, Arabic, Persian, Physic and Chemistry

1932-1942

1- Lady Irwin College was inaugurated. But it is not yet affiliated to the University of Delhi
2- The foundation stone of the new building of St Stephen's College was laid
3- The post of Reader in the University, established in 1924, was abolished
4- The present-day Viceregal Lodge was handed over to the University

NINETEENTH CONVOCATION HELD ON 6TH MAY 1941

UNIVERSITY OF DELHI
TWENTY-SECOND CONVOCATION HELD ON 16TH DECEMBER, 1944

1942-1952

1- Delhi School of Economics was set-
2- SGTB Khalsa College was founded
3- Department of Home Science was initiated
4- Two colleges on the Campus, Hansraj College and Miranda House, were established
5- Delhi University Teachers' Association (DUTA) was constituted
6-Delhi University Students Union (DUSU) was inaugurated

1952-1962

1- Deshbandhu College was founded
2- The University campus got another College- Kirori Mal College
3- Shivaji College and Sri Venkateswara College started
4-More colleges established- Janaki Devi Memorial College, Dyal Singh College, Atma Ram Sanatan Dharma and Dyal Singh College (Evening)
5-One more on-campus college for women started as Pramila College (present day Daulat Ram College)

Twenty Eighth Convocation held on 9th January 1951

UNIVERSITY OF DELHI
Twenty-ninth Convocation, 30th November, 1951

1962-72

1-The Delhi University Women's Association (DUWA) was established
2- The Campus got two new departments- Department of Psychology and East Asian Studies
3-The University grew further with more colleges and institutes- Shyam Lal College, Ram Lal Anand College, Rajdhani College, Moti Lal Nehru College, Kamala Nehru College, G B PantHospital and Delhi Institute of Pharmaceutical Sciences and Research
4-Department of Geology was set-up

JOURNEY OF GLORIOUS 100 YEARS

1972-1982

1-Golden Jubilee year of the University.
2-Departments of Homeopathic Medicine, and Pharmacy started.
3- Department of Business Economics was started
4- Four more evening colleges added- Satyawati College (Evening), Shaheed Bhagat Singh College (Evening), Ram Lal Anand College (Evening) and Sri Guru Teg Bahadur Khalsa College (Evening)
5-Departments of Ayurvedic Medicine, Unani Medicine, Statistics, and Operational Research started.

1982-1992

1- Department of Electronics and Communication Engineering introduced.
2- Departments of Bio-Chemistry, Genetics, Microbiology, Applied Sciences, and Humanities started.
3- two more colleges- Sri Aurobindo College (Evening) and Sri Guru Gobind College of Commerce
4- Departments of Punjabi, Electronic Science, Bio-Physics, and Computer Engineering started

SPECIAL CONVOCATION: 28th March 2012

1992-2002

1-Department of Financial Studies was started in the South Campus
2-The University got more colleges- Aditi Mahavidyalaya, Keshav Mahavidyalaya and Maharaja Agrasen College.
3- Bhagini Nivedita College, Ahilya Bai College of Nursing, and Institute of Human Behaviour & Allied Sciences started.
4- Two more specialised colleges came up- Bhaskaracharya College of Applied Sciences and Maharshi Valmiki College of Education.

2002-2012

1-Durgabai Deshmukh College of Special Education and Maulana Azad Institute of Dental Sciences founded.
2-Institute of Life Long Learning (ILLL) was set-up
3-Department of Physical Education andSports Sciences set-up
4- Cluster Innovation Centre (CIC) and Holy Family College of Nursing established
School of Rehabilitation Sciences was established

NINETY CONVOCATION: 19th March 2013

NINETY EIGHTH CONVOCATION: 26th February 2022

2012-2022

1-The University started celebrating its Foundation Day
2-The Maharishi Kanad Bhawan at the University inaugurated
3-Chacha Nehru Bal Chikitsalaya was founded.
4-College of Nursing at Army Hospital (R&R) was started.
5-The A+ Grade accredited to the University by NAAC

1922: दिल्ली विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया। तीन कॉलेज-सेंट स्टीफन (1881), हिंदू (1899) और रामजस (1917) विश्वविद्यालय की स्थापना से पहले स्थापित हुए। विश्वविद्यालय का गठन करने का विधेयक 16 जनवरी को केंद्रीय विधान सभा में प्रस्तुत किया गया था, 22 फरवरी को इसके द्वारा और 28 फरवरी 1922 को काउंसिल ऑफ स्टेट्स द्वारा पारित किया गया था। वायसराय ने 5 मार्च को अपनी सहमति दी, अधिसूचना 6 अप्रैल को जारी की गई और दिल्ली विश्वविद्यालय अधिनियम 1 मई 1922 को लागू हुआ।

लॉर्ड रीडिंग, तत्कालीन वायसराय पहले चांसलर बने; हरि सिंह गौड़ प्रथम कुलपति; मुहम्मद शफी, पहले सम-कुलपति; जी.एम.डी. सूफी, प्रथम कुलसचिव;; एफ.जे. पश्चिमी, पहला कुलानुशासक; और के.सी. रॉय पहले कोषाध्यक्ष। दो संकाय: कला और विज्ञान और आठ विभाग: अंग्रेजी, इतिहास, अर्थशास्त्र, संस्कृत, अरबी, फारसी, भौतिकी और रसायन विज्ञान थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय 1380 दान की गई पुस्तकों के संग्रह के साथ शुरू हुआ।

FIRST CONVOCATION OF THE UNIVERSITY OF DELHI [March 26. 1923]

First Row (seated left to Right) - Mr F.F.Monk , Principal , St. Stephens College , Mr Kidar Nath , Principal , Ramjas College , Rev.F.J.Western, Rector , Hon. Mian Sir Muhd. Shafi , Pro-Chancellor , H.E. the Right Honble the earl of Reading , Chancellor , Dr H.S.Gaur , Vice Chancellor , Mr.K.C.Roy , Treasurer , Mr G.M.D. Sufi , Registrar , Honble Mr. C.A.Barron , Chief Commissioner , Delhi ,

Standing (Left to Right) - Mr S.N.Mundkarji , Sir Frederic Gauntlett , K.B.Pirzada Muhd.Hussain , Mr. Pearey Lal , Mr.Kishen Dayal , Prof V.G. Kale , Mr. L.T.Watkins , Mr.Khub Ram , Colonel Stuart , Military Secretary to the Viceroy

Third Row (standing Left to Right) - Mr K.C. De , Mr Shiv Narain.

1923: पहला दीक्षांत समारोह 26 मार्च 1923 को लेजिस्लेटिव असेंबली हॉल में आयोजित किया गया। कुलपति हरि सिंह गौर ने प्रथम दीक्षांत समारोह में अपने भाषण में रेखांकित किया कि नई राजधानी 'आत्म-अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता की आकांक्षा रखने वाले पुनर्जीवित राष्ट्र का केंद्र और प्रतीक है, एक नया विश्वविद्यालय बनाया जाना चाहिए जो इसकी नई आशाओं के लिए प्रेरणा के रूप में और अपनी नवजात आकांक्षाओं के लिए एक संकेत के रूप में काम करे।

1924: विधि संकाय की स्थापना की गई।

अर्थशास्त्र के एच.ए.ल छबलानी को घनश्याम दास बिड़ला से वृत्तिका निधि से विश्वविद्यालय में पहले रीडर के रूप में नियुक्त किया गया था। 1934 में उनकी मृत्यु के बाद इस पद को समाप्त कर दिया गया था।

पहला महिला कॉलेज, इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज स्थापित किया गया था।

1926 इंटरमीडिएट कक्षाओं के साथ वाणिज्यिक कॉलेज शुरू हुआ; यह 1930 में एक डिग्री कॉलेज बन गया; 1951 में इसका नाम बदलकर श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स कर दिया गया।

1925: पुराने दिल्ली कॉलेज को एंग्लो-अरबी कॉलेज के रूप में पुनर्जीवित किया गया और दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध हो गया। 1975 में इसका नाम बदलकर जाकिर हुसैन कॉलेज कर दिया गया और 2012 में इसका नाम बदलकर जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज कर दिया गया।

1932: लेडी इरविन कॉलेज का उद्घाटन लेडी विलिंगटन और हन्ना सेन ने इसके पहले निदेशक के रूप में किया। लेडी डोरोथी इरविन, एनी बीसेंट, सरोजिनी नायडू और राजकुमारी अमृत कौर के प्रयास से शुरू हुई। यह 1950 तक अखिल भारतीय महिला शिक्षा निधि संघ के तत्वावधान में चलाया गया था, जिस वर्ष यह विश्वविद्यालय से संबद्ध हो गया था।

1933: वाइसरीगल लॉज विश्वविद्यालय को सौंप दिया गया था, जो 1922 में रिट्ज सिनेमा भवन से किराए के घर में शुरू हुआ था। अक्तूबर 1924 में अलीपुर रोड पर कर्जन हाउस में स्थानांतरित कर दिया गया।

सितंबर 1926 में, भारत सरकार ने पुराने सचिवालय भवन का एक हिस्सा आवंटित किया। 1927 में, विश्वविद्यालय ने एक साइट समिति नियुक्त की जिसने सिफारिश की कि रिज के पास पुराने वाइसरीगल लॉज और एस्टेट को विश्वविद्यालय को दिया जाए। इसे 1933 में यह साइट आवंटित की गई थी, जो चार वायसराय- हार्डिंग, चेम्सफोर्ड, रीडिंग और इरविन के निवास थे।

1938: मौरिस ग्वायर को कुलपति नियुक्त किया गया।

1939: ग्वायर ने राजधानी के लिए एक अखिल भारतीय विश्वविद्यालय के अपने दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए भारत सरकार को एक ज्ञापन प्रस्तुत किया और दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्ण कायापलट की कामना की। उन्होंने महसूस किया कि इसे वर्तमान चरण में जारी रखने की अनुमति दी जानी चाहिए। यह भारत के किसी भी अन्य विश्वविद्यालय की तरह नहीं होना चाहिए: 'केंद्र में एक विश्वविद्यालय का विशिष्ट कार्य सर्वोपरि और गुणवत्ता का होना चाहिए'।

सेंट स्टीफेंस कॉलेज के नए भवन की आधारशिला सरोजिनी नायडू, राजकुमारी अमृत कौर और महादेव देसाई की उपस्थिति में सी.एफ. एंड्रयूज ने रखी थी।

1942: अर्थशास्त्र के वीकेआरवी राव को विश्वविद्यालय में पहला पूर्णकालिक प्रोफेसर नियुक्त किया गया, उसके बाद भौतिकी में डी.एस. कोठारी को नियुक्त किया गया।

ललित कला विभाग और कला महाविद्यालय की स्थापना की गई।

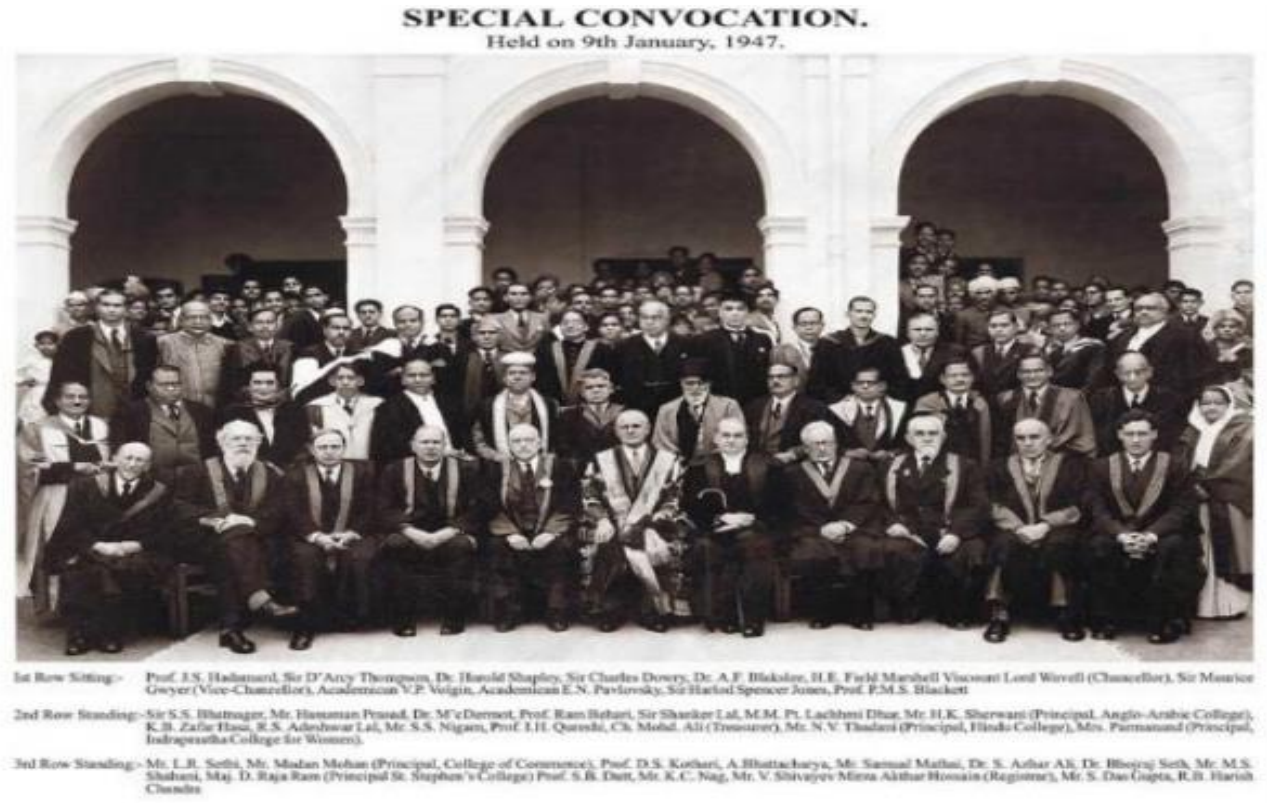

1943: दिल्ली विश्वविद्यालय अधिनियम में पहला बड़ा संशोधन: 3 साल के डिग्री कोर्स और पूर्णकालिक भुगतान वाले कुलपति का प्रावधान किया गया। यह अपने स्वयं के अनुरोध पर ग्वायर पर लागू नहीं हुआ। नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड की स्थापना की गई थी। 1944 में तीन विद्यार्थियों के साथ चालू हुआ।

1945: दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डीयूटीए) का गठन।

1946: पुस्तकालय विज्ञान, आधुनिक यूरोपीय भाषा और सामाजिक कार्य विभाग स्थापित।
स्वास्थ्य मंत्रालय के तहत ऑफ नर्सिंग शुरू हुआ, बाद में इसका नाम बदलकर राजकुमारी अमृत कौर नर्सिंग कॉलेज कर दिया गया।

1947: स्वतंत्रता दिवस पर 1947 में रजत जयंती वर्ष के अवसर पर, प्रोफेसर वी.के.आर.वी. राव ने विश्वविद्यालय के मुख्य भवन पर और डॉ राधाकृष्णन ने लॉ स्कूल भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया। जुबली हॉल का शुभारंभ विश्वविद्यालय की रजत जयंती के अवसर पर हुआ।

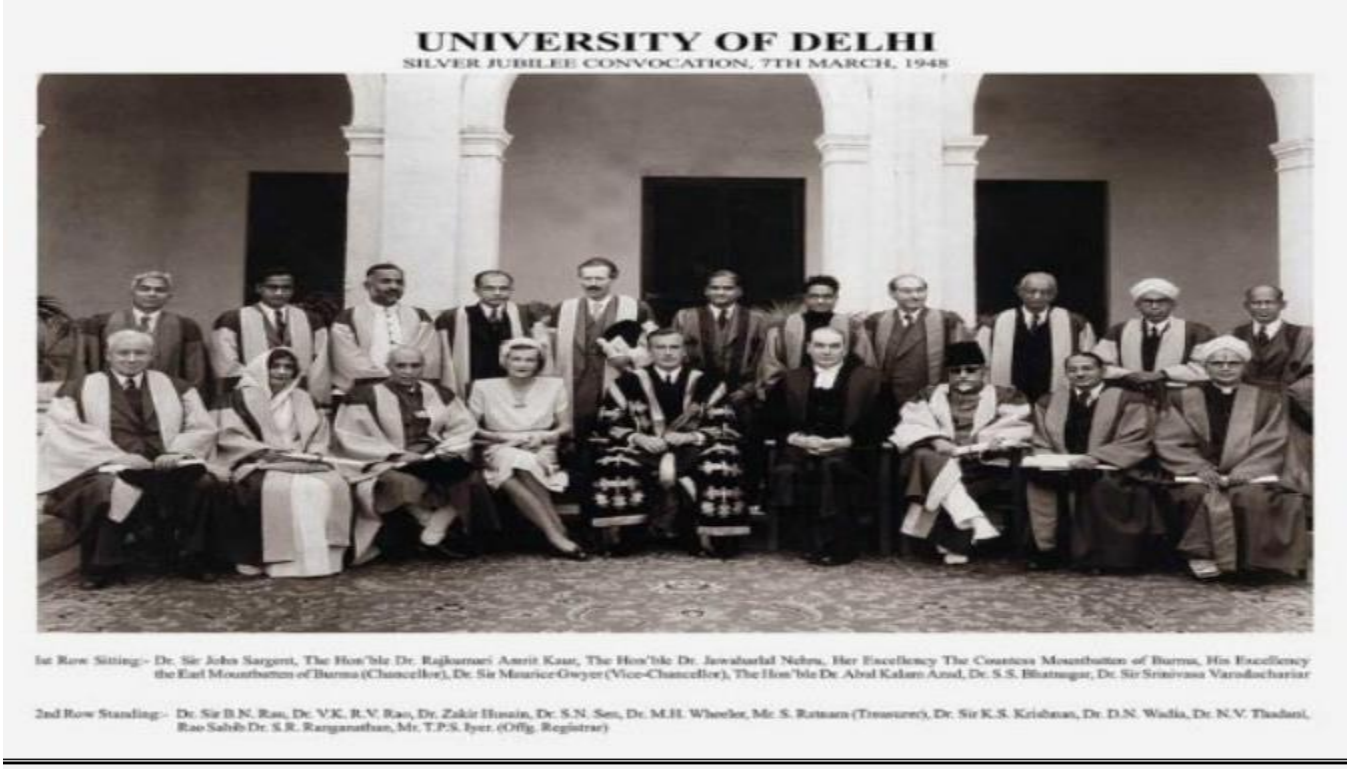

राष्ट्रीय आंदोलन के साथ अंतराफलक:

- प्रसिद्ध क्रांतिकारी लाल हर दयाल स्टीफन कॉलेज के छात्र रहे थे, उन्होंने भी वहां अंग्रेजी विषय पढ़ाया था। 1908 में अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना के लिए भारत छोड़ दिया।
- 1917 में होम रूल आंदोलन के दौरान, विद्यार्थियों ने विरोध प्रदर्शन किया और हड़ताल की।
- गांधी ने स्टीफन कॉलेज के प्रिंसिपल एस.के. रुद्र के घर का दौरा किया और वहां असहयोग प्रस्ताव का मसौदा तैयार किया और आंदोलन के दौरान, गांधी ने स्टीफन कॉलेज में तीन कॉलेजों के विद्यार्थियों की एक संयुक्त बैठक को संबोधित किया। रामजस कॉलेज के प्रिंसिपल, ए.टी. गिडवानी ने त्यागपत्र दे दिया और आंदोलन का समर्थन किया।
- दिल्ली षडयंत्र मामले की सुनवाई करने वाली अदालत वाइसरीगल लॉज में आयोजित की गई थी।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान, स्टीफन कॉलेज के विद्यार्थियों ने कॉलेज भवन के ऊपर राष्ट्रीय ध्वज लगाया जो 3-4 दिनों तक वहां रहा।
- 26 जनवरी 1938: दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्र संघ ने स्वतंत्रता दिवस मनाया और कश्मीरी गेट में स्टीफन और हिंदू कॉलेजों के सामने त्रिकोणीय पार्क में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 10 अगस्त 1942 को स्टीफन, हिंदू और इंद्रप्रस्थ कॉलेजों के छात्र प्रदर्शनों में शामिल हुए।

स्वतंत्रता के बाद

1947: एनसीईआरटी के तत्वावधान में केंद्रीय शिक्षा संस्थान (सीआईई) की स्थापना की गई, और 1973 में विश्वविद्यालय का हिस्सा बन गया।

नृविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, गणित और जूलॉजी विभाग शुरू हुए।

1948: 7 मार्च 1948 को रजत जयंती मनाने के लिए विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया; पंडित जवाहरलाल नेहरू, लॉर्ड माउंटबेटन, डॉ जाकिर हुसैन, मौलाना आजाद, जॉन सरजेंट और राज कुमारी अमृत कौर को मानद उपाधियां प्रदान की गईं। वहां माउंटबेटन ने खुलासा किया कि कैसे उन्होंने एडविना को 25 साल पहले विश्वविद्यालय के मुख्य भवन में जाने का प्रस्ताव दिया था, जो आज कुलसचिव का कार्यालय है।

कैंपस में दो कॉलेज- हंसराज कॉलेज और दूसरा, एक महिला कॉलेज-मिरांडा हाउस स्थापित किया गया।

1949: सरदार वल्लभभाई पटेल ने 6 अप्रैल को अखिल भारतीय क्षय रोग संस्थान की आधारशिला रखी, जिसे अब वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के नाम से जाना जाता है। इसका औपचारिक उद्घाटन 12 जनवरी 1953 को केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री राजकुमारी अमृत कौर ने किया था।

दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की स्थापना वी.के.आर.वी. राव की पहल पर सर वी.टी. कृष्णमाचारी के पहले अध्यक्ष के रूप में की गई थी।

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ का उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 9 अप्रैल को किया था।

1950: ग्वायर के इस्तीफे पर विचार करते हुए कार्यकारी परिषद ने यूनिवर्सिटी हॉल का नाम ग्वायर हॉल और राजपुर क्वार्टर का नाम मौरिस नगर रखा।

एस.एन. सेन, जो ग्वायर के उत्तराधिकारी बने, पहले पूर्णकालिक वेतनभोगी कुलपति बने।

30 मार्च 1950 को, कार्यकारी परिषद ने विश्वविद्यालय के वर्तमान लोगो और महामहोपाध्याय लच्छमी धर कल्ला द्वारा सुझाए गए 'निष्ठा धृतिः और सत्यम' के आदर्श वाक्य को अपनाया।

गृह विज्ञान विभाग की शुरुआत लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से की गई थी, जिसे 1916 में स्थापित किया गया था, जो दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध हो गया।

1951 एसजीटीबी खालसा कॉलेज की स्थापना।

1952: दिल्ली विश्वविद्यालय अधिनियम में प्रमुख संशोधन-इसे एक शिक्षण और संबद्धता विश्वविद्यालय में बदलना। ऑनर्स और संबद्ध कॉलेजों के लिए घटक कॉलेज जो केवल पास डिग्री प्रदान करते हैं। वित्त समिति को अब विश्वविद्यालय के एक प्राधिकरण के रूप में जोड़ा गया था। भारत के राष्ट्रपति, कुलाधिपति को पुराने अधिनियम के तहत अब कुलाध्यक्ष बनाया गया था। कुलाधिपति का चुनाव विश्वविद्यालय न्यायालय द्वारा किया जाना था।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दिसंबर 1952 में वार्षिक दीक्षांत समारोह की शोभा बढ़ाई।

हिंदी और राजनीति विज्ञान विभागों की स्थापना की गई और देशबंधु कॉलेज की स्थापना की गई।

1953: दर्शनशास्त्र विभाग की शुरुआत।

1954: व्यवसाय प्रबंधन और औद्योगिक प्रशासन विभाग शुरू हुआ विश्वविद्यालय परिसर को एक और कॉलेज मिला- किरोड़ीमल कॉलेज।

1955: डब्ल्यूयूएस स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना।
अफ्रीकी अध्ययन विभाग का उद्घाटन पंडित नेहरू ने 6 अगस्त 1955 को किया था

1956: डॉ. राधाकृष्णन ने डब्ल्यूयूएस स्वास्थ्य केंद्र के नए भवन का उद्घाटन किया। एक और महिला कॉलेज- लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर विमेन की स्थापना की।

1957: एक अन्य विभाग जोड़ा गया-बौद्ध अध्ययन विभाग।
पीजीडी ए वी कॉलेज की स्थापना।

केंद्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

1958: वर्तमान केंद्रीय पुस्तकालय भवन का उद्घाटन तत्कालीन कुलाधिपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने किया।

विश्वविद्यालय में अधिक कॉलेज: मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, पीजीडीएवी कॉलेज (सांध्य), जाकिर हुसैन कॉलेज (सांध्य) और देशबंधु कॉलेज (सांध्य), अंतिम नाम बदलकर रामानुजन कॉलेज 2010 में और 2012 में एक पूर्ण प्रातः कॉलेज बन गया आर्थिक विकास संस्थान (आईईजी) की स्थापना की गई थी।

1959: उर्दू, समाजशास्त्र और भूगोल विभाग की स्थापना।

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दयाल सिंह कॉलेज, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज और दयाल सिंह कॉलेज (शाम) के साथ विश्वविद्यालय की सीमाएं आगे बढ़ीं और आखिरी 2017 में एक पूर्ण दिन का कॉलेज बन गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय संगीत, कला और नाटक सोसायटी का गठन।

शंकरलाल हॉल, दिल्ली विश्वविद्यालय

1960: संगीत विभाग की स्थापना 1960 में सर शंकर लाल फाउंडेशन से प्राप्त वृत्तिका निधि की सहायता से की गई थी।

महिलाओं के लिए एक और ऑन-कैंपस कॉलेज-प्रमिला कॉलेज के रूप में शुरू हुआ, फिर इसका नाम बदलकर दौलत राम कॉलेज कर दिया गया।

1961: दिल्ली विश्वविद्यालय प्रेस की स्थापना।

आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्यिक अध्ययन विभाग, और गृह अर्थशास्त्र संस्थान की स्थापना हुई।

डॉ. सी. डी. देशमुख ने कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण किया।

शिवाजी कॉलेज और श्री वेंकटेश्वर कॉलेज शुरू हुए और बाद की आधारशिला सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने रखी।

1962: पत्राचार पाठ्यक्रम स्कूल की स्थापना की गई और 2004 में इसका नाम बदल कर मुक्त शिक्षा विद्यालय कर दिया गया।

1963 भाषाविज्ञान विभाग की स्थापना।

1964: दिल्ली विश्वविद्यालय महिला संघ (डीयूडब्ल्यूए) की स्थापना तत्कालीन कुलपति सीडी देशमुख की पत्नी श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख ने की थी।

दो नए विभाग स्थापित किए गए- मनोविज्ञान विभाग और पूर्व एशियाई अध्ययन।

श्याम लाल कॉलेज, राम लाल आनंद कॉलेज, राजधानी कॉलेज, मोती लाल नेहरू कॉलेज, कमला नेहरू कॉलेज, जी.बी. पंत अस्पताल और दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एंड रिसर्च जैसे कॉलेजों और संस्थान विश्वविद्यालय के अंग बने।

1965: इस वर्ष दो और कॉलेजों की स्थापना की गई- लक्ष्मीबाई कॉलेज और मोती लाल नेहरू कॉलेज (सांध्य)।

1966: भूविज्ञान विभाग की स्थापना की गई।

1967: वाणिज्य विभाग की स्थापना हुई।

इस वर्ष सात और कॉलेजों-गार्गी, कॉलेज, कालिंदी कॉलेज, मैत्रेयी कॉलेज, माता सुंदरी महिला कॉलेज, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, शहीद भगत सिंह कॉलेज और नेहरू होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल को जोड़ा गया।

1968: वास्तुकला और योजना, सिविल इंजीनियरिंग और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग स्थापित किए गए।

जीसस एंड मैरी कॉलेज की स्थापना हुई।

1969: एक सांध्य कॉलेज और एक महिला कॉलेज जोड़ा गया-श्याम लाल कॉलेज (सांध्य) और श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज।

1970: विवेकानंद कॉलेज की स्थापना हुई।

1971: चिकित्सा विज्ञान के विश्वविद्यालय कॉलेज की स्थापना के साथ चिकित्सा शिक्षा को बढ़ावा दिया.

भारती महिला कॉलेज शुरू किया गया, बाद में यह भारती कॉलेज बन गया।

1972: विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयंती वर्ष

भारत के उपराष्ट्रपति को विश्वविद्यालय का पदेन कुलपति बनाने के लिए संविधि में संशोधन किया गया था। दो नए विभाग-होम्योपैथिक मेडिसिन और फार्मेसी विभाग शुरू हुए।

सत्यवती कॉलेज और कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज की स्थापना की गई।

श्री अरबिंदो कॉलेज की स्थापना श्री अरबिंदो के जन्म शताब्दी वर्ष में हुई थी।

1973: साउथ कैंपस तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर सरूप सिंह की पहल से शुरू किया गया था, जिसमें प्रोफेसर अमरीक सिंह इसके पहले निदेशक थे।

बिजनेस इकोनॉमिक्स विभाग को साउथ कैंपस में पहले विभाग के रूप में स्थापित किया गया था और 1994 में वित्तीय अध्ययन विभाग शुरू किया गया था। 2019 में दोनों विभागों को वित्त और व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग बनाने के लिए समामेलित किया गया था।

आयुर्वेदिक चिकित्सा, यूनानी चिकित्सा, सांख्यिकी और परिचालन अनुसंधान विभाग शुरू हुए।

सत्यावती कॉलेज (सांध्य), शहीद भगत सिंह कॉलेज (सांध्य), राम लाल आनंद कॉलेज (शाम) और श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज (शाम) चार और सांध्य कॉलेज जोड़े गए।

वर्ष 2005-06 में एम.कॉम. कार्यक्रम शुरू होने के बाद 1988-89 में श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज (सांध्य) श्री गुरु नानक देव खालसा स्नातकोत्तर कॉलेज कर दिया गया।

राम लाल आनंद कॉलेज (सांध्य) जिसे 1973 में स्थापित किया गया था, को भी एक पूर्ण कॉलेज बनाया गया था और 2014-15 में आर्यभट्ट कॉलेज का नाम दिया गया था।

1975: शारीरिक रूप से विकलांग संस्थान, 2002 में शारीरिक रूप से विकलांग के लिए पंडित दीन दयाल उपाध्याय संस्थान का नाम बदल दिया गया, और 2016 में इसका नाम बदलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पर्सन्स विद फिजिकल डिसएबिलिटीज (दिव्यांगजन) कर दिया गया।

कस्तूरबा अस्पताल की स्थापना की गई।

1976: वयस्क और सतत शिक्षा प्रकोष्ठ की स्थापना की गई, 1982 में वयस्क, सतत शिक्षा और विस्तार केंद्र के रूप में उन्नत किया गया, और 1985 में एक पूर्ण विभाग बन गया।

1977: राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान की स्थापना की गई।

1981: यूनानी चिकित्सा के तिबिया कॉलेज, और कंप्यूटर विज्ञान विभाग की स्थापना की गई।

1983: इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग विभाग की शुरुआत हुई।

1984: जैव-रसायन विज्ञान, आनुवंशिकी, सूक्ष्म जीव विज्ञान, अनुप्रयुक्त विज्ञान और मानविकी विभाग शुरू हुए।

इस वर्ष दो और कॉलेजों- श्री अरबिंदो कॉलेज (ईवनिंग) और श्री गुरु गोबिंद कॉलेज ऑफ कॉमर्स को जोड़ा गया।

1985: पंजाबी, इलेक्ट्रॉनिक विज्ञान, जैव-भौतिकी और कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग शुरू हुए।

अकादमिक अनुसंधान केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

1987: उच्च शिक्षा में व्यावसायिक विकास केंद्र, जिसे सीपीडीएच के नाम से जाना जाता है, की स्थापना की गई और 1988 में इसने काम करना शुरू कर दिया।

उच्च शिक्षा में महिलाओं की चिंताओं को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के आह्वान पर दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रतिक्रिया के रूप में 1987 में महिला अध्ययन और विकास केंद्र (डब्ल्यूएसडीसी) की स्थापना की गई थी। डब्ल्यूएसडीसी को 2016 में यूजीसी द्वारा अध्ययन के उन्नत केंद्र के रूप में मान्यता दी गई है।

अन्य विशिष्ट कॉलेज जोड़े गए- दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स, शहीद सुखदेव कॉलेज ऑफ बिजनेस स्टडीज और इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज।

1988: जर्मनिक और रोमन्स अध्ययन, स्लावोनिक और फिनो-उगेरियन अध्ययन और पादप आणविक जीव - विज्ञान विभाग शुरू किए गए।

1989: एक और इंजीनियरिंग विभाग जोड़ा गया- इंस्ट्रूमेंटेशन एंड कंट्रोल इंजीनियरिंग विभाग।

1990: दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज की स्थापना हुई।

1991: बाबा साहेब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की जन्म शताब्दी के अवसर पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर द्वारा रखी गई आधारशिला से डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सेंटर फॉर बायोमेडिकल रिसर्च (एसीबीआर) अस्तित्व में आया।

विश्वविद्यालय को दो और कॉलेज मिले- आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज और डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज।

पर्यावरण अध्ययन विभाग शुरू किया गया।

महिलाओं के लिए एक और विशेष कॉलेज, शहीद राजगुरु महिला अनुप्रयुक्त विज्ञान कॉलेज की स्थापना की गई।

1993: चिकित्सा विज्ञान संकाय के तहत कई विभागों की स्थापना की गई.

भगिनी निवेदिता कॉलेज, अहिल्या बाई नर्सिंग कॉलेज और इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन बिहेवियर एंड एलाइड साइंसेज शुरू हुए।

विकासशील देशों के अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई और 2021 में इसका नाम बदलकर सेंटर फॉर ग्लोबल स्टडीज कर दिया गया।

1994: विश्वविद्यालय को और तीन कॉलेज मिले- अदिति महाविद्यालय, केशव महाविद्यालय और महाराजा अग्रसेन कॉलेज।

1995: प्रो. कोठारी के सम्मान में, विश्वविद्यालय ने डी.एस. कोठारी विज्ञान, नैतिकता और शिक्षा केंद्र की स्थापना की। सर जॉन केंड्रू, नोबेल पुरस्कार विजेता ने 18 नवंबर, 1995 को पहला प्रो. डी.एस. कोठारी मेमोरियल व्याख्यान दिया।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग की स्थापना की गई थी।

दो और विशिष्ट कॉलेज-भास्कराचार्य अनुप्रयुक्त विज्ञान कॉलेज और महर्षि वाल्मीकि कॉलेज ऑफ एजुकेशन स्थापित किए गए।

1997: सूचना विज्ञान और संचार संस्थान की स्थापना की गई थी।

1998: उत्पादन और औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग की स्थापना की गई।

1999: अमर ज्योति इंस्टीट्यूट ऑफ फिजियोथेरेपी शुरू किया गया।

2002: स्कूल ऑफ रिहैबिलिटेशन साइंसेज की स्थापना की गई।

2005: शारीरिक शिक्षा और खेल विज्ञान विभाग की स्थापना की गई।

2006: दुर्गाबाई देशमुख कॉलेज ऑफ स्पेशल एजुकेशन और मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंस की स्थापना।

2007: आजीवन अध्ययन संस्थान (आईएलएलएल) की स्थापना 2007 में प्रोफेसर केएन त्रिपाठी के साथ इसके पहले निदेशक के रूप में की गई थी, जिसका उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए पारंपरिक बाधाओं को दूर करना था, जैसे कि स्थान, समय और संसाधन की कमी।

2008: दंत चिकित्सा विज्ञान विभाग की शुरुआत की।

2011: क्लस्टर नवाचार केंद्र (सीआईसी) और होली फैमिली कॉलेज ऑफ नर्सिंग की स्थापना।

2012: क्लस्टर इनोवेशन सेंटर ने मेटा कॉलेज अवधारणा के माध्यम से पांच धाराओं (पत्रकारिता, शिक्षा, ऐतिहासिक पर्यटन, कला और डिजाइन, और परामर्श) में बी.टेक. मानविकी की पेशकश शुरू की। चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय की स्थापना हुई।

विश्वविद्यालय के शैक्षणिक-सह-सांस्कृतिक उत्सव, अंतर्धवानी का आयोजन 2-5 मार्च 2012 को परिसर में भव्य पैमाने पर किया गया था।

भारतीय रेलवे के सहयोग से, एक समर्पित ट्रेन ज्ञानोदय एक्सप्रेस ने देश की विविधता का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिए विद्यार्थियों को तीन शैक्षिक दौरों पर ले जाया गया।

ब्राजील गणराज्य की राष्ट्रपति महामहिम डिल्मा वाना रूसेफ को मानद डी.लिट. उपाधि प्रदान करने के लिए 28 मार्च 2012 को एक विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया था। भारत के उपराष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी ने समारोह की अध्यक्षता की।

विश्वविद्यालय ने अपना स्थापना दिवस मनाना शुरू कर दिया।

2013: विश्वविद्यालय ने 20 जनवरी 2013 को सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) के साथ क्लस्टर नवाचार केंद्र, नॉर्थ कैंपस में और बाद में अन्य स्थानों पर प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित करने के लिए एक समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

एनी अस्पताल (आर एंड आर) में कॉलेज ऑफ नर्सिंग शुरू किया गया था।

2016: अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान शुरू किया गया।

2018: एनएएसी ने 3.28 के सीजीपीए स्कोर के साथ A+ ग्रेड के साथ विश्वविद्यालय को मान्यता दी।

2019: फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्सिंग कॉलेज की स्थापना की गई।

2020: एक बड़ी उपलब्धि हासिल की- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने 02 मार्च, 2020 को एक अधिसूचना जारी की, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय को एक उत्कृष्ट क्यूओई संस्थान घोषित किया गया)।

2021: तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. रमेश निशंक पोखरियाल ने विश्वविद्यालय में महर्षि कणाद भवन का उद्घाटन किया। वह आयोजित दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि थे, जिसमें पहली बार विश्वविद्यालय ने 1,78,719 विद्यार्थियों को ऑनलाइन डिजिटल डिग्री वितरित की।

दो नए परिसरों, ईस्ट कैंपस और वेस्ट कैंपस के लिए आधारशिला रखी गई।

2022: विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को अपनाया और कई सम्बन्धित विकल्पों के साथ चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम ढांचा पेश करने का निर्णय लिया।

यूजी कार्यक्रम में प्रवेश पूरी तरह से कॉमन यूनिवर्सिटीज एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी) नामक प्रवेश परीक्षा पर आधारित होगा।

1922 से कुलपति

DR. SIR HARI SINGH GOUR
1922-1926
1st Vice-Chancellor

RAI BAHADUR DR. MOTI SAGAR
1926-1930
2nd Vice-Chancellor

DR. KHAN BAHADUR SIR ABDUR REHMAN
1930-1934
3rd Vice-Chancellor

DR. RAI BAHADUR RAM KISHORE
1934-1938
4th Vice-Chancellor

SIR MAURICE GWYER
1938-1950
5th Vice-Chancellor

DR. S.N. SEN
1950-1953
6th Vice-Chancellor

DR. G.S. MAHAJANI
1953-1957
7th Vice-Chancellor

DR. V.K.R.V. RAO
1957-1960
8th Vice-Chancellor

DR. N.K. SIDHANTA
1960-1961
9th Vice-Chancellor

DR. C.D. DESHMUKH
1962-1967
10th Vice-Chancellor

DR. B.N. GANGULI
1967-1969
11th Vice-Chancellor

DR. K.N. RAJ
1969-1970
12th Vice-Chancellor

1922 से कुलपति

DR. SARUP SINGH
1971-1974
13th Vice-Chancellor

DR. R.C. MEHROTRA
1974-1979
14th Vice-Chancellor

PROF. GURBAKHSH SINGH
1980-1985
15th Vice-Chancellor

PROF. MOONIS RAZA
1985-1990
16th Vice-Chancellor

PROF. UPENDRA BAXI
1990-94
17th Vice-Chancellor

PROF. V.R. MEHTA
1995-2000
18th Vice-Chancellor

PROF. DEEPAK NAYYAR
2000-2005
19th Vice-Chancellor

PROF. DEEPAK PENTAL
2005-2010
20th Vice-Chancellor

PROF. DINESH SINGH
2010-2015
21st Vice-Chancellor

PROF. YOGESH K TYAGI
2016-2021
22nd Vice-Chancellor

PROF. YOGESH SINGH
2021 onwards
23rd Vice-Chancellor

दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा विश्व भर की विशिष्ट हस्तियों को प्रदान की गई मानद उपाधियों का वितरण

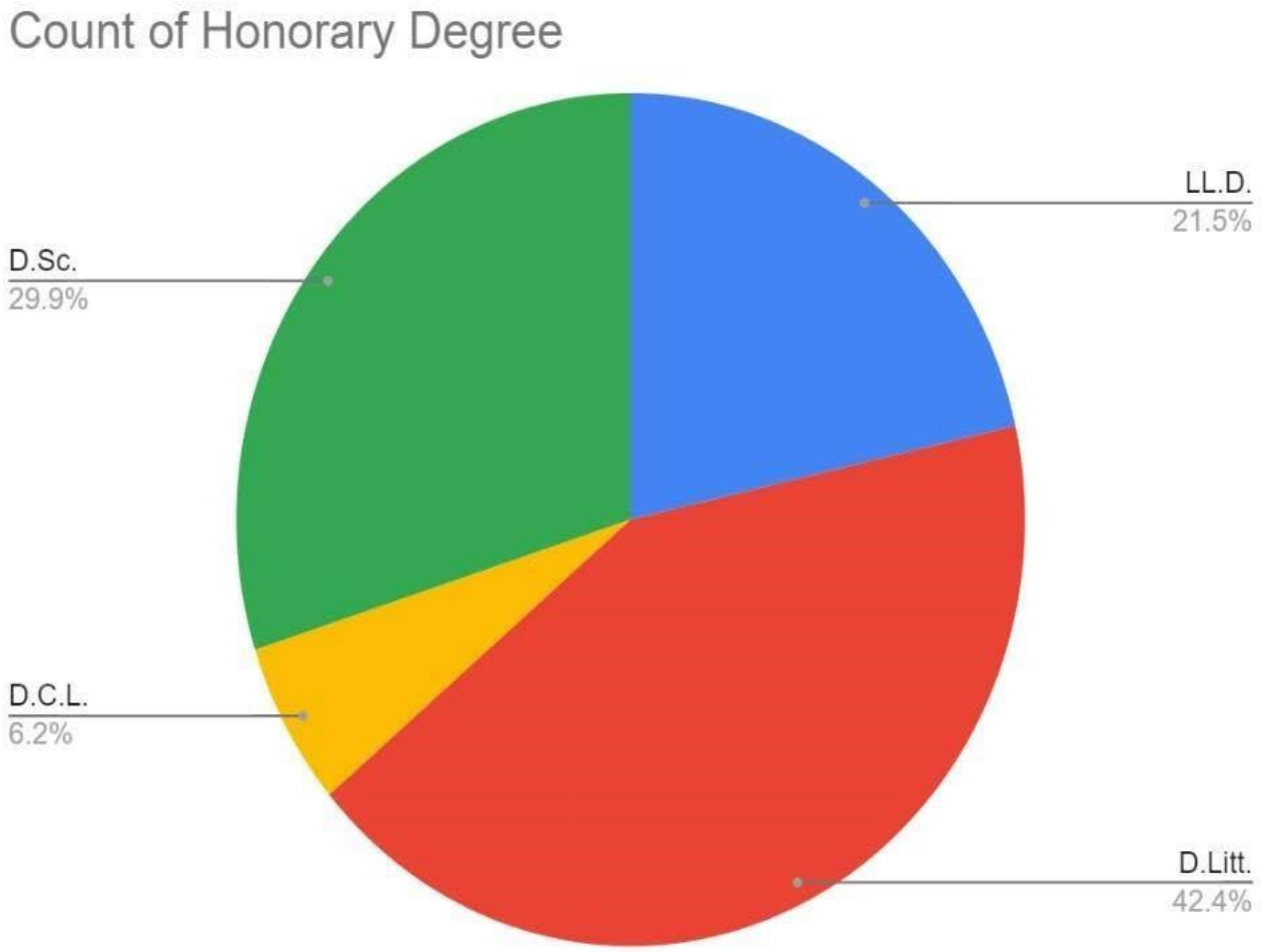

यह पाई चार्ट दुनिया भर में प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की जाने वाली मानद डिग्री के वितरण का प्रतिनिधित्व करता है। श्रेणियों में डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी), डॉक्टर ऑफ सिविल लॉ (डीसीएल), डॉक्टर ऑफ लॉ (एलएलडी), और डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी.लिट) शामिल हैं।

विभिन्न श्रेणियों में मानद उपाधियों का वितरण

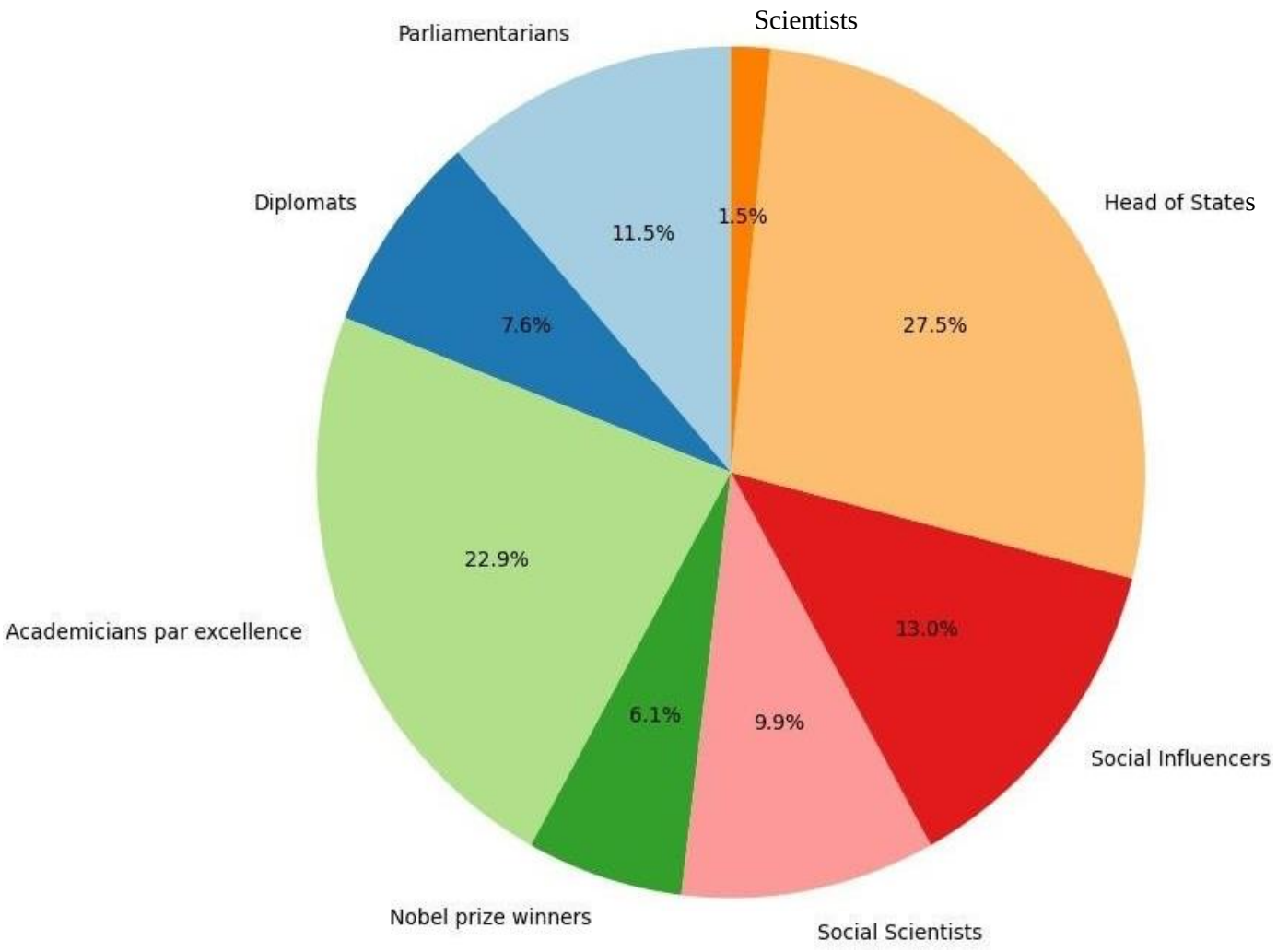

उपरोक्त पाइ चार्ट/वृत्ताकार आरेख विभिन्न श्रेणियों में मानद उपाधियों के वितरण को दर्शाता है। इन श्रेणियों में 'राष्ट्राध्यक्ष', 'शिक्षाविद उत्कृष्ट', 'सामाजिक प्रभावक', 'सांसद', 'सामाजिक वैज्ञानिक', 'राजनयिक', 'नोबेल पुरस्कार विजेता' और 'वैज्ञानिक' शामिल हैं। यह पाई चार्ट विभिन्न क्षेत्रों में मानद डिग्री के माध्यम से प्रदान की गई मान्यता का एक संक्षिप्त और प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

Honorary
Degree
Awardees

Helen Keller
Mahalanobis
Honorary Degree Awardees
Mr. Teresa me
Charles Darwin

Honorary
Degree
Awardees

सांसद

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
12 दिसंबर, 1934	डी.लिट.	माननीय सर फ्रैंक नोयस, सदस्य, गवर्नर जनरल की कार्यकारी परिषद उद्योग और श्रम विभाग के प्रभारी
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	श्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, शिक्षा मंत्री
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	राज कुमारी अमृत कौर, स्वास्थ्य मंत्री
7 मार्च, 1948	डी.सी.एल.	सर तेज बहादुर सप्रू, महामहिम की प्रिवी काउंसिल के सदस्य और कुछ समय के लिए वायसराय की कार्यकारी परिषद के विधि सदस्य
7 मार्च, 1948	डी.सी.एल.	सर एस. वरदाचरियार, फेडरल कोर्ट के न्यायाधीश, केंद्रीय वेतन आयोग और आयकर जांच आयोग के अध्यक्ष
7 मार्च, 1948	डी.सी.एल.	सर बी.एन. राव, कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और भारतीय संविधान सभा के संवैधानिक सलाहकार
30 नवंबर, 1951	डी.लिट.	डॉ. तारा चंद, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के शैक्षिक सलाहकार
5 दिसंबर, 1953	डी.सी.एल.	श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता कार्यकर्ता
5 दिसंबर, 1964	डी.एससी.	प्रो. पी.सी. महालनोबिस, एफ.आर.एस., कैबिनेट के मानद सांख्यिकीय सलाहकार, भारत सरकार, नई दिल्ली
23 फ़रवरी, 1966	एलएल.डी.	महामहिम श्री ग्युला कल्लाई, हंगरी पीपुल्स रिपब्लिक के काउंसिल ऑफ मिनिस्टर्स के अध्यक्ष
15 मई, 1973	डी.लिट.	डॉ. चिंतामण द्वारकानाथ देशमुख, दिल्ली, अर्थशास्त्री, सिविल सेवक
28 अगस्त, 1982	एलएल.डी.	जापान के महामहिम विदेश मंत्री योशियो सकुराउची
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	डॉ. जी. पार्थसारथी, नई दिल्ली, राजनयिक, लेखक, राजनीतिज्ञ
13 दिसंबर,1998	डी.लिट.	सरदार रौनक सिंह, स्वतंत्रता सेनानी, राजनीतिज्ञ
4 नवंबर, 2006	डी.लिट.	श्रीमती शीला दीक्षित, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

राजनयिक:

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	सर जॉन सार्जेंट, कुछ समय के शैक्षिक सलाहकार और सचिव, शिक्षा विभाग, भारत सरकार
5 नवंबर, 1951	डी.लिट.	जिंग-सी-लिन, भारत में चीनी सांस्कृतिक प्रतिनिधिमंडल के नेता
30 नवंबर, 1951	डी.सी.एल.	श्री गिरजा शंकर बाजपेयी, महासचिव, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
11 दिसंबर, 1954	डी.लिट.	महामहिम श्री अली असगर हिकमत, भारत में ईरान के राजदूत
31 अगस्त, 1956	एलएल.डी.	माननीय श्री न्यायमूर्ति वारेन, संयुक्त राज्य अमेरिका के मुख्य न्यायाधीश
13 अप्रैल, 1967	एलएल.डी.	महामहिम यू..एस.थांट, महासचिव, यू.एन.ओ.
26 मार्च, 1969	एलएल.डी.	न्यायाधीश मैनफ्रेड लाच्स, हेग में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश
25 जनवरी, 1971	एलएल.डी.	डॉ. क्लेरेंस विल्फ्रेड जेनक्स, महानिदेशक, आईएलओ जिनेवा
5 नवंबर, 1992	एलएल.डी.	डॉ. अर्पाद बोग्श, महानिदेशक विश्व बौद्धिक संपदा संगठन जिनेवा, स्विट्जरलैंड
5 जून, 1993	एलएल.डी.	न्यायमूर्ति इस्माइल महोमद, दक्षिण अफ्रीका के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश, लासोथे के अपीलीय न्यायालय के अध्यक्ष और नामीबिया के मुख्य न्यायाधीश

उत्कृष्ट शिक्षाविद

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
10 जनवरी, 1947	डी.एससी.	डॉ. हेरोल्ड शैपली, निदेशक, हार्वर्ड कॉलेज ऑब्र्जवेट्री, यू.एस.ए.
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	राव साहब एस.आर. रंगनाथन, दिल्ली विश्वविद्यालय, कुछ समय मद्रास और बनारस विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्ष और भारतीय पुस्तकालय संघ के अध्यक्ष,
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	श्री एन.वी. थंडानी, प्रधानाचार्य, हिंदू कॉलेज, दिल्ली
7 मार्च, 1948	डी.एससी.	सर शांति स्वरूप भटनागर, मानद प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
16 जनवरी, 1950	डी.एससी.	डॉ. एडवर्ड उहलर कैंडॉन, निदेशक, मानक ब्यूरो, वाशिंगटन, डी.सी., यू.एस.ए.
30 नवंबर, 1951	डी.सी.एल.	श्री अलादी कृष्णस्वामी अय्यर, अधिवक्ता, मद्रास
9 अप्रैल, 1955	डी.लिट.	डॉ. (सुश्री) हेलेन केलेर, प्रतिष्ठित अमेरिकी बहरे-अंधे लेखक और व्याख्याता
26 नवंबर, 1955	डी.लिट.	रेव कैनन-चार्ल्स ई.रेवेन, रेजिन्स कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्यातमशास्त्र के प्रोफेसर एमर्टिटस, यू.के.
17 दिसंबर, 1955	एलएल.डी.	डॉ. ग्रेसन लुईस किर्क, कोलंबिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष
2 जनवरी, 1964	डी.लिट.	प्रोफेसर ए. अबुबकर, यू.ए.आर.
2 जनवरी, 1964	डी.लिट.	प्रोफेसर (डॉ.) बॉरिस बॉरिसोविच प्रिओट्रोवस्की, यू.एस.एस.आर.
2 जनवरी, 1964	डी.लिट.	प्रोफेसर इब्राहिम पोरी डॉयोन्ड, इरान
2 जनवरी, 1964	डी.एससी.	प्रोफेसर सत्येंद्र नाथ बॉस, कोलकाता
11 फरवरी, 1964	एलएल.डी.	डॉ. चार्ल्स पी. रोमुलो, फिलिपिंस विश्वविद्यालय के अध्यक्ष
5 दिसंबर, 1964	एलएल.डी.	डॉ. ओलाइव आई रेडिक, निदेशक यूनाइटेड स्टेट्स एजुकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया, नई दिल्ली

22 दिसंबर, 1965	डी.एससी.	शिक्षाविद प्रोफेसर ब्लादिमीर अलेक्जेंड्रोविच फॉक (यू.एस.एस.आर.)
16 जनवरी, 1967	डी.एससी.	प्रोफेसर डोरोथी क्रोफुट हॉजकिन, यू.के.
16 जनवरी, 1967	डी.एससी.	प्रोफेसर शिक्षाविद, एम.वी. केल्डीस, यू.एस.एस.आर.
16 जनवरी, 1967	डी.एससी.	प्रोफेसर शिक्षाविद, ए.एम. प्रोखोरोव, यू.एस.एस.आर.
16 नवंबर, 1972	डी.लिट.	प्रोफेसर अवराम नोम चॉम्स्की, भाषाविज्ञान के प्रोफेसर, एमआईटी, यू.एस.ए.
19 फरवरी, 1974	डी.एससी.	प्रोफेसर फ्रेडरिक चैंपियन स्टीवर्ड, प्रोफेसर एमेरिटस, कोमेल विश्वविद्यालय,यू.एस.ए.
23 मार्च, 1980	डी.लिट.	श्रीमति वेल्थी हांगसिंगर फिशर, यू.एस.ए.
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	डॉ. (श्रीमती) महादेवी वर्मा, इलाहाबाद, हिंदी कवयित्री, निबंधकार, उपन्यासकार
28 जनवरी 1984	डी.लिट.	डॉ. मुल्क राज आनंद, मुंबई, उपन्यासकार, लघुकथा लेखक
13 दिसंबर 1998	डी.एससी.	प्रोफेसर एडवर्ड डब्ल्यू ने कहा, साहित्यिक सिद्धांतकार, उत्तर औपनिवेशिक आलोचक
17 जनवरी, 1953	डी.सी.एल.	प्रोफेसर डॉ. मरीन दफ्तरी, ईरान, इतिहासकार, अकादमिक
15 मई, 1973	डी.लिट.	प्रोफेसर अब्दुर रज्जाक, बांग्लादेश, शिक्षाविद, दार्शनिक
15 मई, 1973	डी.लिट.	महामहोपाध्याय गोपी नाथ कविराज, वाराणसी, संस्कृत विद्वान
15 मई, 1973	डी.लिट.	फ्रैंक रेमंड लेविस, यू.के.
15 मई, 1973	डी.लिट.	प्रोफेसर हाजीम नाकामुरा, जापान, इंडोलॉजिस्ट

नोबल पुरस्कार विजेता:

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
16 जनवरी, 1950	डी.एससी.	सर रॉबर्ट रॉबिन्सन, रॉयल सोसाइटी के अध्यक्ष, नोबल पुरस्कार विजेता
16 जनवरी, 1950	डी.एससी.	मैडम क्यूरी-जूलियट, नोबेल पुरस्कार विजेता
17 जनवरी, 1953	डी.एससी.	लॉर्ड बॉयड ऑर, (यूनाइटेड किंगडम), पोषण विशेषज्ञ, नोबेल पुरस्कार विजेता
2 जनवरी, 1964	डी.एससी.	सर विलियम लॉरेंस ब्रैग, यूके, भौतिक विज्ञानी, भौतिकी में नोबेल पुरस्कार
3 फ़रवरी, 1967	डी.एससी.	डॉ. लिनस कार्ल पॉलिंग, यूएसए, लिनुस कार्ल पॉलिंग एफआरएस एक अमेरिकी रसायनज्ञ, जैव रसायनज्ञ, केमिकल इंजीनियर, शांति कार्यकर्ता, लेखक और शिक्षक, नोबेल पुरस्कार विजेता
15 मई, 1973	डी.एससी.	सुब्रह्मण्यन चंद्रशेखर, संयुक्त राज्य अमेरिका, खगोल भौतिकीविद्, भौतिकी में नोबेल पुरस्कार विजेता
15 मई, 1973	डी.एससी.	डॉ. हरगोविंद खुराना, यूएसए, बायोकेमिस्ट, फिजियोलॉजी में नोबेल पुरस्कार विजेता
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	मदर टेरेसा, कलकत्ता, कैथोलिक नन, मिशनरी, मिशनरीज ऑफ चैरिटी के संस्थापक

कला और संस्कृति में प्रसिद्ध व्यक्तित्व:

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	श्री रविशंकर, नई दिल्ली, सितार वादक, संगीतकार, आध्यात्मिक नायक
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	श्री के. शंकर पिल्लई, नई दिल्ली, कर्नाटक संगीत गायक, संगीतकार
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	श्री अली अकबर खान, कैलिफोर्निया यूएसए, सरोद वादक, संगीतकार संगीत शिक्षक
13 दिसंबर, 1998	डी.लिट.	उस्ताद अमजद अली खान, सरोद वादक, संगीतकार
13 दिसंबर, 1998	डी.लिट.	डॉ. दाइसाकु इकेदा, बौद्ध दार्शनिक, लेखक, सोका गक्कई इंटरनेशनल के अध्यक्ष
13 दिसंबर, 1998	डी.लिट.	डॉ. (श्रीमती) गंगूबाई हंगल, भारतीय शास्त्रीय गायिका (हिंदुस्तानी संगीत)
4 नवंबर, 2006	डी.लिट.	श्री आर. के. लक्ष्मण, कार्टूनिस्ट
4 नवंबर, 2006	डी.लिट.	श्री अमिताभ बच्चन, फिल्म अभिनेता
22 अगस्त, 1952	डी.लिट.	श्री कवलम माधव पन्निकर, नाटककार, रंगमंच निर्देशक
17 जनवरी, 1953	डी.लिट.	मैडोना सेसिलिया मेरेलेस (ब्राजील), कवि, लेखक
17 जनवरी, 1953	डी.सी.एल.	डॉ. मोहम्मद हुसैन हेकल, मिस्र, पत्रकार, लेखक
15 मई, 1973	डी.लिट.	शिल्पाचार्य ज़ैनुल आबेदीन, बांग्लादेश, कलाकार
15 मई, 1973	डी.लिट.	श्री जैनेन्द्र कुमार, दिल्ली, कवि, लेखक
15 मई, 1973	डी.लिट.	श्रीमती अमृता प्रीतम, नई दिल्ली, भारतीय उपन्यासकार, पंजाबी साहित्य
15 मई, 1973	डी.लिट.	श्री सत्यजीत रे, कोलकाता, फिल्म निर्माता, लेखक
15 मई, 1973	डी.लिट.	श्रीमती एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी, मद्रास, कर्नाटक शास्त्रीय गायिका
15 मई, 1973	डी.लिट.	श्री आर. के. नारायण, मैसूर, लेखक, उपन्यासकार

सामाजिक वैज्ञानिक:

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
10 जनवरी, 1947	डी.एससी.	सर डी'आर्सी थॉम्पसन, राष्ट्रीय इतिहास के प्रोफेसर, सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	डॉ. वी. के. आर. वी. वी. आर. राव, प्रोफेसर अर्थशास्त्र, दिल्ली विश्वविद्यालय
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	डॉ. एस.एन. सेन, अभिलेखागार के निदेशक, कभी कलकत्ता विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर और मानद प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	डॉ. मोर्टिमर व्हीलर, पुरातत्व महानिदेशक, भारत सरकार।
16 फ़रवरी, 1957	एलएल.डी.	डॉ. अर्नोल्ड जोसेफ टॉयनबी, ब्रिटेन के प्रतिष्ठित विद्वान और इतिहासकार
4 दिसंबर, 1965	डी.लिट.	प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी, मानविकी में भारत के राष्ट्रीय प्रोफेसर
16 नवंबर, 1973	डी.एससी.	डॉ. मार्गरेट मोअद, क्यूरेटर, अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेशनल हिस्ट्री, यूएसए।
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय, नई दिल्ली, सामाजिक कार्यकर्ता, कला इतिहासकार, लेखिका
13 दिसम्बर, 1998	डी.लिट.	प्रो. अमर्त्य सेन, अर्थशास्त्री, दार्शनिक
13 दिसम्बर, 1998	डी.लिट.	प्रो. जॉन रॉल्स, राजनीतिक दार्शनिक
13 दिसम्बर, 1998	डी.लिट.	प्रो.के.एन.राज, अर्थशास्त्री
13 दिसम्बर, 1998	डी.लिट.	प्रोफेसर एम.एन.श्रीनिवास, समाजशास्त्री
13 दिसम्बर, 1998	डी.लिट.	प्रो. सरूप सिंह, इतिहासकार

राष्ट्राध्यक्ष:

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	पंडित जवाहरलाल नेहरू, भारत के प्रधानमंत्री
7 मार्च, 1948	डी.लिट.	डॉ. जाकिर हुसैन, कुलपति, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, ओखला, राष्ट्रपति
15 मार्च, 1952	डी.लिट.	श्रीमती अन्ना एलेनर रूज़वेल्ट, एफ.डी. की पत्नी रूजवेल्ट
24 फरवरी, 1954	एलएल.डी.	आरटी. माननीय लुई स्टीफन, सेंट लॉरेंट, कनाडा के प्रधानमंत्री
22 नवंबर, 1958	एलएल.डी.	आरटी. ऑनरबेल जॉन जॉर्ज, डिफेनबेकर, कनाडा के प्रधानमंत्री
26 दिसंबर, 1958	डी.लिट.	ऑनरबेल डॉ. वी क्वामे निरुमा, घाना के प्रधानमंत्री
22 जनवरी, 1959	डी.एससी.	एडिनबर्ग के महामहिम राजकुमार फिलिप ड्यूक
11 दिसंबर, 1959	एलएल.डी.	महामहिम ड्वाइट डी. आइजनहावर, संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति
4 नवंबर, 1960	डी.लिट.	डॉ. थियोडर ह्यूस, जर्मनी के संघीय गणराज्य के पूर्व राष्ट्रपति
25 नवंबर, 1961	डी.लिट.	सीनियर नाथन एम. पुसी, जर्मनी के संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति
28 नवंबर, 1962	एलएल.डी.	महामहिम डॉ. हेनरिक लुएल्के, जर्मनी के संघीय गणराज्य के राष्ट्रपति
8 जनवरी, 1962	एलएल.डी.	महामहिम राजकुमार नोरोडोम सिहानोक, कंबोडिया राज्य के प्रमुख
10 फरवरी, 1965	एलएल.डी.	महामहिम एम. जियोरीस पेम्पिडेन, फ्रांस के प्रधानमंत्री
13 फरवरी, 1965	एलएल.डी.	फ़िनलैंड गणराज्य के अध्यक्ष डॉ. उरहो कलेवा केखोनेन
5 अगस्त, 1965	एलएल.डी.	डॉ. अपोलो मिल्टन ओबेटे, युगांडा के प्रधानमंत्री
21 नवंबर, 1967	एलएल.डी.	महामहिम डॉ. कर्ट जॉर्ज किसिंजर, जर्मनी के संघीय गणराज्य के चांसलर
12 दिसंबर, 1969	एलएल.डी.	मॉरीसस के प्रधानमंत्री, महामहिम सर शिवसागर रामगुलाम
9 अक्टूबर, 1972	एलएल.डी.	लॉर्ड हेल्शम, इंग्लैंड के लॉर्ड चांसलर
13 अक्टूबर, 1973	एलएल.डी.	महामहिम बिरोंद्रा बीर बिक्रम शाह देव, नेपाल के राजा
7 मार्च, 1975	एलएल.डी.	आरटी. माननीय रतु सर कामिसे मारा, फिजी के प्रधानमंत्री

20 फ़रवरी 1976	एलएल.डी.	महामहिम तौफ़'शाउ टुबौ IV, टोंगा के राजा
29 जनवरी, 1981	एलएल.डी.	महामहिम जोस लोपेक्स पोर्टिलो, मेक्सिको के राष्ट्रपति
28 जनवरी, 1984	डी.लिट.	डॉ. मनमोहन सिंह, नई दिल्ली, अर्थशास्त्री, भारत के प्रधानमंत्री (2004-2014)
29 सितम्बर 1984	डी.एससी.	न्यायमूर्ति एम. हिदायतुल्लाह भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति
27 जनवरी, 1987	एलएल.डी.	महामहिम डॉ. एलन गार्सिया, प्रेसिडेंटो एफपेरू (पूर्व चांसलर, दिल्ली विश्वविद्यालय)
19 मार्च, 1987	डी.लिट.	थाईलैंड की महामहिम राजकुमारी महा चक्री सिरिंधोर्न
10 जून, 1990	डी.लिट.	महामहिम कृष्ण प्रसाद भट्टाराई, नेपाल के प्रधानमंत्री
11 अप्रैल, 1991	डी.लिट.	महामहिम डॉ. हंगरी गणराज्य के राष्ट्रपति अर्पाद गोंक्ज़
26 नवंबर, 1995	एलएल.डी.	महामहिम हेज जी. गिंगोब, नांबिया के प्रधानमंत्री
17 फ़रवरी 1997	एलएल.डी.	सेनेगल के राष्ट्रपति महामहिम अब्दुल डियूफ़
17 नवंबर 1997	डी.एससी.	महामहिम डॉ. एमिल कॉन्स्टेंटिनेस्कु, रोमानिया के राष्ट्रपति
13 दिसंबर 1998	डी.लिट.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, एयरोस्पेस इंजीनियर, भारत के 11वें राष्ट्रपति
27 जनवरी, 2003	डी.लिट.	इस्लामिक ईरान के राष्ट्रपति महामहिम होजातोलेस्टम सैय्यद मोहम्मद खातमी
21 जनवरी 2008	डी.लिट.	आदरणीय श्रीमान. गॉर्डन ब्राउन, यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री
4 नवंबर, 2010	डी.लिट.	प्रोफेसर बिंगु वा मुथारिका, मलावी के माननीय राष्ट्रपति
31 मार्च, 2012	डी.लिट.	सुश्री डिल्मा वाना रूसेफ, ब्राज़ील की माननीय राष्ट्रपति

वैज्ञानिक

दिनांक	मानद उपाधि	सम्मानित व्यक्ति
22 मार्च, 1955	डी.एससी.	सर सेसिल पेम्ब्रे ग्रे वेकले, रॉयल कॉलेज ऑफ़ सर्जन्स, इंग्लैंड के अध्यक्ष
15 मई, 1973	डी.एससी.	प्रोफेसर दौलत सिंह कोठारी, दिल्ली, भौतिक विज्ञानी

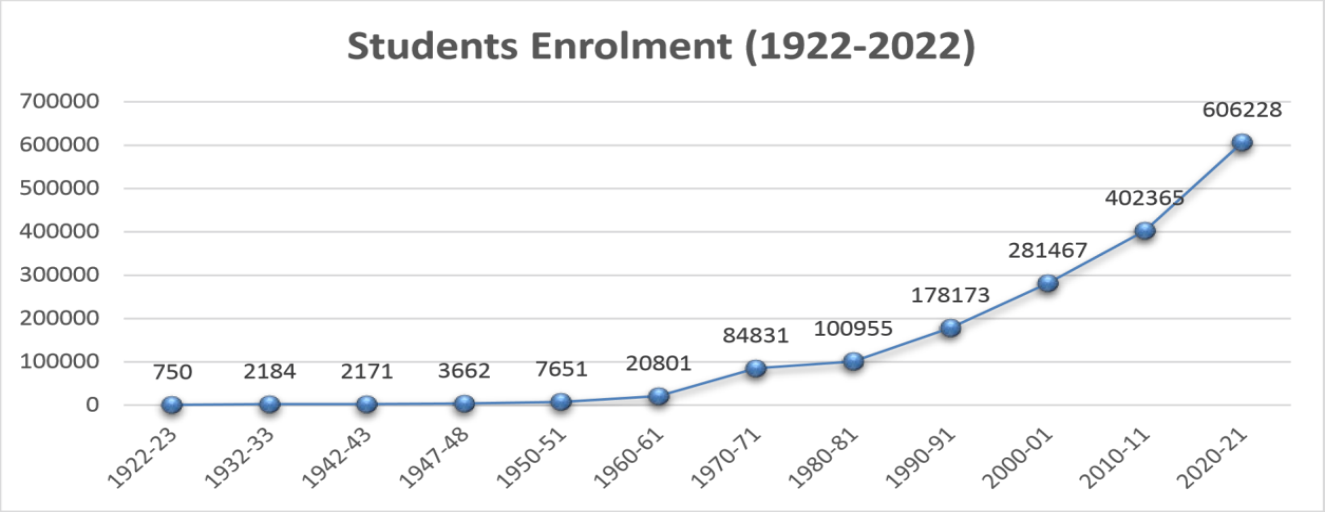

यह एक प्रत्यक्ष उत्तरवर्ती लाइन चार्ट है। जो पिछले 100 वर्षों में कुल छात्र नामांकन का व्यापक डेटा प्रस्तुत करता है। यह चार्ट कुल छात्र संख्या में आरोह-अवरोह सम्बन्धित और रुझानों पर एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है, जिससे दीर्घकालिक नामांकन पैटर्न की स्पष्ट समझ मिलती है।

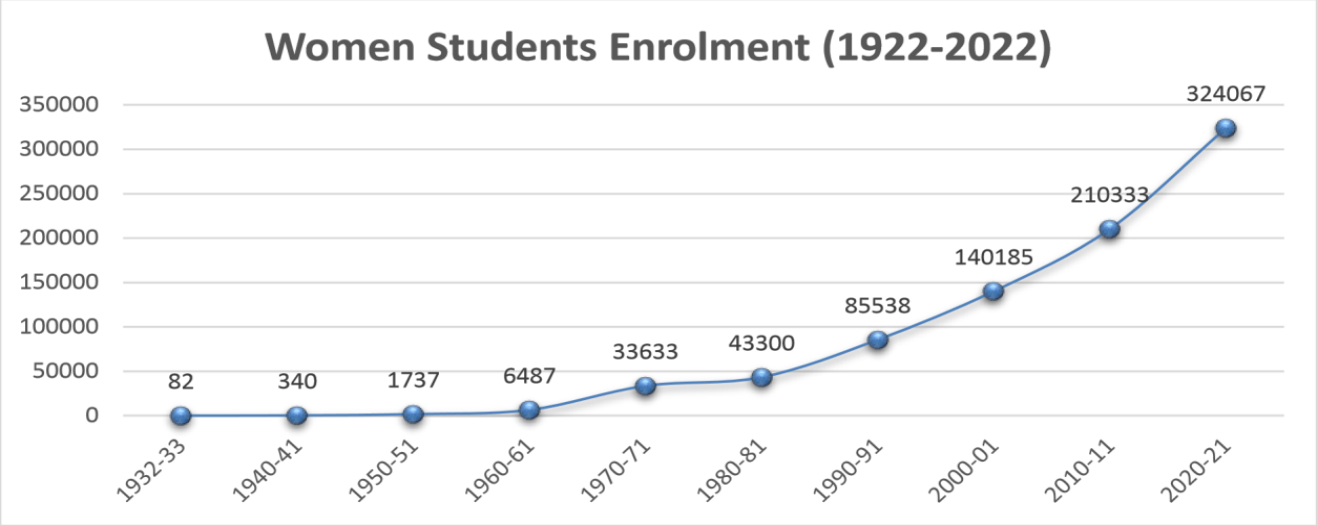

यह लाइन चार्ट पिछले 100 वर्षों में महिला उच्च शिक्षा नामांकन में प्रगति को चित्रित करते हुए, उपरोक्त वर्षों में महिलाओं के छात्र नामांकन डेटा की कल्पना करता है। यह उच्च शिक्षा में नामांकित महिलाओं के प्रतिशत में रुझानों और परिवर्तनों का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

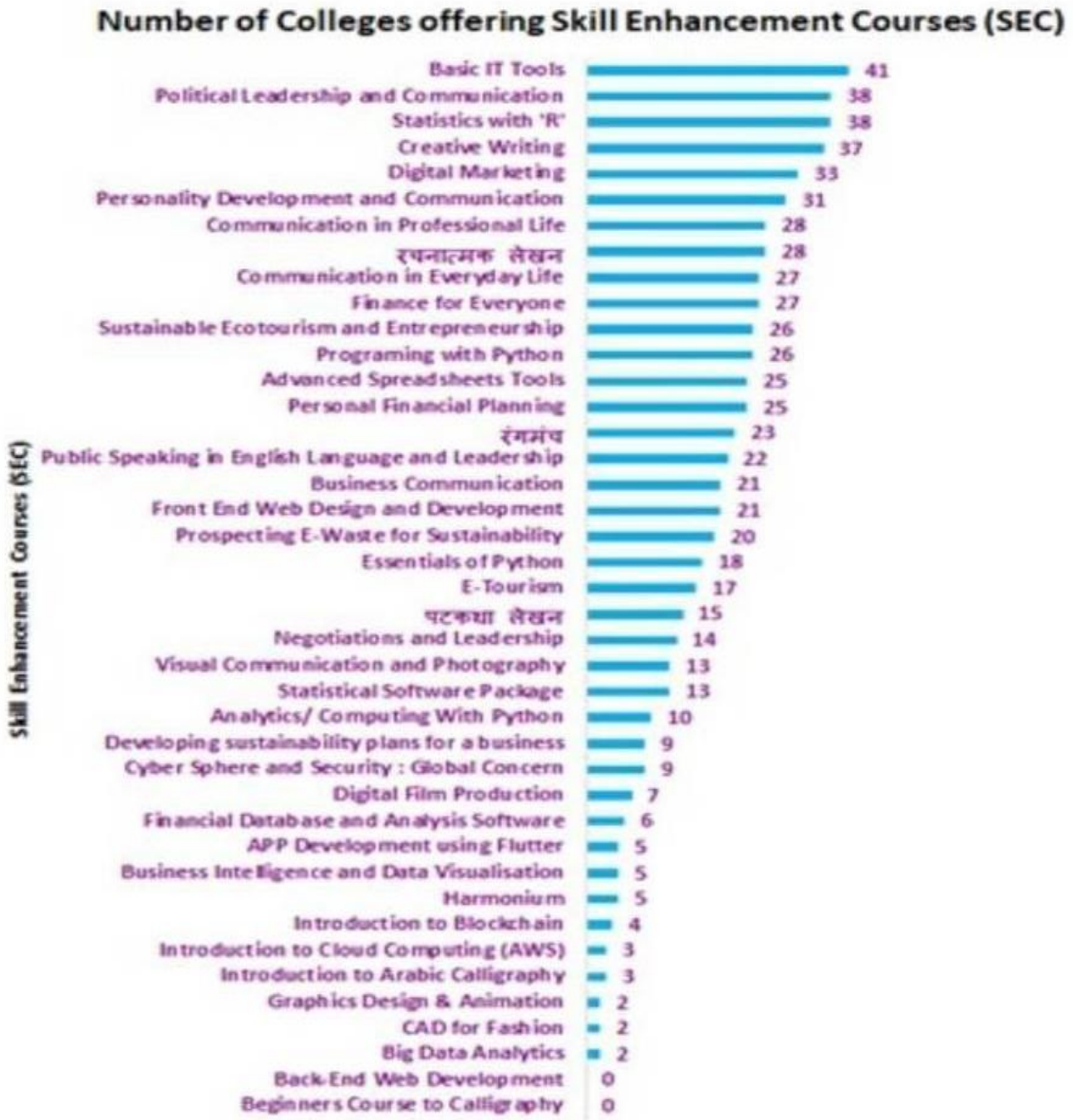

यह ग्राफ दिल्ली विश्वविद्यालय के तहत कॉलेजों की संख्या को दर्शाने वाला ग्राफ है जो एसईसी (कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम) प्रदान करते हैं। प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व आरेख विश्वविद्यालय में इन पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाले कॉलेजों के भाजन प्रदान करते हैं, विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम चयन और कॉलेज वरीयताओं के बारे में सूचित निर्णय लेने में सहायता करते हैं।

यह आरेख दिल्ली विश्वविद्यालय के तहत कॉलेजों की संख्या को दर्शाता है जो वीएसी (मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम) प्रदान करते हैं। प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व आरेख विश्वविद्यालय के भीतर इन पाठ्यक्रमों की पेशकश करने वाले कॉलेजों का श्रेणी विभाजन प्रदान करता हैं, जो विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम चयन और कॉलेज वरीयताओं के बारे में सूचित निर्णय लेने में सहायता करते हैं।

दशकों में स्थापित विभाग

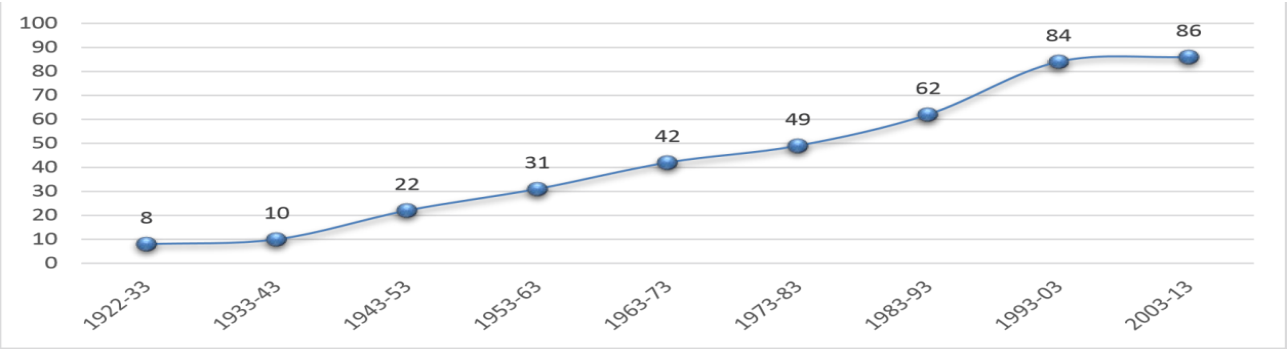

वर्तमान डेटा विज़ुअलाइज़ेशन को एक लाइन चार्ट द्वारा दर्शाया गया है, जो कई दशकों के दौरान विभिन्न विभागों की स्थापना को प्रदर्शित करता है। यह चार्ट विभागों के विकास और विकास पर एक कालानुक्रमिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है, जो संगठनात्मक संरचनाओं के ऐतिहासिक विकास में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

विगत वर्षों में पुरस्कारों और संचयी पुरस्कारों की संख्या

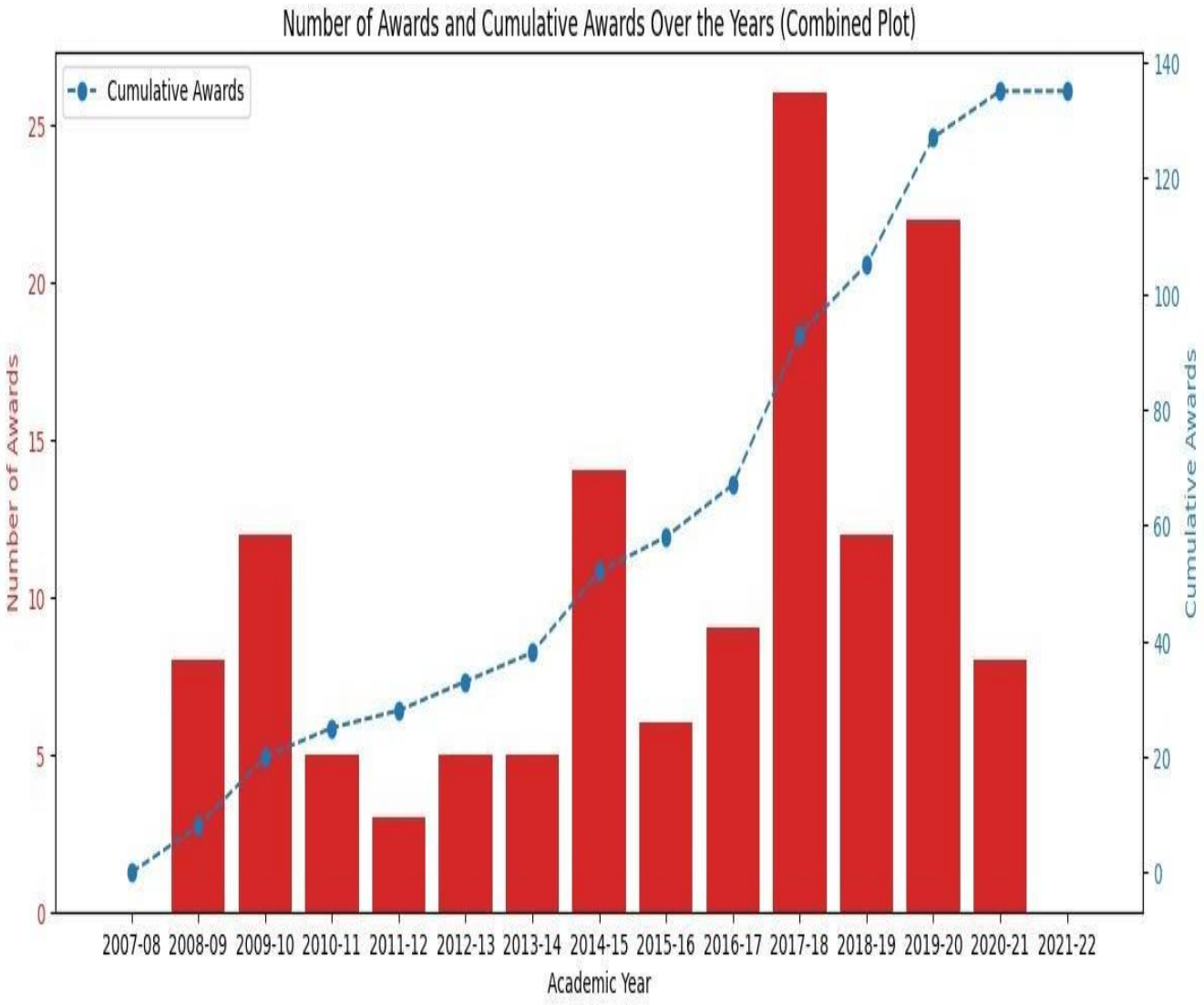

यह ग्राफ एक दोहरी-अक्ष मोड को नियोजित करता है, जो वर्षों में पुरस्कारों और संचयी पुरस्कारों की संख्या को चित्रित करने के लिए एक बार चार्ट और एक लाइन चार्ट को मूल रूप से एकीकृत करता है। बार ग्राफ गतिशील रूप से प्रत्येक प्रासंगिक वर्ष के लिए गिनती प्रदर्शित करता है, जबकि साथ में लाइन चार्ट संचयी टॉफल को दिखाता है, जो डेटा का व्यापक दृश्य प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

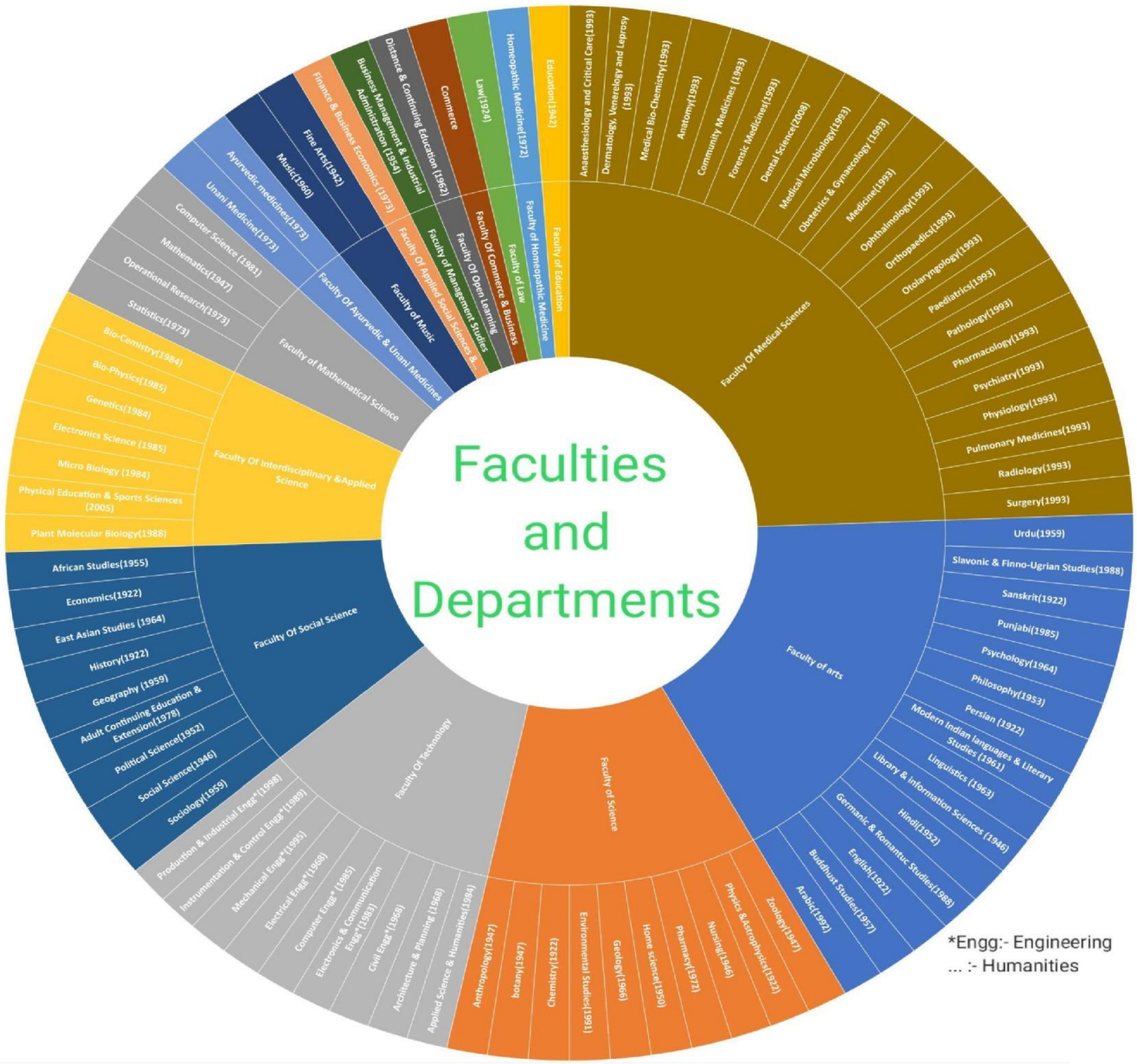

यह सचित्र प्रतिनिधित्व दिल्ली विश्वविद्यालय में विभिन्न विभागों और संकायों को दर्शाता है। यह उदाहरण दिल्ली विश्वविद्यालय के **100 वर्षों की अवधि** में विभिन्न संकायों के तहत विभिन्न विभागों की शुरूआत के वर्ष पर भी प्रकाश डालता है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज

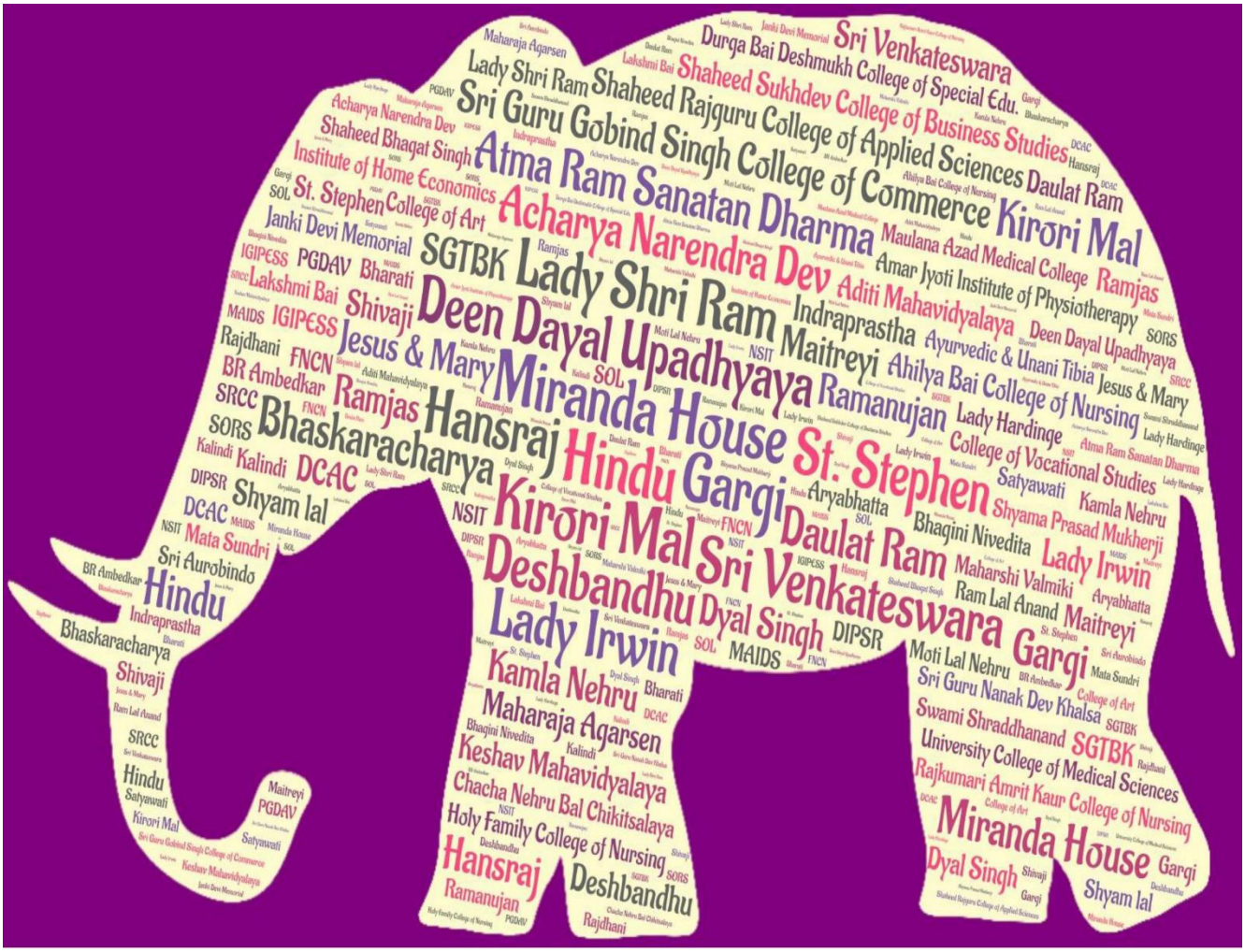

कॉलेजों का भौगोलिक विस्तार

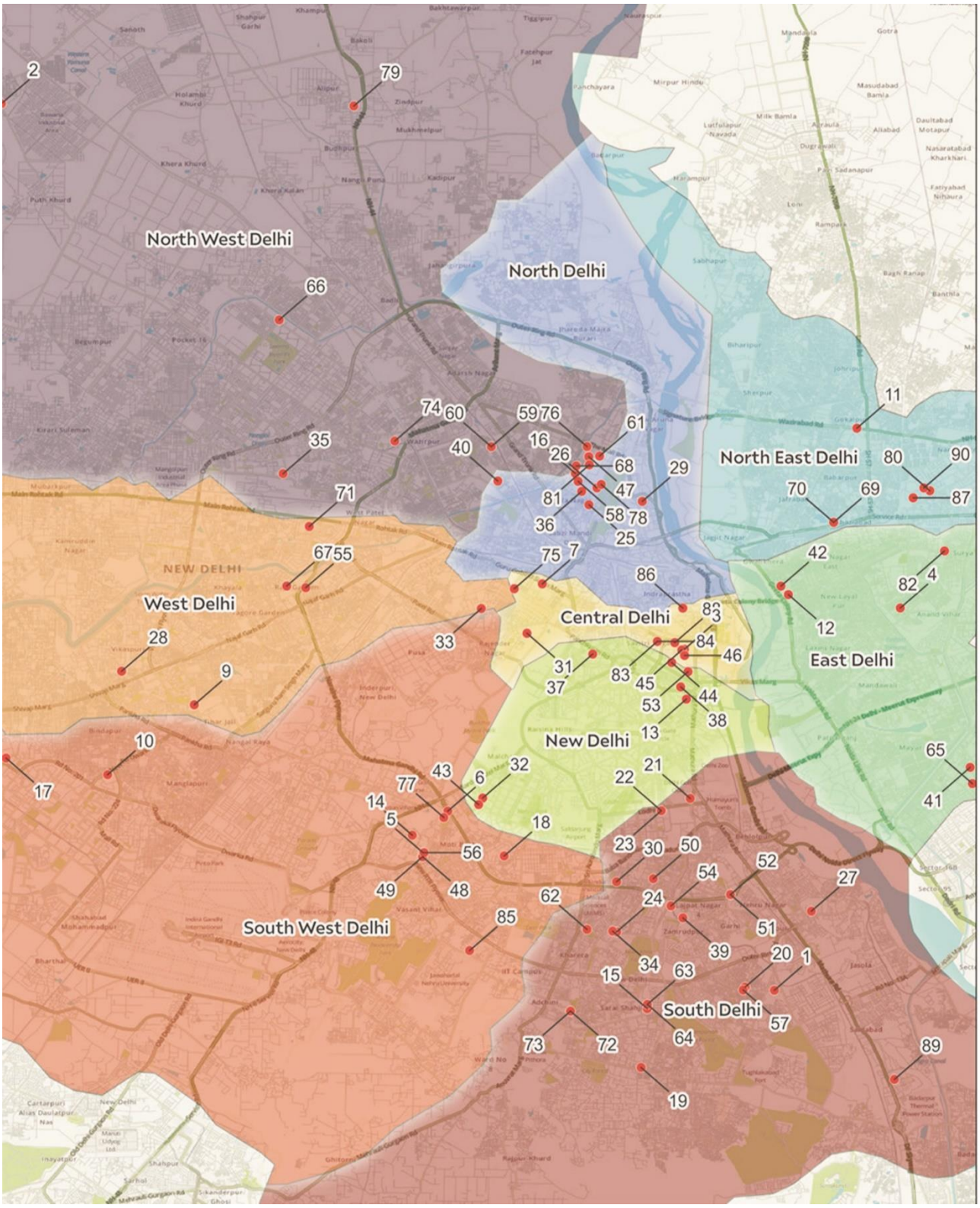

1.	**आचार्य नरेंद्र देव महाविद्यालय**
2.	अदिति महाविद्यालय
3.	अहिल्या बाई कॉलेज ऑफ नर्सिंग
4.	अमर ज्योति इंस्टिट्यूट ऑफ फिजियोथेरेपी
5.	आर्यभट्ट महाविद्यालय
6.	आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय
7.	आयुर्वेदिक और यूनानी तिब्बिया महाविद्यालय
8.	भगिनी निवेदिता महाविद्यालय
9.	भारती महाविद्यालय
10.	भास्कराचार्य अनुप्रयुक्त विज्ञान महाविद्यालय
11.	भीम राव अंबेडकर महाविद्यालय
12.	चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय
13.	कला महाविद्यालय
14.	नर्सिंग कॉलेज, आर्मी अस्पताल (अनुसंधान और रेफरल)
15.	व्यवसायिक अध्ययन महाविद्यालय
16.	दौलत राम महाविद्यालय
17.	दीनदयाल उपाध्याय महाविद्यालय
18.	दिल्ली कला और वाणिज्य महाविद्यालय
19.	दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्युटिकल साइंसेज एंड रिसर्च
20.	देशबंधु महाविद्यालय
21.	दुर्गाबाई देशमुख विशेष शिक्षा महाविद्यालय
22.	दयाल सिंह महाविद्यालय
23.	दयाल सिंह सांध्य महाविद्यालय
24.	गार्गी महाविद्यालय
25.	हंसराज महाविद्यालय
26.	हिंदू महाविद्यालय
27.	होली फैमिली कॉलेज ऑफ नर्सिंग
28.	इंदिरा गांधी शारीरिक शिक्षा और खेल विज्ञान संस्थान
29.	इंद्रप्रस्थ महिला विश्वविद्यालय
30.	गृह-आर्थिकी संस्थान
31.	जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय
32.	जीसस और मैरी महाविद्यालय
33.	कालिंदी महाविद्यालय
34.	कमला नेहरू महाविद्यालय
35.	केशव महाविद्यालय
36.	किरोड़ी मल महाविद्यालय
37.	लेडी हार्डिंग चिकित्सा महाविद्यालय
38.	लेडी इरविन महाविद्यालय
39.	लेडी श्री राम महिला महाविद्यालय
40.	लक्ष्मीबाई महाविद्यालय
41.	महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय
42.	महर्षि वाल्मीकि शिक्षा महाविद्यालय
43.	मैत्रेयी महाविद्यालय
44.	माता सुंदरी महिला महाविद्यालय
45.	मौलाना आजाद दंत विज्ञान संस्थान
46.	मौलाना आजाद चिकित्सा महाविद्यालय
47.	मिरांडा हाउस
48.	मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय
49.	मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय (सांध्य)
50.	नेहरू होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल
51.	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय
52.	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय (सांध्य)
53.	पंडित दीनदयाल उपाध्याय शारीरिक विकलांगता (दिव्यांगजन) राष्ट्रीय संस्थान
54.	राजधानी महाविद्यालय
55.	राम लाल आनंद महाविद्यालय
56.	राजकुमारी अमृत कौर कॉलेज ऑफ नर्सिंग
57.	रामानुजन महाविद्यालय
58.	रामजस महाविद्यालय
59.	सत्यवती महाविद्यालय
60.	सत्यवती महाविद्यालय (सांध्य)
61.	मुक्त अधिगम स्कूल
62.	पुनर्वास विज्ञान विद्यालय
63.	शहीद भगत सिंह महाविद्यालय
64.	शहीद भगत सिंह महाविद्यालय (सांध्य)
65.	शहीद राजगुरु महिला अनुप्रयुक्त विज्ञान महाविद्यालय
66.	शहीद सुखदेव व्यवसायिक अध्ययन महाविद्यालय
67.	शिवाजी महाविद्यालय
68.	श्री राम वाणिज्य महाविद्यालय
69.	श्याम लाल महाविद्यालय
70.	श्याम लाल महाविद्यालय (सांध्य)
71.	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय
72.	श्री अरबिंदो महाविद्यालय
73.	श्री अरबिंदो महाविद्यालय (सांध्य)
74.	श्री गुरु गोबिंद सिंह वाणिज्य महाविद्यालय
75.	श्री गुरु नानक देव खालसा महाविद्यालय
76.	श्री गुरु तेग बहादुर खालसा महाविद्यालय
77.	श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय
78.	सेंट स्टीफन महाविद्यालय
79.	स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय
80.	यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिकल साइंसेज
81.	वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट
82.	विवेकानंद महाविद्यालय
83.	जाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय
84.	जाकिर हुसैन दिल्ली महाविद्यालय (सांध्य)
85.	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान
86.	कस्तूरबा अस्पताल
87.	मानव व्यवहार और संबद्ध विज्ञान संस्थान
88.	गोविंद बल्लभ पंत अस्पताल
89.	अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान
90.	फ्लोरेंस नाइटिंगेल कॉलेज ऑफ नर्सिंग

केंद्र और संस्थान

1.	कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान केंद्र	
2.	डॉ. बी.आर. अंबेडकर जैव-चिकित्सा केंद्र	
3.	भारत-कनाडा अध्ययन केंद्र	
4.	संसूचक और संबंधित सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी केंद्र	
5.	दिव्यंगजन अध्ययन केंद्र	
6.	वैश्विक अध्ययन केंद्र	
7.	क्लस्टर नवाचार केंद्र	
8.	अवक्रमित पारिस्थितिकी प्रणालियां पर्यावरण प्रबंधन केंद्र	
9.	फसल पादप आनुवंशिक परिवर्तन केंद्र	
10.	संक्रामक रोग अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण नवाचार केंद्र	
11.	पर्वत और पर्वतीय पर्यावरण अंतःविषयक अध्ययन केंद्र	
12.	विज्ञान शिक्षा और संचार केंद्र	
13.	हिमालय अध्ययन केंद्र	
14.	दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म	
15.	दिल्ली स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी एंड गवर्नेंस	
16.	दिल्ली स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ	
17.	दिल्ली स्कूल ऑफ क्लाइमेट चेंज एंड सस्टेनेबिलिटी एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट	
18.	दिल्ली कौशल संवर्धन और उद्यमिता विकास स्कूल	
19.	दिल्ली स्कूल ऑफ एनालिटिक्स	
20.	दिल्ली स्कूल ऑफ ट्रांसनेशनल अफेयर्स	
21.	पादप जीनोमिक्स अंतर-विषयक केंद्र	
22.	ओपन लर्निंग डेवलपमेंट सेंटर	
23.	प्रोफेसर डी.एस. कोठारी सेंटर फॉर साइंस, एथिक्स एंड एजुकेशन	
24.	विश्वविद्यालय विज्ञान इंस्ट्रूमेंटेशन केंद्र	
25.	महिला उन्नत अध्ययन और विकास केंद्र	
26.	आजीवन अध्ययन संस्थान	
27.	आसूचना और संचार संस्थान	
28.	उच्च शिक्षा व्यावसायिक विकास केंद्र	
29.	उद्यमिता और आजीविका उन्मुख कार्यक्रम केंद्र	
30.	साइबर सुरक्षा और कानून संस्थान	
31.	सूचना विज्ञान और संचार संस्थान	
32.	आजीवन शिक्षा संस्थान	
33.	नैनो चिकित्सा विज्ञान संस्थान	

हॉल और छात्रावास

क्र.सं.	छात्रावास का नाम	छात्रावास का प्रकार
1	आंबेडकर-गांगुली महिला छात्रावास	महिला
2	केंद्रीय शिक्षा संस्थान छात्रावास	सह-शिक्षा
3	डी.एस. कोठारी छात्रावास	पुरूष
4	समाज कार्य विभाग छात्रावास	सह-शिक्षा
5	ग्वायर हॉल	पुरूष
6	अंतर्राष्ट्रीय महिला छात्रावास	महिला
7	अंतर्राष्ट्रीय छात्रावास	पुरूष
8	जुबली हॉल	पुरूष
9	मानसरोवर छात्रावास	पुरूष
10	मेघदूत छात्रावास	महिला
11	उत्तर-पूर्वी महिला छात्रावास	महिला
12	स्नातकोत्तर पुरुष छात्रावास	पुरूष
13	राजीव गांधी स्नातकोत्तर महिला छात्रावास	महिला
14	स्नात-पूर्व महिला छात्रावास	महिला
15	विश्वविद्यालय महिला छात्रावास	पुरूष
16	वी.के.आर.वी. राव छात्रावास	पुरूष
17	अरावली स्नातकोत्तर पुरुष छात्रावास	पुरूष
18	सारामती स्नातकोत्तर पुरुष छात्रावास	पुरूष
19	गीतांजलि छात्रावास	महिला
20	डब्ल्यूयूएस विश्वविद्यालय छात्रावास	महिला

लाइफ@कैंपस

लाइफ@कैंपस

अभिनव विकास

इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस (आईओई)

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने चार सितंबर, 2019 को भेजे अपने पत्र के तहत विश्वविद्यालय को प्रतिष्ठित संस्थान (आईओई) के तौर पर मान्यता दी थी। दिल्ली विश्वविद्यालय और शिक्षा मंत्रालय के बीच 27 फरवरी, 2020 को समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। समझौता-ज्ञापन के आधार पर, शिक्षा मंत्रालय ने 02 मार्च, 2020 को एक अधिसूचना जारी की, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय को "इंस्टीट्यूशन ऑफ एमिनेंस" घोषित किया गया।

आईओई विजन

हम निम्नलिखित आयामों के संदर्भ में हमारे विश्वविद्यालय के लिए श्रेष्ठता को परिभाषित करते हैं:

ज्ञान के निर्माता: हमारा लक्ष्य सभी डोमेन में नवीन ज्ञान का उत्पादक बनना है।

विद्यार्थियों की उच्च गुणवत्ता: हम हर साल एक प्रमुख संस्थान के रूप में स्वीकार्य प्रत्येक छात्र की प्रतिभा को पहचानने, पोषित करने और निखारने का प्रयास करते हैं और उन्हें बड़े पैमाने पर समाज, राष्ट्र और दुनिया के प्रति सार्थक योगदान देने में सक्षम बनाते हैं। वर्तमान में हम 101 देशों से अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों को प्राप्त करते हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है। प्रासंगिकता: विश्वविद्यालय सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले अनुसंधान-संचालित संस्थान होने के लिए प्रतिबद्ध है जो सामाजिक कल्याण को बढ़ाने के साथ-साथ दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में से एक बनने के लिए अकादमिक जीवन का उपयोग करता है।

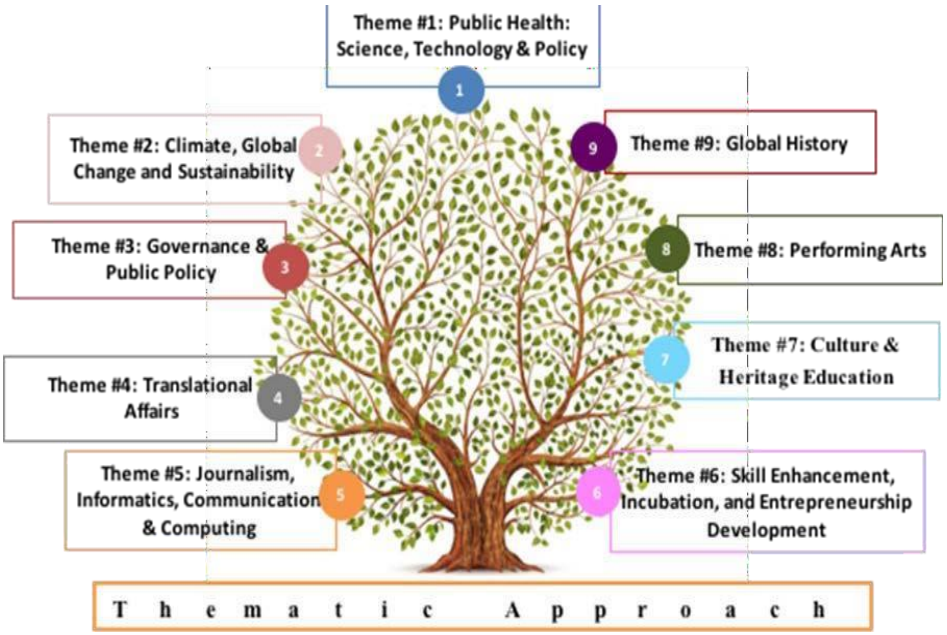

विषयगत दृष्टिकोण

विश्वविद्यालय ने नौ प्रमुख विषयों/कार्यक्रमों पर काम शुरू करने का प्रस्ताव किया है और प्रत्येक विषय को एक समर्पित संस्थान-स्कूल/संस्थान/केंद्र/किसी अन्य नामकरण के तहत कवर किया जाएगा। अधिकांश विषय कई उप-विषयों के समामेलन का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विभिन्न संकायों या विभागों द्वारा उभरे और प्रस्तावित किए गए थे।

डिजिटल पहल

विश्वविद्यालय हमेशा विद्यार्थियों के हित में बदलाव के लिए ग्रहणशील रहा है। जैसा कि डिजिटलीकरण विश्व स्तर पर शैक्षणिक संस्थानों का एक हिस्सा बन गया है, विश्वविद्यालय ने ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वनडीयू कार्यक्रम शुरू किया है। संपूर्ण डिजिटल संसाधनों तक दूरस्थ पहुंच प्रदान करने के लिए पुस्तकालय सेवाओं को अद्यतन किया गया था। नेत्रहीन विकलांग विद्यार्थियों के लिए वेबिनार सहित विद्यार्थियों को कौशल ब्रिजिंग और अप-स्किलिंग के लिए वेबिनार आयोजित किए गए थे। लगभग दो लाख विद्यार्थियों को शामिल करने वाले सभी विज्ञापन-मिशन 2021-22 में 100% निजी संपर्क रहित और ऑनलाइन मोड में आयोजित किए गए थे। यहां तक कि हाल के वर्षों में भर्ती प्रक्रिया को सरल बनाया गया है और ऑनलाइन मोड में आयोजित किया गया है।

ओपन बुक एग्जामिनेशन (ओबीई)

विश्वविद्यालय ने 2020 में ओपन बुक और ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करके मूल्यांकन प्रणाली में अग्रणी काम किया। कोविड-19 महामारी ने मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीकों की आवश्यकता पैदा कर दी। विश्वविद्यालय ओबीई मोड में परीक्षा आयोजित करने वाला देश का पहला उच्च शिक्षा संस्थान बन गया। विश्वविद्यालय के शिक्षण स्टाफ ने भी 2020 में पहली बार ऑनलाइन कक्षाएं, सम्मेलन और वेबिनार और लिपियों के 100% ऑनलाइन मूल्यांकन आयोजित करके प्रौद्योगिकी के अनुकूल बनाया।

समर्थ ई-गोव

समर्थ परियोजना शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की शीर्ष 10 आईसीटी पहलों में से एक है। समर्थ "विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक खुला स्रोत, खुला मानक सक्षम मजबूत, सुरक्षित, मापनीय और विकासवादी प्रक्रिया स्वचालन इंजन है। समर्थ ई-गोव को दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा भारत भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए डिजाइन और विकसित किया गया है ताकि उन्हें कागज, अविश्वसनीय तृतीय-पक्ष ईआरपी सिस्टम से एक ऐसी प्रणाली में स्थानांतरित करने में मदद मिल सके जो अत्यधिक सुरक्षित, विश्वसनीय और मापनीय हो। समर्थ ईगोव सूट में सॉफ्टवेयर मॉड्यूल शामिल हैं जो किसी भी डिवाइस पर वेब इंटरफेस के माध्यम से अपने प्रमुख हितधारकों, जैसे संकाय, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को सेवाओं तक 24/7 पहुंच प्रदान

करके अपने संचालन को डिजिटल बनाने के लिए एचईआई के विभिन्न कार्यों को लक्षित और स्वचालित करते हैं। समर्थ को क्लाउड के माध्यम से सभी एचईएलआई को एक प्रबंधित सॉफ़्टवेयर में एक सेवा मॉडल के रूप में पेश किया जाता है। अब तक, समर्थ 47 विश्वविद्यालयों (40 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों सहित), 2 एनआईटी, 2 आईआईएसईआर, 1 आईआईआईटी, 1 आईआईएम और 20 टीईक्यूआईपी-III संस्थानों सहित 6 राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में पूरक है। दूसरे चरण में समर्थ को देश के 100 उच्च शिक्षा संस्थानों में लागू किया जाना है।

युक्ति (युवा भारत का ज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार द्वारा कोविड से मुकाबला) पोर्टल

शिक्षा मंत्रालय ने 12 अप्रैल 2020 को एक वेब-पोर्टल युक्ति (यंग इंडिया कॉम्बेटिंग कोविड विद नॉलेज, टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन) लॉन्च किया। पोर्टल का उद्देश्य कोविड-19 चुनौतियों के विभिन्न आयामों को समग्र और व्यापक तरीके से कवर करना है। इसमें शिक्षाविदों में संस्थानों की विभिन्न पहलों और प्रयासों, मुख्य रूप से कोविड से संबंधित अनुसंधान, संस्थानों द्वारा सामाजिक पहल और विद्यार्थियों की कुल भलाई के लिए किए गए उपायों को शामिल किया गया। युक्ति पोर्टल के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, विश्वविद्यालय ने व्यापक ई-लर्निंग सुनिश्चित करने, नियोजन और इंटर्नशिप के लिए सहायता प्रदान करने और विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सभी पर्याप्त कदम उठाए हैं।

पेटेंट

विश्वविद्यालय ने 2014 में अनुसंधान परिषद में बौद्धिक संपदा अधिकार प्रकोष्ठ की स्थापना की। यह पेटेंट दाखिल करने और रखरखाव की सुविधा के लिए बनाया गया था। इसके अतिरिक्त, पेटेंट दायर करने और सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए गए हैं और विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए एक पेटेंट निधि स्थापित की गई है। अब तक कुल लगभग 250 पेटेंट दायर किए गए हैं और 2017 से 2021 तक कुल 21 पेटेंट दिए गए हैं

साझेदार विश्वविद्यालयों के देश

अंतर्राष्ट्रीय संबंध कार्यालय का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग स्थापित करना है। विश्वविद्यालय ने वर्तमान में विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ लगभग 90 समझौता-ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं और यह उच्च शिक्षा संस्थानों के कई नेटवर्क का सदस्य है जैसे, यूनिवर्सिटास 21, एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटीज, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ यूनिवर्सिटीज, आदि। अकादमिक सहयोग, यूरोपीय संघ से वित्त पोषण के साथ परियोजनाओं के तहत एचई और अंतर्राष्ट्रीय क्रेडिट गतिशीलता के नेटवर्क की सदस्यता कई और परियोजनाएं विश्वविद्यालय को स्नातक, स्नातकोत्तर स्तर और शोधार्थियों के स्तर पर प्रत्येक वर्ष एक से दो सेमेस्टर के लिए विनिमय विद्यार्थियों की मेजबानी करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

विश्वविद्यालय के कई विद्यार्थियों ने अंतर्राष्ट्रीय ग्रीष्मकालीन स्कूलों, अल्पकालिक कार्यक्रम में भी भाग लिया है जिससे शोधार्थी लाभान्वित हुए हैं। इन सहयोगों ने विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के उपयुक्त कौशल को बढ़ाने में मदद की है। इसने संकाय की आवक और जावक गतिशीलता की सुविधा और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रासंगिक पाठ्यक्रमों और पाठ्यक्रम की शुरूआत के माध्यम से स्थायी अंतर्राष्ट्रीयकरण प्राप्त करने में भी सक्षम बनाया।

विश्वविद्यालय ने दुनिया भर के 21 विश्वविद्यालयों के कुलपतियोंऔर प्रोफेसरों की मेजबानी की: यू-21 एजीएम 2010

सामाजिक आउटरीच पहल

यह सामाजिक जिम्मेदारी निभाने, नैतिक और मानवीय मूल्यों को स्थापित करने और एक स्थायी समाज के निर्माण में सक्रिय होने के लिए विश्वविद्यालय का विजन और मिशन है। यह अपने विभागों, कॉलेजों और केंद्रों को कक्षाओं से परे स्वयं को विस्तारित करने और अपने पड़ोस और समाज में बड़े पैमाने पर सार्थक सामुदायिक पहल शुरू करने का प्रयास करता है।

विश्वविद्यालय के कॉलेज स्थानिक रूप से शहर के परिदृश्य में फैले हुए हैं, और वे अपनी सक्रिय एनएसएस इकाइयों, उन्नत भारत अभियान, स्वच्छ भारत अभियान और भारत सरकार के एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम की पहल द्वारा की गई तनाव गतिविधियों के माध्यम से पड़ोसी समुदायों तक पहुंचते हैं।

समय के स्पेक्ट्रम के पार, सामाजिक कार्य, शिक्षा, वयस्क, सतत शिक्षा और विस्तार, पर्यावरण अध्ययन, वाणिज्य, मनोविज्ञान, व्यवसाय अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, बौद्ध अध्ययन, भाषा विज्ञान, वित्तीय अध्ययन जैसे कई विभागों और केंद्रों के साथ-साथ प्रबंधन और विधि संकाय, और क्लस्टर नवाचार केंद्र ने कमजोर और हाशिए वाले निर्वाचन क्षेत्र में व्यावहारिक समस्याओं के अभिनव समाधान खोजने और व्यक्तियों और समुदायों के वास्तविक जीवन के मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने की दिशा में उन्मुख मजबूत घटकों के साथ अकादमिक पाठ्यक्रम तैयार किया है। इनमें से कई विभाग अपने पाठ्यचर्या और सह-पाठयक्रम कार्यों के हिस्से के रूप में अग्रणी विस्तार और सामुदायिक आउटरीच कार्य कर रहे हैं। जबकि विश्वविद्यालय में ओपन लर्निंग का परिसर विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए समावेश और गुणवत्ता पहुंच के अवसर प्रदान करता है, नॉन-कॉलेजिएट महिला विकास बोर्ड (एनसीडब्ल्यूईबी) समग्र विकास के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन और महिलाओं के सशक्तीकरण को बढ़ावा देता है।

आत्मनिर्भरता के गांधीवादी आदर्श और शिक्षा में व्यक्तित्व की खोज गांधी भवन की विशिष्ट संस्था में सन्निहित हैं।

विश्वविद्यालय में लाइफ लॉन्ग लर्निंग संस्थान आजीवन अध्ययन के लिए मल्टी-टिपल मार्ग प्रदान करने और विद्यार्थियों को पहुंच, समानता और समावेश के अवसरों में वृद्धि करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें हाशिए के निर्वाचन क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया गया है। दिल्ली विश्वविद्यालय महिला संघ (डीयूडब्ल्यूए) ने भी विश्वविद्यालय को समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का प्रदर्शन करने और समावेशी विकास की सुविधा प्रदान करने में सक्षम बनाया है।

विश्वविद्यालय इकाइयों ने अन्य संस्थानों के साथ गतिशील सहयोग और साझेदारी स्थापित की है; और विविध सेमिनारों, सम्मेलनों और व्याख्यान श्रृंखला के संगठन के माध्यम से समकालीन मुद्दों और चिंताओं से भी जुड़े हुए हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समितियों, पैनलों और संपादकीय बोर्डों में विश्वविद्यालय के संकाय का योगदान भी समकालीन समय की महत्वपूर्ण वास्तविकताओं का समाधान करने के लिए विश्वविद्यालय के समर्पित प्रयासों को दर्शाता है।

उन्नत भारत अभियान के तहत अपनाए गए गांव में स्वास्थ्य शिविर

शताब्दी वर्ष की पहल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार उच्च शिक्षा में सुधार

सौ वर्ष की यात्रा पूरी करने वाले विश्वविद्यालय के लिए यह न केवल एक मील का पत्थर है बल्कि अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार करने का एक सही समय है। यह गर्व और सुखद संयोग की बात है कि विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वर्ष 2022-23 से अपने स्नातक पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क 2022 (यूजीसीएफ 2022) के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी) को लागू करके स्नातक शिक्षा के साथ शुरू करके उच्च शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन करने के लिए अपने शताब्दी वर्ष में एक साहसिक कदम उठाया है। यूजीसीएफ 2022 को विद्यार्थियों और उनकी रुचि को इसमें अंतर्निहित हर विशेषता के मूल के रूप में तैयार किया गया है; चाहे वह पाठ्यचर्या ढांचा हो, क्रेडिट योजना अपनाई गई हो, प्रदान किए गए लचीलेपन के विभिन्न पहलू, बहु-प्रवेश और निकास के विकल्प, बहुविषयकता और समग्र शिक्षा की परिकल्पना की गई हो, अनुसंधान, नवाचार और कौशल के विकास पर जोर दिया गया हो, जिसमें संस्कृति और राष्ट्र के लोकाचार में मजबूत जड़ें हों लेकिन एक वैश्विक दृष्टि के साथ, बहुभाषावाद पर जोर और उच्च क्रम सोच कौशल का उपयोग आदि। यूजीसीएफ की ये सभी विशेषताएं वास्तव में एनईपी के मौलिक सिद्धांत हैं और इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को राष्ट्रवाद और नैतिकता की मजबूत भावना के साथ सामुदायिक सेवा, समस्या समाधान, विश्लेषण और अनुसंधान के लिए योग्यता के साथ अच्छी तरह से सक्षम व्यक्ति बनने के लिए पोषित करना है, जो स्थायी आजीविका प्राप्त करने में सक्षम हैं। शिक्षा प्रणाली में लाए जाने वाले वांछित परिवर्तनों की धुरी शिक्षक हैं। इसके प्रति सचेत होने के कारण, विश्वविद्यालय ने पहले से ही विभिन्न संकाय विकास कार्यक्रमों (एफडीपी) के रूप में शिक्षकों के विभिन्न क्षमता निर्माण उपायों को शुरू किया है, जिसमें शैक्षणिक दृष्टिकोण पर एफडीपी भी शामिल है, उन शिक्षकों को देखते हुए जिन्हें बी.एड. डिग्री की आवश्यकता नहीं है।

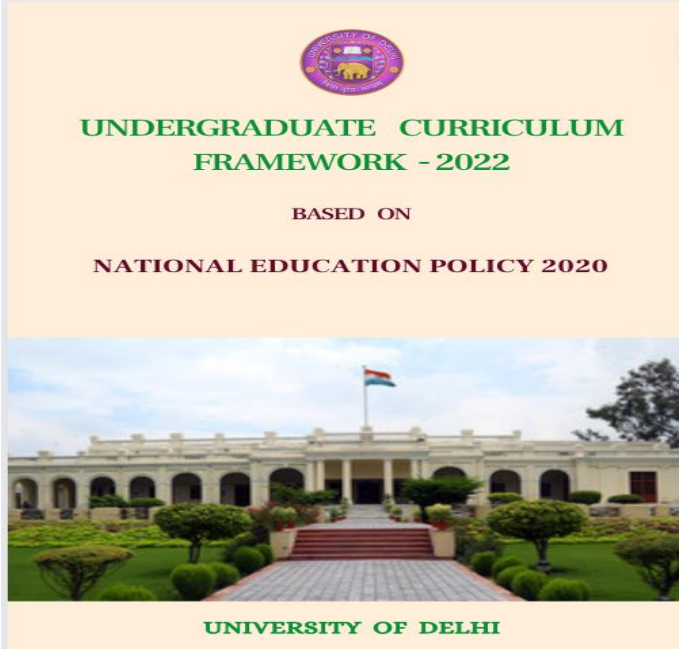

स्नातक पाठ्यचर्या की रूपरेखा: शैक्षणिक 2020-2023 से सभी स्नातक कार्यक्रमों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई पाठ्यक्रम संरचना

विश्वविद्यालय को विश्वास है कि एनईपी 2020 के अनुसार की गई पहल शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ इसकी रैंकिंग को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह एनईपी के अनुरूप स्नातक स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक इस परिवर्तनकारी पहल को आगे बढ़ाएगा।

विश्वविद्यालय को उम्मीद है कि छात्र बिरादरी एक लचीले लेकिन कठोर पाठ्यक्रम संरचना-यूजीसीएफ 2022 के लाभों का उपयोग करेगी और समकालीन वैश्विक मांगों के अनुकूल अपने हित के क्षेत्र में अपने कौशल के संवर्धन के माध्यम से इसका लाभ उठाएगी जो अंततः उन्हें रोजगार, उद्यमिता, स्टार्ट-अप और गरिमापूर्ण जीवन के विभिन्न अन्य तरीकों में मदद करेगी। विश्वविद्यालय का मानना है कि यूजीसीएफ एक तरफ युवा ऊर्जा का उपयोग करने के लिए कुशल जनशक्ति को विकसित करने में मदद करेगा जिससे वैश्विक स्तर पर कुशल कार्यबल का विस्तार होगा और दूसरी तरफ जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त होगा।

कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी)

शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए सभी यूजी कार्यक्रमों में प्रवेश कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के माध्यम से किया जाएगा। सीयूईटी का संचालन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा किया जाएगा। विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने 17 दिसंबर 2021 को आयोजित अपनी बैठक में संकल्प लिया कि विश्वविद्यालय के सभी यूजी पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक सत्र 2022-23 के लिए प्रवेश कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के माध्यम से किया जाएगा।

प्रौद्योगिकी संकाय में हालिया पहल

विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी में शिक्षण और अध्ययन में उच्च अकादमिक उपलब्धियों के लिए जाना जाता है। दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (डीसीई) की स्थापना 1941 में हुई, इसके बाद 1983 में नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एनएसआईटी) अत्यधिक मांग वाले संस्थानों के रूप में विकसित हुआ। हालांकि, क्रमशः 2009 और 2018 में डीसीई और एनएसआईटी को पूर्ण विश्वविद्यालयों के रूप में अपग्रेड करने के साथ, प्रौद्योगिकी संकाय अपने प्रमुख प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों के बिना रह गया था। विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष में, अब वैश्विक तकनीकी परिप्रेक्ष्य के साथ तालमेल रखते हुए इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के उभरते क्षेत्रों में शिक्षण-अधिगम शुरू करने की इच्छा है। शताब्दी शैक्षणिक वर्ष 2022-23 में प्रौद्योगिकी के तीन प्रमुख क्षेत्रों में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी कार्यक्रम शुरू किया है, अर्थात कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रोनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग।

विश्वविद्यालय द्वारा यूजीसीएफ- 2022 में अपनाई गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक कैनवास में समकालीन तकनीकी प्रगति के अनुरूप इन बी.टेक. पाठ्यक्रमों के पाठ्यक्रम तैयार करने के प्रयास किए जा रहे हैं। एक बार शुरू हो जाने पर, ऐसे पाठ्यक्रमों में इस क्षेत्र में समतुल्य रूप में और सामान्य रूप से हमारे देश में प्रौद्योगिकीय शिक्षा के शैक्षिक क्षितिज को बदलने की क्षमता होती है।

छात्र-केंद्रित पहल

डीयू पुस्तकालय प्रणाली

दिल्ली विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्रणाली (डीयूएलएस) भौतिक और आभासी संग्रह और इसकी संबंधित सूचना सेवाओं का एक प्रबंधनीय संयोजन है। जहां एक ओर, पुस्तकालय होल्डिंग्स की पारंपरिक प्रणाली को बनाए रखा जाता है, वहीं दूसरी ओर, आईसीटी आधारित सेवाओं को लागू किया जाता है। 33 घटक पुस्तकालय इकाइयों के साथ, डीयूएलएस व्यापक शैक्षणिक समुदाय तक पहुंचने के अपने कार्य को पूरा कर रहा है। इसने शिक्षकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों को दिल्ली विश्वविद्यालय कैंपस नेटवर्क के माध्यम से उपलब्ध कराए जा रहे उच्च गुणवत्ता वाले इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस की सदस्यता के साथ वेब गतिविधि को उन्नत किया है। इनमें से, कई डेटाबेस यूजीसी-इन्फोनेट डिजिटल लाइब्रेरी कंसोर्टियम के माध्यम से सुलभ हैं। डीयूएलएस ओपन एक्सेस ई-संसाधनों को भी बढ़ावा देता है। डीयूएलएस विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों के विद्यार्थियों और शिक्षकों की अनुसंधान, शैक्षणिक और शिक्षण आवश्यकताओं का समर्थन करना जारी रखता है।

डीयू ई-लाइब्रेरी वेब प्लेटफॉर्म: यह ई-बुक, ई-जर्नल, ई-थीसिस, वीडियो व्याख्यान, एक्सपर्ट टॉक आदि के लिए सिंगल विंडो एक्सेस के रूप में कार्य करता है। इसमें कहीं भी, किसी भी समय और किसी भी उपकरण के माध्यम से शिक्षाविदों की सूचना आवश्यकताओं का समर्थन करने के लिए इनबिल्ट रिमोट एक्सेस सुविधा और मोबाइल ऐप है।

- **समानता सत्यापन:** केंद्रीय पुस्तकालय को समानता सत्यापन का कार्य सौंपा गया है।
- **ई-बुक्स की खरीद:** ऑनलाइन शिक्षण अधिगम और अनुसंधान का समर्थन करने के लिए, डीयूएलएस ने काफी संख्या में ई-बुक्स प्राप्त की हैं। यह वीपीएन के साथ-साथ ई-लाइब्रेरी प्लेटफॉर्म के माध्यम से विश्वविद्यालय के आईपी रेंज पर उपलब्ध है।
- **डेटाबेस की सदस्यता:** डीयूएलएस ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, एल्सेवियर साइंस, जे-स्टोर आदि जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशकों के डेटाबेस की सदस्यता लेता है। इन सदस्यताओं के माध्यम से कई ईजर्नल्स, उद्धरण विश्लेषण उपकरण, थीसिस और संदर्भ स्रोत अनुसंधान और अन्य शैक्षणिक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए सुलभ हैं।

नियोजन और इंटर्नशिप अवसर (यूजी/पीजी स्तर)

उद्योग और शिक्षा जगत के बीच अंतर को पाटने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय ने डीन छात्र कल्याण कार्यालय के तत्वावधान में वर्ष 2008 में एक केन्द्रीय नियोजन प्रकोष्ठ की स्थापना की है। केन्द्रीय नियोजन प्रकोष्ठ का निरंतर प्रयास विद्यार्थियों को विचार, इनक्यूबेट और नवाचार करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना है। केन्द्रीय नियोजन प्रकोष्ठ विद्यार्थियों को प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सरकारी संगठनों, गैर सरकारी संगठनों और निजी क्षेत्रों में नियोजित करने का प्रयास करती है। इसके अतिरिक्त, केंद्रीय नियोजन सेल विद्यार्थियों के साथ-साथ संकाय सदस्यों के लिए आवधिक कैरियर और मानसिक परामर्श सत्र और कौशल वृद्धि प्रशिक्षण सत्र आयोजित करता रहता है।

कार्यक्रम (3 वर्ष)	नियोजित स्नातकों का प्रतिमाह माध्यिका वेतन (राशि रु में)	नियोजित स्नातकों का प्रतिवर्ष औसत वेतन (राशि रु में)	नियोजित स्नातकों का प्रतिवर्ष अधिकतम वेतन (राशि रु. में)
यूजी	8,10,000	4,50,000	12,50,000

आजीवन अध्ययन संस्थान (आईएलएलएल)

आज, सूचना प्रौद्योगिकी एक वैश्वीकृत समुदाय के निर्माण में एक अनिवार्य सुविधा है, जो तेजी से समावेशी होने का प्रयास करता है। दिल्ली विश्वविद्यालय में आजीवन अध्ययन संस्थान की भूमिका इस प्रक्रिया को कई सराहनीय तरीकों से आगे बढ़ा रही है। यह धीरे-धीरे इंटरैक्टिव सामग्री बनाकर और अपलोड करके अध्ययन की पारंपरिक प्रणालियों में नए आयाम जोड़ रहा है, जिससे अकादमिक समुदाय के विभिन्न वर्गों के बीच की दूरी कम हो रही है और अध्ययन को आजीवन और आनंदमय अनुभव बना दिया गया है।

अपनी दृष्टि और मिशन को ध्यान में रखते हुए, संस्थान एनईपी 2020 से जुड़े समकालीन क्षेत्रों पर कार्यक्रम शुरू करने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में जागरूकता पैदा करने में योगदान देने में अग्रणी रहा है। संस्थान में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों और कॉलेजों से प्रतिनियुक्त अकादमिक अध्येताओं के समर्थन से ई-पाठ, ई-क्विज़, ई-वीडियो व्याख्यान, ई-लैब और वृत्तचित्र सहित अभिनव ई-सामग्री बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है। विभिन्न विभागों और कॉलेजों के विशेषज्ञों के सहयोग से संस्थान ने ई-प्रकाशनों में योगदान दिया है।

काउंसिल हॉल जहां अकादमिक परिषद की बैठकें की जाती हैं

झूमर फोटो: अकादमिक परिषद हॉल की छत